...ारत नेपालकी मैत्री बढ़ेगी

...ज भी नेहरू-नेपाल नरेश वार्ता

...के पूर्व अधिकारियोंमें विचार विनिमय

... दिल्ली, २३ अप्रैल। ...रेश महाराजा महेन्द्रवीर ... एवं प्रधानमंत्री श्री ...पाल नेहरूके बीच आज ... हो रही है। आप लोगों... पूर्व दोनों देशोंके अधिका... ...तचीत होगी। आजकी ... [illegible] संयुक्त विज्ञप्ति ...भी कर दी जायगी। ...नमंत्री नेहरूजीने कल ... भोजन नेपाली दूतवासमें ...शके साथ किया। ...काल भारत-नेपालमें भी ...ान में नेपाल नरेश का ...किया गया। ...अवसर पर अपने भाषणमें ...शने कहा कि हम भारत नेपालकी मैत्रीको महत्त्वपूर्ण मानते हैं। हमारे आगमनसे यह मैत्री और बढ़ेगी।

नेपाल नरेश महाराजा महेन्द्र और प्रधानमंत्री श्री नेहरुके बीच चलने वाली वार्ताका आज चौथा कम चल रहा है। राजनीतिक पर्यवेक्षकोंके अनुमानसे उक्त वार्ता अब निर्णयात्मक स्तर तक पहुँच चुकी है।

ऐसी सम्भावना है कि आज प्रकाशितकी जाने वाली विज्ञप्तिसे उक्त वार्ताका परिणाम ज्ञात हो सकेगा।

महाराजा महेन्द्र कल यहांसे काठमाण्डू वापस जायेंगे।

रेल भाड़ेमें वृद्धिका असर

सरकारी बुलेटिनमें

नयी दिल्ली, २२ अप्रैल। रेल बजटमें १ जुलाई, १९६२ से रेलोंके किरायेमें जो वृद्धिका प्रस्ताव है उसके अनुसार तीसरे दरजेके यात्रियोंको सालमें औसतन केवल १३ नये पैसे अधिक देने पड़ेंगे। सालमें लगभग सौ करोड़ मुसाफिर तीसरे दरजेमें यात्रा करते हैं। इन्हें एक सालमें १३ करोड़ रु० का अधिक किराया देना पड़ेगा। लगभग ८९ प्रतिशत यात्री ८० किलोमीटरसे [illegible] सफर करते हैं। इन्हें ज्यादा से ज्यादा १९ नये पैसे अधिक किराया दे[illegible] पड़ेगा। उपनगरीय रेलोंमें मासि[illegible] टिकट वाले तीसरे दरजेके यात्री [illegible] औसतन १७ किलो मीटरक[illegible] तरफसे [illegible] रफसे [illegible]

व्यूनो आयरिशकी ओर बढ़ने वाली सेनाको रोकनका आदेश

विद्रोही सैनिक नेताओंके अस्थायी युद्ध समझौतेके कदमसे स्थिति अभी भी भ्रमपूर्ण

व्यूनो आयरिश, २२ अप्रैल। अर्जेण्टिनाकी राजधानी ब्यूनो आयरिशके बाह्य अंचलमें एक सैनिक केन्द्र द्वारा किये विद्रोहके सिलसिले में, [illegible] सेना भेजी जा रही थी, उसे राजधानीके बाहर ही रुकनेका आदेश दिया गया है।

बताया गया है कि सेनाके विद्रोही या विभक्त सैनिक अफसरों द्वारा अस्थायी युद्ध विरामके लिए सहमत हो जानेसे मुक्त सेनाको सान मार्टिनके पास रुक जानेको कहा गया है। बादमें यह भी पता चला है कि उक्त सेनाको, जो २१ टंक और अन्यान्य युद्ध सज्जासे परिपूर्ण थी, उसके शिविर कैम्पो डी मायो वापस लौटनेका आदेश दिया गया है।

अभी तक स्थिति पूर्ण रूपसे ...

राष्ट्रपति पदका चुनाव

७ मईको मतदान—१३ मईको पद ग्रहण

नयी दिल्ली २२ अप्रैल। राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति पदके लिए खड़े उम्मीदवारोंमेंसे किसीने कल नाम वापसीके अन्तिम दिन अपना नाम वापस नहीं लिया।

उक्त पदके लिए ७ मईको मतदान होगा। राष्ट्रपति पदके लिये डाक्टर [illegible] कृष्णनके अतिरिक्त दो उम्मीदवार चौधरी हरीराम और श्री त्रिशूलिया भी मैदानमें हैं।

उपराष्ट्रपति पदके लिये डाक्टर जाकिर हुसेन और श्री एन० सी० सामन्त सिनहा उम्मीदवार हैं।

श्रीगणेशायनमः।

भाषा मार्कण्डेय पुराण।

—०।०—

१ अध्याय।

एक समय तपस्या की स्वाध्याय में निरत महामुनि श्रीमार्कण्डेय जी बैठे थे, कि उसी समय व्यासके शिष्य जैमिनि नाम मुनि आये और दण्डवत् प्रणाम कर, यह बोले कि हे भगवन् महात्मा व्यासजीने महाभारत नाम इतिहास बनाया कि जिसमें सुन्दर साधु शब्द औ पूर्वपक्ष सिद्धान्त तथा नाना प्रकार की कथा यथायोगसे कहा है, देखो जैसे देवतोंमें विष्णु औ मनुष्यों मे ब्राह्मण, इन्द्रियों में मन उत्तम है तैसे सकल इतिहास पुराण औ शास्त्रोंके बीच यह महाभारत सर्व्वश्रेष्ठ है, और इस में अर्थ धर्म काम मोक्ष चारो पदार्थ कहे हैं, फिर चारो वर्ण औ आश्रमोंके धर्म आचार का परम साधन है, और इस महाभारतके साथ किसी शास्त्र से कहीं कुछ विरोध भी नहीं है। कहां लों कहैं वेदरूप पर्वत से प्रगट और व्यासदेव के वचन समूह रूप जल से भरी औ कुतर्क रूप तीर तरु की हरनेवाली इस भारत नाम नदीने सारी धरा की दोष-रूप धूरि को इकवारगी दूर कर दिया है, इतना कह फिर जैमिनि बोले।

हे महाराज इस भारत के तत्त्वार्थ जानने की कामना करि हम आपके निकट आये हैं, कि इस जगत की उत्पत्ति औ पालन तथा संहार के करनेवाले निर्गुण परब्रह्म साक्षात् भगवान किस हेतु से मनुष्य देह को प्राप्त भये और किस कारण से द्रुपद राजा की कन्या द्रौपदी पांचो पाण्डुपुत्रों की एक पत्नी भई और किस लियें महाबली बलदेव जीने तीर्थयात्रा के बहाने से ब्रह्महत्या दूर कर की उपाय की और किस निमित्त द्रौपदी के अविवाहित पांच पुत्र पाण्डवों के वर्त्तमान रहते अनाथ की नाईं मारे गये, यह मेरे जीमे बड़ी संशय है, सो आप कृपा कर विस्तार पूर्वक कहिये क्योंकि हम ऐसे मूढ़जनों को आप सदासे बोध औ उपदेश देते आये हैं, यह सुन मार्कण्डेय बोले।

हे जैमिने यह समय हमारे सन्ध्योपासन आदि कामों का है और इतनी बड़ी भारी कथा थोडे कालमे नहीं हो सकती, इस से तुम विन्ध्यगिरिवासी पिङ्गाक्ष विबोध सुपुत्र औ सुमुख नाम पक्षीयों के निकट जाय अपनी प्रश्नों को पूछो, वे चारो भाई पक्षियों मे श्रेष्ठ औ उत्तम तत्व के जाननेवाले द्रोणकेपुत्र हैं और सर्वदा विन्ध्याचल की कन्दरा मे रहा करते औ वेद शास्त्र में उनकी अव्याहत गति है, वे तुमारी इन प्रश्नों का उत्तर देकर सकल सन्देह दूर करेंगे, मार्कण्डेयके ये वचन सुनि जैमिनि मुनि को औरभी भारी सन्देह भया, तो आश्चर्य पूर्वक यह वचन बोले।

हे ब्रह्मन् एकतो यही अति अद्भुत वात है कि खगवाणी भी मनुष्य भाषा के समान और दूसरे पक्षी होकर

दुर्लभ ज्ञान औ विज्ञान को कैसे प्राप्त भये, महाराज आपसे यह सुन मेरे मनमे बडा सन्देह उपजा कि जो तिर्यग-योनिमे जन्म पाया तो उनके ज्ञान कहांसे आया और किस कारण वे द्रोण के तनय कहाये और किस हेतु से द्रोण इस लो कमे ऐसा प्रसिद्ध भया है, कि जिसके परम ज्ञानी ये र पुत्र भये और कैसे इन चारो को धर्म औ ज्ञान की प्ति भई, फिर मार्कण्डेय बोले।

हे जैमिने अब तुम सावधान हो कर सुनो कि जो वृत्तान्त पूर्वकाल में नन्दन वनके बीच इन्द्र नारद औ अप्सरों के सङ्गम मे भया था, कि एक समय नारद जी घूमते फिरते नन्दन वन को गये तो देखा कि अप्सरों के साथ बैठे भये राजा इन्द्र विहार कररहे हैं, इतने मे नारद को देख इन्द्र उठ खडे भये औ प्रणाम कर अपना आसन उनके बैठने को दिया यह देख अप्सरों ने भी आय कर प्रणाम किया और हाथ जोड़ सन्मुख आन बैठीं फिर नारद के साथ नाना कथा औ वार्तालाप करते करते इन्द्र यह बोले कि, हे मुने इन अप्सरों मे जो आप को उत्तम प्रतीत होती हो उसे नृत्य औ गान करने की आज्ञा दीजिये कि वह अपने रङ्ग ढङ्ग औ गुणसे आप को प्रसन्न करे उर्वशी कर्कशा रम्भा स्वर्णकेशी तिलोत्तमा घृताची मेनका सुग्धा वपु वासवप्रीतिदा नाम आदिके बीच मे जो आप को रुचती होय।

इन्द्रके वचन सुन नारद कुछ्वेरतो चुपचाप रहे फिर सोच विचार कर बोले कि तुम सबके बीच जो रूप औ गुण में अपने को अधिक मानती हो वही मेरे आगे नृत्य औ

गान करें क्योंकि रूप गुण विहीन के नाच गान में कुछ सुख सिद्धि नहीं केवल विडम्बना मात्र है। हे जैमिने नारद के ये वचन सुनतेही सब की सब इकवार्गी बोल उठीं कि हम सब में अधिक हैं, फिर एकने कहा मैं सर्वोत्तम हूं दूसरी बोली तू क्या है मैं बडी गुणवान ऊं, तीसरी ने कहा मेरे आगे तेरी क्या गिनती है इस प्रकार उनके आपस मे एक एकके साथ झगड़ा होने लगा तब इन्द्र बोले कि तुम सब परस्पर टंटा औ खड्ड किस लिये करती हो नारद ही से क्यौं न पूछलो जिसे ये कहैं वही सब में श्रेष्ठ है, तब अप्सरों ने नारद को पुछा कि आपके विचार में जो सबसे अधिक हो उसे आपही क्षमाकर कहिये, मार्कण्डेय जी बोले।

जैमिने उस समय नारदने जो वचन कहे सो सुनिये कि, अप्सरों की यह बात सुन नारद बोले कि हिमालय पर्वत में दुर्वासा ऋषि तप करते हैं सो तुम सब में से जो उन की तपस्या भङ्ग कर सकै वही सब में बडी गुणवान है। जैमिने नारद की यह वात सुनतेही उनके मुख सूख गये और सबकी सब कदलीदलके समान कांपउठीं आपस में कहने लगीं कि यहतो बड़ा कठिन काम है-हमसे न हो सकैगा, तब उनमें से बपु नाम एक अप्सरा जिस को मुनियों की तपस्या भङ्ग करने का बडा अभिमान था बोलउठी कि यह काम हमारा है दूसरे की क्या सामर्थ्य जो दुर्वासा की ओर आंख उठाकर देख सकै और उनके कोपानल में अपने तनकी आहुति करै, देखो मैं जाती ऊं और देखूंगी कि वे कैसे तपस्वी औ इन्द्रीजित हैं,

तब मेरा नाम बपु जो जातेही अपने कामबाणों औ कटाक्षों से मार एक क्षण में उनका तप तेज सब दूर करूं नहीं तो नहीं।

भला सुनोतो ब्रह्मा विष्णु महेश कोई क्यों नहो उसको भी मैं अपने कामबाणों से मार कर जर्जर देह कर सकती हूं तो मुनि विचारे किस गिनती में हैं, इतना कह वह तुर्त हिमालय को गई जहां दुर्वासा तप कररहे थे और उनके प्रभाव से आश्रम के आस पास कोई दुष्ट हिंसक जीव किसी छोटे जीव जन्तु को बाधा नहीं कर सकते हैं वह अप्सरा वहां जाय आश्रम से एक कोसके अन्तर पर उतरी और मधुर मधुर स्वरसे गान करने लगी तो उसका वह कोमल स्वर औ गीत सुन कर दुर्वासा मुनि विस्मित हो आश्रम से उठकर वहां आये कि जहां वह अप्सरा गान कररही थी दुर्वासाने उस मनोहर मूरति को देख अपने मनको ज्ञान से थांभा और ध्यानकर जाना कि यह मेरी तपस्या भङ्गकरने के हेत आई है।

इतना जानतेही दुर्वासा मारे क्रोध के आग होगये और यह बोले कि, रे दुष्ट अधम बपु जिस हेत से तू बड़े दुख से संचित किये भये रे तप को नाश करने आई है, इससे हे दुष्ट मेरी शापसे गरुडके गोत्रमें जन्मपाय सोरहवर्ष पर्यन्त पक्षीयोनि का भोग करेगी, और तहां तेरे चार पुत्र होंगे परन्तु उन पुत्रों का सुख न पाय किसी वीर के धनुष मुक्त बाण से पवित्र देह हो फिर स्वर्गवास पावेगी, इतना कह क्रोध से नेत्र लाल औ भृकुटी कराल कम्पित कलेवर

महामुनि दुर्वासा भूतल विहाय तरलतरङ्ग मन्दाकिनी नाम आकाश की गङ्गा को स्नान करने गये।

इति श्री भाषा मार्कण्डेय पुराणे पण्डित जगन्नाथ शुक्ल विरचिते वपुशापो नाम प्रथमः अध्यायः॥ १ ॥

२ अध्याय।

मार्कण्डेय बोले कि अरिष्टनेमि जो कश्यप तिनके पुत्र गरुड़ नाम पक्षीराज भये, गरुडके संपाति नाम पुत्र, संपातिके सुपार्श्व, सुपार्श्वके कुन्ति नाम पुत्र भया, कुन्तिके प्रलोलुप, प्रलोलुपके दोपुत्र कङ्क औ कन्धर नाम भये, कङ्कने किसी समय कैलास पर्वतके शिखर पर जायकर कुवेर के अनुचर विद्युत रूप नाम राक्षस को देखा कि उत्तम पुष्पों की माला गले में डाले औ दिव्य वस्त्र आभूषण धारण किये मद पिये अपनी प्रियभार्या को साथ लिये एक उत्तम स्फटिक शिला पर बैठा विहार कररहा है, कि वहां कङ्क भी जाय पहुंचा तो इस को देख वह राक्षस बड़े क्रोधसे बोला कि, हे अधम पक्षी यहां तू किस हेतु आया और स्त्रीके साथ एकान्त में बैठे हमको देखकर भी जो तू निडर चला आता है यह बुद्धिमान औ धार्मिक का तो काम नहीं है, कि दो व्यक्ति एकान्त निर्जन में जहां बैठे हों तहां वेप्रयोजन एका एक चला जाय।

तब कङ्क बोला कि यह पर्वत क्या तेरे पिता का मोल लिया है, जो तू तिउरी चढ़ाकर धमकाय रहा है, इहां कोई

नेतुओं की पतिया या सोसका बना भया नहीं है कि तेरी गर्मीपाय सुखाय औ पिघल जायगा, सुन रे यह पर्वत सब का साधारण है, जैसा तेरा, तैसा मेरा वैसाही औरों का भी है, जैसे तू इहां आन बैठा तैसे मैभी चलाआया तो इतना कोप तू किस हेतु से करता है और तेरी ममता इस पर्वत पर काहे से अधिक भई है जो हमै देख तीन पांच करने लगा।

मार्कण्डेय बोले कि इतना कहते ही उस राक्षस ने उठकर तीव्र खड्ग से कङ्क का शिर काटडाला और वह मरगया फिर जब यह बात कङ्कके छोटे भाई कन्धर ने सुनी कि कङ्क को विद्युद्रूप राक्षस ने मारडाला तो बडा कोप कर उसके मारने के लिये तुरत वहां आया जहां कङ्क मरा पड़ा था फिर भाई की क्रिया औ कर्म कर वहां को चला जहां भाईका मारनेवाला शत्रु बैठा था और मारे क्रोधके लाल नेत्र औ सर्पके समान सांस लेता हुआ उस राक्षसके निकट को चला और अपने दोनो पंखकी वायुसे बडे२भूधरों को कम्पमान और बेग से आकाश की मेघमाला को अस्त व्यस्त करता हुआ जायकर देखा कि वह राक्षस मदपान में आसक्त बैठा है और केतकीपत्रके समान दांतो से महा-भयानक घोरमुख से वार वार जंभाई ले रहा है और असुर की वाम उरू पर मृगलोचना वामोरू मदनिका नाम कोकिल वैनी मृगनैनी उसकी पत्नी विराजमान है।

इस प्रकार गिरि कन्दर मे उसे बैठा देख कन्धर वडा कोप कर बोला कि, अरे दुष्ट बाहर आव और मेरे साथ युद्ध कर क्योंकि तूने मेरे वडे भाई के साथ विश्वासघात किया

हैं इससे मदोन्मत्त तुझको अभी यमपुरको पठाता हूं और देख विश्वासघाती औ स्त्री बालघाती जिस लोकको जाते हैं उसी नरक को मेरे हाथ से बध हो कर तूभी शीघ्र जायगा मार्कण्डेय बोले कि जब उस पक्षीराज कन्धरने स्त्रीके समीप बैठे उसको ऐसे निठुर औ कठोर वचन कहा तबतो वह राक्षस न सहि सका और बडा क्रोधकर उस पक्षीके प्रति बोला कि जब तेरे बडे भाई को मारा तब उसका बल देखा और अब उसी खड्ग से मार तेरा भी पौरुष देखेंगे। हे नभचर अधम पक्षी एकक्षणभर विलम्ब कर इहां से जीते जी लौटकर तू फिर निज बसेरे को न जायगा । इतना कह निर्मल अञ्जन के समान श्यामवर्ण खड्ग जैसेही कर में लिया तैसेही उस यक्ष और पक्षी से महाघोर भयजनक युद्ध होने लगा कि मानो इन्द्र औ गरुड लडते हों, इतने में राक्षस ने क्रोध कर जलजलाती भई बडी तीव्र तरवार जो चलाई तो पक्षीने उच्छल कर उसे जैसे गरुड सर्पको धर लेवें तैसेही चोंचसे पकडकर पंजेके नीचे दबाय तोड डाला जब वह खड्ग टूट गई तो दोनो का बाहु युद्ध होने लगा इतने मे वह पक्षी उस असुर की छाती पर चढ़बैठा और हाथ पांव औ शिर अपनी चोंचसे काट कर अलग अलग करदिया और वह मरकर शीघ्र यमपुरको सिधार गया मार्कण्डेय बोले कि ।

जब असुर मारा गया तो उसकी वह मदनिका नाम पत्नी बहुत डरी और कन्धर की शरण मे आई औ बोली कि मै अब तुमारी स्त्री होउंगी तब उस स्त्री को साथ लेकर वह पक्षी अपने घर आया और विद्युत रूप को मारकर अपने

बडे भाई से उत्पन्न भया, फिर कन्धर के घर में आयकर वह कामरूप धरनेवाली मेनका की कन्या मदनिका ने पक्षीरूप धारण किया और उस कन्धर नाम पक्षी से मदनिकाने तार्क्षी नाम एक कन्या उत्पन्न किया, जो बपु नाम अप्सरा दुर्वासा की शाप से शापित हुई थी वही आयकर इसके उदर से प्रगट भई और पक्षी ने उसका नाम तार्क्षी धरा।

मन्दपालके चार पुत्र थे। जरितारि आदि, द्रोण अन्त, तिनमें से वेद वेदाङ्ग पारग छोट पुत्र द्रोणने कन्धर की अनुमति से तार्क्षीके साथ अपना विवाह किया फिर कुछ काल बीते वह तार्क्षी गर्भवती भई और जब गर्भ सात पक्षका भया तब वह उडकर कुरुक्षेत्र को गई जहां कुरुवंशी और पाण्डवों का महाभारत नाम दारुण संग्राम होता रहा, यह भावी वश उस युद्धके बीच मे जाय पडी और उस समय भगदत्त औ अर्जुन का घोर युद्ध होरहा था, कि सारे बाणोंको आकाश ऐसा छाया कि मानो टीडीदल उमड आया हो, इतने मे पार्थकीकमान से छूटा जो सर्पके समान भल्लाकार बाण सो आय कर उसकें उदर मे लगा तो त्वचा कट गई, और पूर्णचन्द्रके समान श्वेतवर्ण चार अण्डे निकलकर पृथिवी पर गिरपडे, देखो आयुर्दा बाकी रहने के कारण से वे अण्डे मानो रुईके गाले पर गिरे कि उनको कुछ किसी तरह की भी हानि न भई और देखो उनकें गिरने के साथही साथ सुप्रतीक नाम गजराज का घण्टाभी बाण से कट कर धरापर आय गिरा, और मांसके ऊपर पडे भये उन अण्डों को चौफेर से ढांक लिया।

जब भगदत्त राजा मारा गया तिस पीछे भी अनेक

दिन तक कुरु पाण्डवों की सेनाका युद्ध होता रहा फिर जब युद्ध बन्द भया और राजा युधिष्ठिर भीष्म पितामहके निकट धर्म श्रवण करने गये, तब जहां घण्टाके नीचे वे अण्डे ढंपे पडे थे, तहां पर परम संयमी शमीक नाम ऋषि अपने शिष्यों समेत दैवयोग से आयनिकले और उस घण्टके नीचे बचों का चींचीं चंचू शब्द सुनते भये, यद्यपि वे बच्चे बडे ज्ञानी थे तथापि बालपनके हेत से बचन सपष्ट न बोल सकते थे, वह उनका शब्द सुन शिष्योंके समेत मुनि उस घण्टा को उलटायकर बच्चे देख, बडे विस्मय को प्राप्त भये कि माता पिता से हीन औ पच्छ विहीन ये दीन बालक पच्छी कहां से आये और कैसे इनके यहां प्राण बंचे यह सोच बिचार अपने शिष्यों से बोले कि एहो देखो देवतों के डर से भागती हुई दैत्यसेना को देख शुक्राचार्य्य ने यह सत्य कहा है, कि कादर होकर काहे भागते हो, लौटो और शूरता औ यश छोड कहां जाय कर न मरोगे।

देखो यह जीवन तो उतनाही है, जितना पूर्व समय में बिधाताने निर्माण कर राखा है, और जीवन कुछ अपनी इच्छाके अनुसार नहीं है, देखो कोई अपने घर में रहते मर गये, और कोई संग्राम से भागकर मरे, बहुतेरे खाते पीते भोगविलास करते बिना रोग भी मर गये, और कितनोंके शस्त्र छोड़ कांटा भी न गड़ा पर, यमपुर को तो चले ही गये, औ धर्मराजके वश भये, कितने तपस्वी तप करते करते मर गये, और कितने योगी योगाभ्यास करते मरे, परन्तु अमर कोई न

भये देखो पूर्वहीं इन्द्रने संवरासुरके मारने को वज्र चलाया और उसके हृदय मे लगा पर तौभी वह असुर न मरा, और फिर जब काल आया तो वही इन्द्र उसी वज्रसे दैत्यों को एक क्षणभर में मार गिराया इससे लौटो और मृत्युसे मत डरो, यह सुन वे दैत्य फिरे औ मरण की भय छोड़ दिया, इस शुक्रके वचन को इन पक्षिशावकोंने सत्य किया कि जो ऐसे भारी महाभारत युद्धके बीच मे भी न मरे देखो तो कहां अण्डों का गिरना औ कहां गजघण्टका टूट परना और मास मेदा के बिछौने पर ढांक लेना बडे अचरज की बात है, इससे एहो ब्राह्मणो ये सामान्य पक्षी नहीं हैं, कोई महापुरुष क्रियाभ्रष्ट होकर तिर्यगयोनिमें जन्मे हैं, देखो दैव की अनुकूलता इन पक्षियों को महाभाग्य को सूचन करती है।

इतना कहकर फिर उन बच्चोंकी ओर देख ऋषि बोले कि जो होय अब आवो इन बिचारों को लेकर अपनी कुटी को लौट चलें और ऐसी ठौर इन्हें यत्न से राखें कि जहां मूस मंजार बाज औ नकुल की भय न हो अथवा इनकी बडी यत्न करना वृथा है, क्योंकि अपने कर्महीं से रक्षापाते हैं, और ऐसेही संपूर्ण जीव जन्तुभी निज कर्म से रक्षित हैं, जैसे ये विचारे अनाथ पक्षी, पर तौ भी मनुष्य को यत्न करना उचित है, क्योंकि सकल काम मे पुरुषार्थ करते हुये पुरुष को कुछ हानि होने पर भी भले लोग निन्दा नहीं करते हैं।

यह मुनि की आज्ञा पाय वे मुनि कुमार उन सुकुमार पक्षिशावकों को लेकर तरु गुल्म लतों से ललित

सघन बनयुक्त अपने आश्रम की ओर चले और शमीक मुनिभी फल मूल समिध कुशा लेकर निज आश्रम में आय ब्रह्मा विष्णु महेश सूर्य अग्नि इन्द्र बरुण वायु यम धाता विधा सरस्वती औ विश्वेदेवोंकी वेदोक्त पूजा करते भये।

इति मार्कण्डेये चटकोत्पत्तिः द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

३ अध्याय।

मार्कण्डेय बोले कि हे जैमिने महात्मा समीक मुनि उन बच्चों को दिन प्रति चारा औ पानी देकर लालन पालन करने लगे जब वे एक महीने के भये तब उडकर आकाश में सूर्यके रथकी पथ लों जाने लगे और यह कुतूहल देख वार वार मुनि कुमार अति आश्चर्य औ आनन्द मे मगन होने लगे, फिर वे पक्षी सूर्यके रथ पथ से समुद्र नदी नद नगर समेत इस धरा को रथचक्रके प्रमाण देख कर वहांसे उतरके फिर उसी आश्रम को चले आते और पंख लटकाय बैठ कर गमनागमन की श्रम से ऊर्द्ध्वस्वास लेने लगते थे, शमीक मुनि अपने शिष्यों पर दयाकर कहते जो धर्म औ तत्व का निश्चय तिसके श्रवण और पूर्व कृत कर्मोंके प्रभाव से उन पक्षियों के हृदय मे ज्ञान प्रगट भया, तब वे चारो पक्षी एकदिन मुनि चरणों को प्रणाम कर यह बोले कि हे मुने आपने बडी दयाकर महाघोर मृत्यु से हमारी रक्षा की और चारापानी निवास स्थानके देनहार आप हमारे पिता औ गुरुदेव हैं।

जिसहेत जब हम गर्भमे रहे तब हमारी माता मरगई, और पिताने भी नहीं पाला परन्तु आपने जीवदान देकर वालपन से ले आजतक पालन पोषण औ रक्षा की नहीं तो कृमि कीटके समान इस पृथिवी पर पडे छटपटाय छटपटाय लोटपोट मरकर सूखजाते परन्तु दयाकर उस विपत्काल मे हमारे ऊपर से उस महाभारी गजघण्टको उलटाय आपने हमारा दुख दूर किया और हमारे विषे अति प्रीति से आप अपने मनमे नानाप्रकार के मनोरथ भी करते रहे कि ये निर्बल बालक कब बडे होकर बलवान होंगे और कब इनको आकाश मे उडते औ उड़ कर वृक्षों के बीच मे बैठे हुये देखेंगे और कब हमारे आस पास घूमते भये इनके पक्षों की वायुसे उडी हुई धूर से यह मेरी देह धूसरी होगी, सो हे पिताजी ऐसी ऐसी चिन्ता औ मनोरथ करते भये आपने हमारा प्रतिपालन किया है सो और अब हम आपकी दया से बडे और ज्ञान वुद्धि युक्त भये हैं, तो कृपाकर कहिये कि आपकी क्या सेवा और सुश्रूषा हम करें।

शमीक मुनि संस्कार युक्त स्पष्टरूप उनके वचन सुन निज पुत्र शृङ्गीऋषि औ शिष्यों समेत बडे आश्चर्य को प्राप्त हो रोमांचित तनु भये, फिर उन पक्षियोंके प्रति बोले कि प्रथमतो तुम यह कहो कि तुमारे इस प्रकार की नरभाषा वोलने का क्या कारण है, फिर किस महा-पुरुष की शापसे विकार भरी इस पक्षीयोनि को प्राप्त भये, और तिसपरभी ऐसे उत्तम वचन का वोलना तुमको

कहांसे आया यह सब वृत्तान्त श्रवण करने की हमारी बडी इच्छा है, सो निष्कपट मन हो यथार्थ रूप से कह सुनावो।

पक्षी बोले कि पूर्वकालमें विपुलस्वान नाम प्रसिद्ध एक महामुनि रहे, तिनके दो पुत्र भये एक का नाम सुकृष दूसरे का तुंबरु सुकृष के हम चारो पुत्र हैं और हमारे पिता इन्द्रियों का संयम कर तप करते थे, तिनके निकट विनय व्यवहार औ सदाचार तथा अति भक्ति से सदा नम्रता पूर्वक हम चारो भाई रहा करते और जो पिता जी आज्ञा देते समिध कुश पुष्प औ आहार के लिये फल मूल सो सब हमलोग तुर्त लायकर उपस्थित करते थे, ऐसेही पिताके साथ उस तपोवन में हमको वास करते अनेक दिन बीते तो एकदिन वृद्ध पक्षीका रूप धारण कर लाल नेत्र भग्नपक्ष गिरते पडते राजा इन्द्र सत्य शौच क्षमा आचार औ उदारता युक्त ऋषिश्रेष्ठ हमारे पिता की दृढ़ता जानने के लिये तहां आये सो वह उनका आगमन हम सब को शाप औ दुख का हेतु भया है।

महाराज आवतेही वह पक्षी पिता से बोला कि हे ब्राह्मण हम बडी क्षुधा से पीडित अब मरते हैं, सो आप दयाकर कुछ आहार दे, प्राण की रक्षा करो और हम अनाथ भूखे वृद्ध पक्षी को शरण होउ, इतना कह फिर बोला कि हे महाभाग मै विन्ध्यगिरिके शिखर पर बैठा था, कि प्रबल पक्षियोंने अपने पक्षों को बलवान् वायुसे मार मुझे पर्वत के नीचे गिराय दिया, तब मै उतने ऊंचे से जो पृथिवी पर अनायास मूर्छित हो गिरा, तो सातदिन लों अचेतन पडा रहा, फिर आठवें दिन जब मूर्छा गई

तो भूखके मारे व्याकुल हो कर आपकी शरण लिया हैं, बुद्धिमान आप क्षुधा से पीडित हमको भोजन दीजिये तो मेरे प्राण बचें और ऐसा भोजन दीजिये कि जो मेरी प्राण यात्रा औ रुचिके योग्य होय।

जब पक्षीरूप इन्द्रने ऐसे बचन कहे, तब हमारे पिता बोले कि हे पक्षी निज प्राणरक्षाके लिये जो भक्ष्य तुम चाहते हो सोई हम देंयगे, इतना कह फिर उस पक्षी से पिताने पूछा कि हे पक्षीराज कहो तुमारे लिये हम कौन आहार तयार करें तब वह बोला कि मेरी परम तुष्टि औ तृप्ति जैसी नरमांससे होगी ऐसी दूसरे से नहीं यह सुन ऋषि बोले कि रे अधम पक्षी तेरी कुमार अवस्था चली गई, और यौवन भी व्यतीत भया, अब अन्त बयस बुढापे को प्राप्त है, कि जिस मे प्राणियों की सकल इच्छा निवृत्त होतीं हैं तो तेरी किस कारण इस वृद्ध अवस्थामें ऐसी घोर मति भई, इससे तू बडाही क्रूर औ निर्दय है, देखतो कहां मनुष्यका मांस और कहां तेरा यह चौथापन इससे तू दुष्टों की गिनती के बीच हमें प्रथम प्रतीत होता है।

फिर बोले कि इन बातोंसे हमारा क्या प्रयोजन है, जो होय देने को कहकर अवश्य देना चाहिये, ऐसी निश्चय कर धार्मिक पिताने शीघ्र हम सबको बुलाया और हमारे गुण औ शील स्वभाव की प्रशंसा करके बिनय से नम्र करजोड़ सन्मुख खडे हम सबके प्रति कुछ क्षुभित हृदय पिताजी यह निठुर बचन बोले कि हे आज्ञाकारी पुत्रो तुम हमारे ऋणी औ उत्तम सन्तान हो देखो जो हम

तुमारे गुरु औ आज्ञा पालनीय पूज्य पिता हैं, तो निष्क-पट चित्त होकर जो बात हम कहैं सो तुम सब करो, इतना वचन पिताके मुख से निकलतेही हम सब बडे आदरमान से बोल उठे कि जो आपकी आज्ञा होगी वह हमारे शीसपै है, और उसको आप निसंदेह कीभई जानिये।

तब ऋषि बोले कि यह क्षुधा पीडित इक्क पक्षी मेरी शरण आया है, जो तुमारे मांस से इसकी एक क्षणभर की तृप्ति होय, और तुमारे रुधिर पान से इसकी पिपासा जाय ऐसा तुम सब अब मेरी आज्ञासे करो, पिताके वचन सुन हम सब कंपमान हो बडी व्यथा को प्राप्त भये, और पितासे कहा कि यहतो बडे कष्ट की बात है, इससे यह काम आपका हम से न हो सकैगा और देखो जैसा अपना आत्मा तैसा पुत्रका भी आत्मा है, हां देव पितर औ मनुष्योंके ऋण जो शास्त्रमें कहे हैं उनको अवश्य पुत्र दूर करते हैं, पर अपनी शरीर कोई नहीं देते इससे हम यह काम न करेंगे और न कभी किसीने किया है।

इस संसार मे जीवन रहतेही सुखभोग औ मङ्गल की प्राप्ति होती और जीवन रहतेही पुण्य औ पुरुषार्थ भी लोक मे पुरुष कर सकते हैं, और मृतक की तो देह नाश होतेही धर्म कर्मभी नहीं रहता और आत्मातो सर्व प्रकार से रक्षा करने के योग्य है, ऐसेही धर्म जाननेवाले लोग कहते हैं, महाराज जब पिताने हमारे ऐसे बचन सुने तो अति कोपसे लाल नेत्रकर मानो भस्म करते हुये, यह बोले कि प्रतिज्ञा करके भी जो तुम सब मेरे बचन

अङ्गीकार नहीं करते हो इस लिये मेरी घोर शाप से तुम तिर्यगयोनि को शीघ्र प्राप्त होओगे।

इस प्रकार हम सब को शाप दे पिताने आप अपनी शास्त्रोक्त उर्द्धदैहिकी अन्तसमैकी क्रिया कर उस पक्षीसे कहा कि हेखग मैंने यह अपनी देह तेरे अहार के लिये कल्पित किया, सो तू निश्चिन्त हो इसका भक्षण कर और इतनाहीं ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व कहा है, कि जो अपने सत्य वचन का पालन करना और न तो भूरि दक्षिणा न यज्ञ न अन्य अन्य शुभकर्मों से तैसी पुण्य होती जैसी कि सत्य बचन के परिपालन से महत्पुण्य को पाते हैं।

ऋषिके वचन सुन वह पक्षी अति विस्मित भया और बोला कि हे ब्राह्मण जो योगबल से इस अपने कलेवर को परित्याग करो तो हम भक्षण करेंगे और जीते जीव की देह को हम कदापि नहीं खायंगे यह सुन ऋषि बोले कि बहुत अच्छा ऐसाही करते हैं और योगकर्नमे तत्पर भये, तब मुनि को उस कठिन कर्म मे निश्चय जान राजा इन्द्र उस पक्षीरूप को त्याग अपना स्वरूप धारण कर बोले कि हे निर्दोष विप्र अब तुम समाधि को छोड़ो और अपने ज्ञान औ बुद्धि से जानों कि आपकी धर्म मे दृढ़ता जानने के लिये हमने यह अपराध किया है, सो क्षमा करिये और कहिये कि आपकी क्या इच्छा है, तिसको हम पूरी करें और अपने सत्यबचनके पालन करने से हम आपपर बड़े प्रसन्न भये हैं, तो आजसे आपको ऐंद्र ज्ञान होगा, अब निर्भय हो तपस्या करिये और आजसे कोई विघ्न उपाय आपके निकट कभी भी न आवेंगी।

इतना कहकर जब राजा इन्द्र निजलोक को गये तब क्रोधयुक्त पिताजी के चरणों को प्रणाम कर दीन बचन से हम सबने यह कहा कि हे महामते अज्ञान के मारे मृत्युकी भय से भीत हमारी अपराध को क्षमा करिये क्योंकि हम जीवनप्रिय हैं, और हमारी यह बड़ी भूल भई है कि हाड़ मास नसचाम को बनी औ रुधिर पीब से भरी भई इस देह पर इतनी प्रीति से क्या प्रयोजन है फिर इस क्षणभंग शरीर में अज्ञान औ भावीवश हम सब की ऐसी रति भई हे महाभाग सुनिये कि जैसे यह लोक मोह को प्राप्त होता है, और काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर आदि अनेक दोष रूप प्रबल शत्रुवों से अवश पराधीन हो रहा है।

देखो बुद्धिके रकवा से युक्त औ हाड़ थंभ से बनाभया एक महापुर है, और वह चर्म की भीतसे घेरा, औ रुधिर मांस से लिप्त है, कि जिसमें नव द्वार हैं फिर चार ओर नसों के जाल से लपेटा है, ऐसे पुरके बीच चेतन पुरुष टिका है, तिसके मन औ बुद्धि नाम दो मंत्री हैं सो परस्पर विरोधी हैं और सर्वनाश करने के लिये एक दूसरे के साथ उपाय करते रहते हैं, और राजाके भी नाश करने को काम क्रोध लोभ औ मोह नाम चार प्रबल शत्रु है फिर जब वह राजा उन नव द्वारों को बन्दकर सावधान से रहता, तब शत्रुवों से पराभव को न पाय निरन्तर प्रसन्न मन रहता है और जब वे नव द्वार खुले छोड़ असावधान हो रहता तो अनुराग स्नेह नाम महाशत्रु नेत्रादि द्वारों से प्रवेश कर उसको बड़ा धोखा देते हैं।

वह अनुराग नाम शत्रु पांचो द्वार से प्रवेश करता है और उसके भी तीन और क्रोध लोभ मोह नाम घोर शत्रु हैं, फिर वह अनुराग उस पुरमे प्रवेश कर इन्द्रियों के द्वारा उनके साथ परस्पर मिलकर मन इन्द्रियों को अपने वश से कर के उस रकवा को नाश करदेता है, और उसके आधीन मनका देख बुद्धि तुरतही नाश होजाती है, तब मंत्री से रहित उस पुर के बीच अवसर औ छिद्र पाय शत्रुवों से वह राजा नाशको प्राप्त होता है, इस प्रकार दुरात्मा राग क्रोध लोभ मोह प्रवृत्त होतेही मनुष्य को स्मृति के नाश करने-वाले तत्कालही उत्तम ज्ञान को हर लेते हैं।

देखो राग से क्रोध प्रगट होता क्रोध से लोभ लोभ से मोह और मोह से स्मृति का विभ्रम स्मृतिके भ्रम से बुद्धि का नाश बुद्धिनाश से सर्वनाश होता है, इस लिये नष्ट बुद्धि औ राग लोभके आधीन जीव के लोभी हम सबके उपर हे ऋषिसत्तम आप प्रसन्न हो दया करिये कि जो यह शाप आपने दिया है सो हम को न लगै और न तामसी तिर्यग योनि को हम प्राप्त होंय।

तब मुनि बोले कि जो मैने कहा वह किसी प्रकार मिथ्या न होगा, क्योंकि मैने आजलों झूठ नहीं कहा और न मेरे वचन कभी मिथ्या भये हैं, और इस तुमारी शाप मे हम दैव को कारण मानते हैं, और धिक्कार हैं इस अनर्थ पुरुषार्थ को कि जिससे हमने बिना बिचारे इतना बड़ा अकाज किया परन्तु जिस हेत तुम सबने विनय औ प्रणाम कर हमको प्रसन्न किया इससे तिर्यगयोनि मे भी

तुमारे परम ज्ञान बना रहैगा, और मेरे प्रसाद से ज्ञान दर्शित मार्ग मे चलोगे जिससे तुमारा क्लेश कल्मष सब दूर होजायगा, फिर भी तुम परमसिद्धि को प्राप्त होउगे।

हे जैमिने पूर्वसमै पिताने इस प्रकार हम सब को शाप दिया था, तिसके कुछ दिन पीछे हम दूसरी इस पक्षी योनि को प्राप्त भये और रणभूमिके बीच मे जाय पडे तो आपने दयाकर हमारा पालन किया है, हे मुने इस प्रकार हमने खग योनिको पाया और ऐसा कोई नहीं इस संसार मे है, कि जो प्रारब्ध के आधीन न होय।

मार्कण्डेय जी बोले कि इस प्रकार उन पक्षियों के बचन सुन शमीक मुनि समीप मे बैठे भये शिष्यों के प्रति बोले कि मैने पूर्वही तुम से कहा था, कि ये सामान्य पक्षी नहीं हैं, कोई महापुरुष श्रेष्ठलोग हैं, कि जो अति मानुष महायुद्ध महाभारत के बीच मे भी मृत्यु को न प्राप्त भये, तिस पीछे अति प्रसन्न महात्मा शमीक मुनि की आज्ञापाय वे चारोपक्षी द्रुमलतोंसे युक्त पर्वतश्रेष्ठ बिन्ध्यगिरि को चले गये, और तब से ले आजतक वे धर्म पक्षी उसी पर्वत मे बास करते हैं, और तपस्या औ स्वाध्याय मे रत औ समाधि मे निश्चय किये आनन्द से रहते हैं, हे जैमिने इस प्रकार मुनिबर शमीक से सत्कार औ आज्ञा पाय वे विहंगयोनि जाय झरनों के निर्मल पवित्र जल से पुनीत गिरिकंदर मे अपने मन औ इन्द्रियों को बशीभूत किये भये सदा आनन्द मगन मन सुखसे बास करते हैं।

इति मार्कण्डेय पुराणे बिनय प्राप्तिः तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

४ अध्याय।

मार्कण्डेय बोले कि इस प्रकार वे द्रोणपुत्र चारो पक्षी ज्ञान खान भये, और अब विन्ध्य पर्वतपर बास करते हैं, हे जैमिने तुम तिनके निकट जाय प्रश्न करो वे तुमारी इन प्रश्नों का उत्तर दे तुमको सन्तुष्ट करेंगे, जब जैमिनिने मुनिके ये बचन सुने तो प्रणाम कर तुरत बिन्ध्यपर्वत को सिधारे जहां वे धर्मात्मा पक्षी रहते थे, फिर जब पर्वत के निकट पहुंचे तो उनके पढ़ने की धुन सुनपड़ने लगी जैमिनि वह शब्द श्रवण कर अति विस्मित हो अपने मन में कहनेलगे, कि यथास्थान औ दोषरहित विना परिश्रम स्पष्टरूप से जो ये पक्षी पढ़रहे हैं, तो क्या तिर्यग्योनि मे भी इन मुनिकुमारों को सरस्वती ने नहीं त्याग किया है कि जैसे कोई विद्वान मनुष्य धन जन सदन छोड़ कर विरक्त हो चला जाता तो उसको सरस्वती कभी नहीं छोड़ती साथही साथ रहती है।

ऐसी ही चिन्ता करते करते जैमिनि मुनिने गिरि की कन्दरा मे प्रवेश किया तो क्या देखते हैं कि एक उत्तम स्फटिक शिलापर वे चारो पक्षी बैठे भये मुखदोषरहित सुन्दर स्वर से पढ रहे हैं, यह देख हर्ष शोक से भरे जैमिनि मुनि बोले कि हे पक्षीराजो तुमारा मङ्गल होय, हम व्यासदेव के शिष्य जैमिनि नाम आपसबके दर्शन को अभिलाष से इहां आये हैं यह जानो, और अनजान जान मेरे पर आप क्रोध न करना क्योंकि आपके पिताने कोप कर शाप दिया था, कि जिससे आप अब इस अधम ख-

योनि को प्राप्त भये हो परन्तु उनका भी कुछ दोष नहीं है इस शाप को भी तुम प्रारब्ध ही मानो।

देखो इस संसार में कोई धनीके कुलमें जन्म लेकर निर्धन भये पीछे भीलों से मारे गये, और कोई नित प्रति महादान करके भी फिर भीख मांगने लगे, और कोई कितनों को मारकर काल की गति से फिर आप बांधे गये, और कोई दूसरोंको गिरायकर फिर आप औरों से गिराये गये, ऐसे विपरीत उलटे पलटे अनेक काम मैंने अपनी आंखों से देखे परन्तु ये सब तपस्या की हानि होनेही से होते हैं, और मनचेती वस्तु के उच्छेद होने से यह जगत व्याकुल होरहा है, ऐसा मन में बिचारो तो कोई बात शोच करने योग्य नहीं है, और ज्ञान का इतनाही फल है कि जो हर्ष औ शोक से बंचकर आनन्द से रहना।

इतनी सुनतेही उन पक्षीयोंने जैमिनिको प्रणामकर पाद्य अर्घ दे कुशल प्रश्न पूछा, और जब तपोनिधि जैमिनि सुख से आसन पर बैठे और पक्षियों के पच्चोंको वायु से गतश्रम सावधान भये तब वे खग बोले कि हे महाराज आज हमारा जन्म सफल औ जीवन सुजीवन भया, कि जो देवतों के पूज्यपाद औ बन्दनीय आपके युगल चरण कमल के दर्शन पाये, और पिताजी की कोप रूप अग्नि जो हमारी शरीर में वर्त्तमान थी, सो अब आपके दर्शन रूप जल से सान्तहो शीतल भई।

अब कहिये कि आपके आश्रम में मृगपक्षी क्षेम कुशल से है, और त्वक्सार गुल्मलता वृक्ष औ तृणजातियों

में मंगल है अथवा अति आदर से यहभी पूछना हम को अयोग्य है क्योंकि जिन स्थावर जंगमों को आपसरीखे महात्मों का संग हैं उनके फिर असंगल कहां है अब प्रसन्न ता पूर्व्वक आप अपने आगमन का प्रयोजन कहिये और हमसरीखे प्राणियों को देवदर्शन के समान उन्नति औ ऐश्वर्य्य का देनहार यह आपका संगम किसी हमारी बडी अछी भाग्यने घटना किया है।

तब जैमिनि बोले कि हे श्रेष्ठ द्विजो अब वह कारण सुनो कि जिस हेत हम नर्मदा नदी के शीतल जल सीक रों से पवित्र अति विचित्र इस रमणीक गिरि की कंदरा को आये हैं कि एक समै महाभारत में हमारे जीको कुछ सन्देह भई तो उस के दूर करनेके लिये हमने महामुनि मार्कण्डेय के निकट जायकर वह पूछा तब मुनिने यह उत्तर दिया कि द्रोणके तनय विन्ध्यपर्व्वत में वास करते हैं तुम वहां जाय उनसे पूछो वे महात्मा ज्ञानी शान्त औ सुशील हैं तुमारे प्रश्नों का विस्तार पूर्व्वक उत्तर देंयगे यह ऋषि की आज्ञापाय हम इस पर्व्वत में आय आपके शुभदर्शन पाय सुखी भये अब उन प्रश्नों को सुनिये कि जिनके हेत इहां आये हैं और हमपर दयाकर उनका तात्पर्य्य समझाय कर कहिये तो मेरे मन का सन्देह जाय।

तब पक्षी बोले कि हां जो हम उन प्रश्नों को जानते हैं तो अवश्य कहैंगे, हे मुने चार वेद औ सकल अंग धर्म शास्त्र इतिहास पुराण और जो कुछ वेदका संबन्धी है वह सब तो हमारा जाना है पर तौ भी हम प्रतिज्ञा नहीं कर सकते हैं परन्तु आप भारत की संदेह

और हे मुनि इतनी और भी हमारी प्रार्थना है कि जो हम को किसी प्रकार का मोह या दूसरी कोई बाधा न होगी तो हम अवश्य कहेंगे, तव जैमिनि बोले कि जो श्रीहरि जगतके आधार और समस्त कारणों के कारण तथा निर्गुण परब्रह्म हैं सो मनुष्य अवतार किस हेत से भये, और किस हेत राजा द्रुपदकी कन्या कृष्णा पांचो पाण्डुपवों की एक महिषी भई यह वड़ी संदेह है, और तीर्थयात्रा के वहाने वलदेवजीने ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त किसलिये किया, और किस कारण से द्रौपदी के विनविवा हे पांच पुत्र पाण्डवों के वर्त्तमान रहते भये अनाथकी नाई विचारे मरे गये यह मेरे जीमे वड़ी सन्देह है ।

तव पक्षी बोले कि देवाधिदेव आदिपुरुष विष्णु भगवान को नमस्कार करते हैं कि जो अप्रमेयात्मा अव्यय शाश्वत चतुर्व्यूह स्वरूप त्रिगुणात्मक निर्गुण परब्रह्म हैं और अमृतरूप कि जिनसे सूक्ष्म और दृढ़तरूप दूसरा नहीं है और जिस जगदात्मा से यह समस्त जगत व्याप्त है और जो इस जगत के आविर्भाव तिरोभाव औ दृष्ट अदृष्टसे पृथक् हैं और जिसको आदि में सृष्ठ अअन्त में संहृत कहते हैं तिस आदिदेव परब्रह्म को समाधि से नमस्कार करते हैं, और जो ऋक यजुर साम आदि चार वेद को मुख से प्रगट कर इस त्रैलोक्यको पवित्र करते हैं तिनको हम नमस्कार करते हैं, और जिनके एक बाणकी भयसे दुष्ट दैत्य यज्ञ करनेवाले यजमान लगोंकी यज्ञों का विध्वंस औ विलोप नहीं करसक्ते तिस ईशान शिवरूपको प्रणाम

कर, अब हम अद्भुतकर्मा श्रीव्यासदेव के संपूर्ण मत को कहते हैं कि जिनोंने महाभारत नाम ग्रन्थ का उद्देशकर धर्मादिकों को जगत मे प्रकाश किया है।

देखो तत्त्वके जाननेवाले मुनिजनोंने जलका नाम नारा कहा है, सो नारा पूर्वहीं अयन कहे निवास स्थान रहा जिन भगवान का तिस हेतु से उनका नाम नारायण है सोई नारायण सकल वस्तु मे व्यापक एक आप सगुण निर्गुण चार मूर्त्ति धारण कर विराजमान हैं उन चारोंमे से एक शुक्लवर्ण मूर्त्ति अनिर्देश्य है जिसको केवल ज्ञानवान वृ[illegible] जिनों को छोड और कोई नहीं देख सकते हैं और वह रू[illegible] ज्वालामाला से उपूढ योगीजनों की पर निष्ठा[illegible] [illegible] अतिदूर औ निपट निकट गुणों से अतीत वासुदेव नाम ममता से रहित है फिर उसमे रूप औ वर्ण आदि कल्पनामय भाव कुछ भी नहीं है, वह सदा सुप्रतिष्ठा एकरूप से वर्त्तमान रहती है, दूसरी मूर्त्ति शेष रूप जो पृथिवी के अधोभाग मे टिकी भई अपने सीसपर इस धरा को धारण किये है, और जो तीर्यग योनि का आश्रय कर तामसी कही जाती और प्रलय काल मे जिस के सहस्रानन से प्रगट फूत्कार रूप प्रबल अनल इस जगत को भस्मीभूत कर देता है, तीसरी मूर्त्ति प्रजापालन मे तत्पर अनेक अवतार औ नाना कर्म करती हुई सतो गुण विशिष्ट धर्मका स्थापन करनेवाली है, चौथी मूर्त्ति जल के बीच मे पन्नगराज की शय्यापर शयन करती भई रजो गुणमय सदा सृष्टि को करती रहती है।

जो हरि की तीसरी मूर्त्ति प्रजापालन मे तत्पर हैं,

 [illegible]

वह निरन्तर पृथिवीपर धर्म का स्थापन करती रहती है और धर्म के विच्छेदकारी असुरों का नाश करती ऊई धर्म की रक्षा मे परायण देवतों की सहाय औ रक्षा किया करती है, हे जैमिने जब जब धर्म की ग्लानि कहे हानि होती औ अधर्म का अभ्युत्थान कहे उदय तब तब वह मूर्त्ति प्रगट होती है, देखो पूर्व हीं बराह रूप हो जिसने अपने तुण्डसे जलको हटाय नलिनीदलके तुल्य इस धरा को एक दांतपर धारण कर उद्धार किया, और नसिंह रूप हो हिरण्य कशिपु का उदर विदारा औ विप्रचित्ति आदि दानवों को भी मारा और बामन आदि अवतारों की कथा कहां लौं कहें, देखो अब उग्ररूप यह माथुर अवतार है इस प्रकार वह सतोगुणी मूर्त्ति नाना अवतार धारण करती है, हे मुने रक्षा कर्म मे स्थित वह मूर्त्ति प्रद्युम्न नाम से प्रसिद्ध हैं और देवता मनुष्य औ तिर्यग योनि मे वासुदेव भगवान की इच्छा औ आज्ञा से अवतीर्ण हो तिस तिस के स्वभाव की सदा ग्रहण करती है और कृतकृत्य भी भगवान विष्णु, जो मनुष्य रूप को प्राप्त भये अब इस का उत्तर आप सुनो।

इति मार्कण्डेये चतुर्व्यूहावतारः चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

---

५ अध्याय।

पक्षी बोले हे जैमिने पूर्वहीं त्वष्टा के पुत्र को जब इन्द्रने मारा तो इन्द्र को ब्रह्महत्या लगी और तेज हत

हो गया फिर तेज औ धर्म के चलेजाने से इन्द्र महा मलिन रूप भये, तिसके अनन्तर पुत्र का बध सुन प्रजापति त्वष्टा बड़े क्रोध को प्राप्त भये, और अपने सीस से एक जटा उखाड़ कर यह बोले कि आज मेरे बल को त्रैलोक्य औ देवतों समेत वह ब्रह्महत्यारा इन्द्र देखे जिस आपका जीने मेरे पुत्र का प्राण नाश किया है, इतना कह महा कोप से रक्त नैन त्वष्टा ने उस जटा को अग्नि मे होम कर दिया तो तुरतही अग्निसे बाहर निकल कर ज्वालामाली वृत्रासुर नाम असुर त्वष्टाके सन्मुख आनखड़ा भया कि बड़े बड़े कराल दांतों से भयानक मुख मानो अञ्जन का चञ्चल अचल है और त्वष्टा के प्रताप से महा बलवान वह इन्द्र का महाशत्रु वृत्रासुर दिन दिन इतना बढने लगा कि जितनी दूर कमान से छुटा तीर जाता है।

जब इन्द्रने जाना कि यह वृत्रासुर मेरे मारने के हेत प्रगट भया है तो उसके मारनेको मेल करने की इच्छा से सप्तर्षियों को उस असुर के निकट पठाया और ऋषियों के कहने सुनने से उसने इन्द्रके साथ प्रतिज्ञा पूर्वक मित्रता औ मेल किया, फिर जब इन्द्रने प्रतिज्ञा की मर्यादा उल्लङ्घन कर उसका बध किया तो वृत्रासुर की हत्या के डरसे इन्द्रका बल औ प्रकाश दोनो निकल कर वायु मे प्रवेश कर गये जो वायु सर्वव्यापी औ बल का प्रधान देवता है, और जब इन्द्रने गौतम का रूपधर उनकी धर्मपत्नी पतिव्रता अहल्या का धर्म नाशकिया तब उस अधर्म से इन्द्र का रूप नष्टहो गया और अङ्ग अङ्ग की छवि औ लावण्यता जाती रही।

फिर ऐसे दुष्ट दुर्बुद्धि इन्द्र को परित्याग कर देव वैद्य अश्वनीकुमार भी दोनो भाई इन्द्रपुर से चलेगये तो धर्म औ तेजसे भ्रष्ट बलरूप विहीन अति दीन जानकर इन्द्रको जय करने के लिये दैत्य औ दानव बड़ा उद्यम करने लगे और बड़े बड़े बलवान राजों के कुल मे जन्म लेने लगे महाराज फिर कुछ काल बीते पृथिवी उनके भार से पीड़ित हो गोरूप धारण कर सुमेर सिखरपर गई जहां ब्रह्मादि देवतों की सभा थी और दैत्यदानवों के भूरि भार से पीड़ित अपना सब दुख देवतों से कहनेगली कि ये जो दैत्य दानव संग्राम मे तुम सबसे बधको प्राप्त भये सो सब मनुष्य लोक मे जाय बलबान राजों के घरों मे जन्मे हैं, और अनेक अक्षोहिणी उन की सेना भई हैं इस से उन का भार मै नहीं सह सकती इसलिये अब अधो लोक रसातल को जाती हूं सो तुम सब अब ऐसा करो कि वह मेरा दुख दूर हो जाय।

यह सुन देवतों ने स्वर्गसे धरणी तलमे आय प्रजों के उपकार औ भूभार हरनेके हेतु अपने अपने अंशसे प्रगट भये, जो इन्द्रका तेज धर्म मे गया था वह आयकर कुन्तीके गर्भ से महाप्रतापी राजा युधिष्ठिर का अवतार भया और वायु मे जो इन्द्रका बल गया रहा सो भीमसेन नाम प्रगट भया और इन्द्रके आधे पराक्रम से अर्जुन प्रगट भये और इन्द्रकी कान्ति औ रूपसे माद्री से युगल कुमार नकुल औ सहदेव नाम भये इस प्रकार नानारूप धारी योगीश्वरों के समान एक ही इन्द्रने पांच रूप हो प्रगट भये और उनकी स्त्री जो सची थी सोई कृष्णा नाम

हुतासन से प्रगट भई है तो फिर कृष्णा एक इन्द्र की स्त्री छोड़ दूसरे की नहीं भई यह मर्म मैने तुमसे कहा अब वह सुनिये कि जिस हेत बलदेवजी सरस्वती स्नान करने को गये। इति मार्कण्डेय पुराणे इन्द्रविक्रिया नाम पञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥

---

६ अध्यायः।

पच्ची बोले कि हे महाराज! अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण की अति प्रीति जान बलदेवजी अपने जीमे यह चिन्ता [illegible] कि अब हम को क्या करना उचित है कि जिसमे सांप मरै न लाठी टूटै क्योंकि श्रीकृष्णके बिना ते हम दुर्य्योधन के निकट किसी प्रकार से न जांयगे और पाण्डवों के साथ होकर राजा दुर्य्योधन को जो हमारा जामाता औ शिष्य है कैसे मरवाय डारेंगे इसी दुविधा से बलरामने यह ठहराया कि कुरुवंशी और पाण्डवों के युद्ध का जबलों अन्त न होय तबलों हम तीर्थयात्रा करें यह बात श्रीकृष्णसे पूछ और अर्जुन औ दुर्य्योधनसे भी जनाय कर बलराम अपनी सेना समेत द्वारका को पधारे और वहां जायकर यह निश्चय किया कि कल्ह सवेरे ही हम तीर्थयात्रा को सिधारें तो भला है।

ऐसी निश्चय मन मे कर हलधरने मदिरा पान किया और सर्वसौभाग्यमती रेवती नाम निज वाम को संग ले

बलदेवजी उपवन को विहार करनेके लिये गये, महाराज मद पान कियेभई अप्सराके समान निजपत्नी रेवतीका कर गहे सखी सहेलियों के झुण्डमे लटपटाते भये उन्मत्त को नाईं चले जाते हैं जब उस उपवन मे जाय पहुंच्चें तो देखा कि वह वन अति रमणीय औ कमनीय है कि जिस से सरस वन और कहीं भी नहीं है और सकल ऋतुवों मे फल फूल से युक्त सुन्दर सुहावना हरा हरा साखावृत्तों से भरा और जिसमे अल्प सरोवरों के बीच निर्मल जल के ऊपर जहां तहां पवित्र सुगन्धयुक्त पङ्कज पुष्प उहडही शोभा को पायरहे हैं फिर बलदेवजी उस महावनमे जाय उन्मत्त पच्चियों की सुन्दर सुहावनी मनभावनी मधुरवानी सुनते भये और देखाकि असं[illegible] अमरा, आम, धव, नारिकेल, लकुच, विल्व, बीजपूर, तंदू, मो[illegible], पनस, दाडिम, जीरक, नीप, पारावत, अंकोल, नलिन, कंकोल, भल्लातक, अंवरा, अमलवेल, करमर्द, विभीतक, हरीतक, औ इंगुदी आदि अशोक, पुन्नाग, केतक, वकुल, चंपक, नकुल, सप्तपर्ण, कर्णिकार, मालती, पारिजात, कोविदार मन्दार, वदर, देवदार, शाल, ताल, तमाल, किंशुक, वंजुल आदि नाना वृच्च लगे हैं॥

और चकोर मोर शातपत्र भृङ्गराज कोकिल शुक शारिका कंक कलविंक जीवजीवक हारीत चातक प्रिय पुत्र आदि नाना पच्ची वृच्चोंपर बैठे बोलरहे हैं और ऐसा वह सुहावना अनुराग वाग है कि जिसमे सुन्दर तडाग औ झीलरों मे मोतीके तुल्य निर्मल जल भरे हैं और उनमे नीलोत्पल कन्दरोक कुमुद कल्हार कमल

चहुं ओर फूलरहे हैं और उन सुन्दर सरोवरों के तीर तीर जल पक्षी हंस कलहंस लबहंस कारण्डव कादम्बक बक सारस जलकुक्कुट धृतराष्ट्र चक्रवाक जलविहार करते हैं, और कर्क, कूर्म, मद्गुर, रोहित, मकर, नक्र, झष ग्राह, आदि जलचारी जन्तु जलमे सन्तरण कर रहे हैं।

इस प्रकार उस मनोहर उपवन को एक ओर से देखते हुये स्त्रीगण समेत बलदेव जो एक बड़े वृहत अति उत्तम लतागृहके मध्य को गये तो उसके भीतर जायकर देखा कि कौशिक, भार्गव, भरद्वाज, गौतम, अत्रि बशिष्ट, सांकृत, उपमन्यु, आदि नाना गोत्र औ वंशमे उत्पन्न वेद वेदांग के पारग महात्मा ब्राह्मणों की मण्डली विराजमान है और कथा श्रवण की उत्साह से कोई कृष्णाजिन पर कोई उत्तरीय कोई कुशासन कोई वृषी कहे चटाई पर चारो ओर बैठे हैं, और उनके बीच ऊंचे व्यासासन पर आसीन सूतजी प्राचीन देव ऋषि सम्बन्धी पुराण की नाना कथा यथामति कहि रहे हैं।

इतने मे मद्यपान से लाल नैयन विगलित बैन बलरामजी जाय पहुंचे तो इन को मदोन्मत्त देख ब्राह्मण सब उठ खड़े भये और अति आदर से सत्कार औ पूजाकर कुशल प्रश्न पूछने लगे परन्तु व्यास को कथा समै मे आसन से उठना मना है इस हेत सूतजी बैठे ही रहे, यह देख बलदेवजी को क्रोध जो आया तो तुरत ही सूत को मार गिराया और कथा का रस भङ्ग हो गया।

जब ब्रह्मासन पर आसीन ब्राह्मणके तुल्य सूत का बध बलदेवजीने किया तब सब के सब ब्राह्मण अपने अपने अंबर

आसन कमण्डलु औ कृष्णाजिन लेकर उस वन से निकर निकर एकाएक एकबारगी भागे और बलदेवजी वहां अकेले रहगये तो जाना कि यह मैंने बडा पाप किया जो ब्राह्मणके स्थान मे प्राप्त इस सूत को मारा इसी से सब ब्राह्मण भाग गये हैं, और मेरी शरीर मे भी लोह की ऐसी गन्ध आयरही है कि जिस से मेरा मन अति खिन्न हो रहा है, और ब्रह्महत्यारे के समान अब मोहिं आप अपनी प्रतीत होती है॥

देखो धिक्कार है ऐसे क्रोध आमर्ष औ मद्यपान को कि जिसके वशहो मैने अतिमान अभिमान औ निडर निर्दयता से यह महापातक किया है तो अब इसके पराच्छित औ पाप दूर करने के लिये देश ऐशमे अपने कर्म को प्रकाश करता हुआ मैं बारह वर्ष का व्रत करूंगा और जो यह तीर्थयात्रा मै आरंभ करचुका हूं इस से प्रथम प्रतिलोमा सरस्वती को जाउंगा, हे महाराज इतना कहकर बलरामजी उस प्रतिलोमा सरस्वती को चले गये, और अबतुम पाण्डव कथा संबंधी वृत्तान्त जो भया सो श्रवण करो। इति मार्कण्डेय पुराणे बलदेव ब्रह्महत्या नाम षष्ठः सर्गः॥ ६॥

---

७ अध्यायः।

धर्म पक्षी बोले कि पूर्व हीं त्रेतायुग मे हरिश्चन्द्र नाम एक राजा बडे धर्मात्मा थे कि उन की राज्य मे मनुष्यों को कोई आधिव्याधि न होती और न अकालमृत्युसे कोई

मरे न कभी देशमे दुर्भिक्ष पड़ा और न अधर्म से प्रजों की रुचि भई न धन जन तप बल मदसे उन्मत्त भये और न कोई अप्राप्त यौवना स्त्री भई, वही राजा हरिश्चन्द्र एक समय मृगयाके अर्थ वनको गये और एक मृगके पीछू घोड़ा डालेभये चलेजाते थे कि इतने मे योषितों के रोने का शब्द आने लगा कि हमारी रक्षा औ त्राण करो, राजा उस शब्दके सुनतेही मृगका पीछा छोड़ उसी ओर को यह कहते हुये चले कि भय मत करो मै आन पहुंचा और यह कौन दुष्ट दुर्बुद्धि है जो मेरे रहते दीनों को दुख दे अन्याय कर रहा है।

हे मुने इतने मे रौद्रनाम विघ्नराज अपने मनमे विचार करने लगा कि तपस्या मे तत्पर अतुलबल विश्वामित्र उन विद्या को साधरहे हैं, जो पूर्वही महादेवादि देवतों को भी सिद्ध न भई थीं तो हम अब क्या उपाय करें देखो विश्वामित्र एकतो सबल दूसरे तेजस्वी और हम इनसे निबल हैं परन्तु क्षमा मौन औ संयम से साधीजाती जो ये विचारी विद्या मारे भयके आरत नादसे रोदन करती हैं तो इनको रक्षा करने को कोई उपाय पार जाय यह हमै प्रतीति नहीं परती है परन्तु यह राजा इस औसर मे आयकर प्राप्तभया और बार बार कहता भी है कि मत डरो२ तो मै अब इसी राजा को शरीर मे प्रवेशकर अपना काम सिद्ध क्यों न करूं यह सोच विचार वह दुष्ट विघ्नराज महात्मा राजा हरिचन्द की देहमे तुरत ही प्रवेश कर गया।

तब तो राजाने बडा क्रोध करके कहा कि यह कौन

पापी मनुष्य है जो तेज औ प्रताप से प्रकाशमान प्रभुके मेरे वर्त्तमान रहते अपने वस्त्रमे पातक बांधरहा है क्या जानता नहीं कि मेरे धनुष निर्मुक्त बाणों से सर्वाङ्ग छिन्नभिन्न हो दीर्घनिद्रा को प्राप्त होगा, इतना कहते ही वे विद्या तो अदृश्य होगई और विश्वामित्रके जीमे बड़ा कोप प्रगट भया, फिर राजा हरिश्चन्द्रने भी देखा कि येतो तपोधन विश्वामित्रजी हैं, यह जान अतिभयसे कंपमान कलेवर राजा को देख क्रोधकर विश्वामित्रने कहा कि हे दुष्ट दुरात्मा खड़ा रह, और देख कि जो फल हैं।

तब तो राजा हरिश्चन्द्र प्रणामकर विनयपूर्वक बोले कि हे भगवन् सुनिये वह मेरा राजधर्म है इससे निज धर्ममे निरत मेरी अपराध को क्षमा कीजिये और आप ऐसे महात्मों को एकाएक क्रोध करना उचित नहीं है देखिये धर्मज्ञ राजाको दान रक्षा औ धर्मनीतिके अनुसार युद्ध भी अवश्य कर्त्तव्य कर्म है, तब विश्वामित्र बोले कि भला तो कहो किसकी रक्षा किसको दान औ किसके साथ युद्ध करना चाहिये हरिश्चन्द्र बोले उत्तम ब्राह्मण औ दरिद्री को दान, भय से भीत को रक्षा, अन्यायी के साथ युद्ध करना योग्य है, मुनि बोले कि हे राजन् जो आप राजधर्म को जानते औ मानते हो तो हम तपस्वी ब्राह्मण धनको कांक्षा करते हैं हमको मनमानी दक्षिणा दीजिये।

पक्षी बोले कि हे जैमिने मुनिके वचन सुन राजा मनमे प्रसन्न हो अपना पुनर्जन्म जानकर मुनिसे बोले कि हे मुने आपकी जो इच्छाहो सो निसंदेह मांगिये यद्यपि

र्थ पदार्थ दुर्लभ भी होगा तथापि मैंने आपको दिया, सोना चांदी पुत्र पत्नी प्राण पुर शरीर राज्य और लक्ष्मी जो इच्छा होय लीजिये, मुनि बोले राजन् जो आपने दिया उस प्रतिग्रह को मैंने स्वीकार किया अब प्रथम राजसूय यज्ञ की दक्षिणा दीजिये, तब राजाने कहा वह दक्षिणा भी हम आपको देयंगे परन्तु और जो कुछ आपको इष्ट होय सो कहिये, विश्वामित्र बोले हे वीर पुर पत्तन वन पर्वत औ सागर समेत यह वसुन्धरा और रथ गज अश्व सहित अपनी सकल राज्य औ कोशागार और जो कुछ आपका है, एक पत्नी पुत्र औ निज देहके विना, सब हमको दीजिये और धर्म भी जो जीवके साथ जाता है अधिक कहनेसे क्या है यह सब दीजिये।

पक्षी बोले कि विश्वामित्रके वचन सुन प्रसन्न मुख हर्षित मन राजाने हाथ जोडकर कहा कि तथास्तु मैंने यह सब आपको दिया तब फिर मुनिने पूछा कि जो आपने अपना सर्वस दिया तो अब उसका स्वामी को है, राजा बोले कि जिस समय मैंने दान किया उसी समय से उसके [illegible]मी आप भये और दूसरा कौन है, फिर विश्वामित्रने [illegible]ा कि जो अब मैं स्वामी हूं और वह सारी वसुधा मे[illegible] है तो आप मणि मुक्ता सोनो स्वर्ण आदि आभूषण सब उतार छालके वल्कल धारण कर पत्नी पुत्र साथ ले मेरे अधिकारके बाहिर चले जाइये।

पक्षी बोले कि यह मुनि की आज्ञा शीसपरधर राजा अपनी शैव्यानाम पत्नी औ पुत्रको साथ ले जब वहां से चले तो मार्गमे आय विश्वामित्रने कहा राजन राजसूयकी

दक्षिणा दिये विना आप कहां जाते हैं, तब हरिश्चन्द्र बोले हे भगवन् यह निःकंटक राज्य मैंने आपको दिया अब मेरी और स्त्री पुत्रकी तीन शरीर मात्र बाकी रही हैं तो वह बडी भारी दक्षिणा किस प्रकार से देसकैंगे मुनि बोले कि तथापि वह मेरी दक्षिणा तुम को अवश्य देनी पडेगी क्योंकि ब्राह्मण को देनेकहकर न देनेसे कल्याण नहीं होता उलटा नाश होता है और जितने से ब्राह्मण सन्तुष्ट होय उतना उस दक्षिणा का प्रमाण है, आपही ने अभी कहा है कि ब्राह्मण को दान दीन की रक्षा औ दुष्ट का बध करना योग्य है इससे जो देने कहा होय तो दीजिये औ जगतमे यशलिजिये।

फिर मुनि बोले कि तो वह दक्षिणा कितने दिनमे मिलेगी यह शीघ्र कहो कि उतने दिनतक हम सन्तोष करें नहीं तो मेरी शापअग्नि तुम को अभी भस्म करेगी राजाने कहा कि एक मास भरमे देयगें अब आज्ञा करिये तो मै अन्यत्र कहूं गमन करूं, तब मुनि प्रसन्न मनसे बोले कि अच्छा अब आप गमन करिये और निज धर्मको पालिये मार्गमे आपका मङ्गल होय, यह सुन राजा अति प्रसन्न हो शैव्यानाम राजमहिषी औ रोहिताश्व नाम पुत्र समेत और ठौर को चले।

पक्षी बोले हे मुने जब राजा औ बालक सहित रानी पुरके बाहिरहो पयादे पांवसे चली तो उनकी वह दशा देख पुरवासी सब अतिव्याकुल हो रने लगे और सबकेसब उनके पीछे चले और कहते थे कि हा नाथ निरपराध हम सब को छोडकर धर्मसे तत्पर प्रजोंपर अनुग्रह करने

वाले आप कहां चलेजाते हैं, जो धर्म का विचार करो तो हमैं भी अपने साथ लेते चलो और अनुग्रह कर एक मुहूर्त भर और विलम्ब करिये तो आपके मुख पङ्कज को हमारे नेत्र भ्रमर पानकर तृप्त होंय फेर क्या जानिये कि कब आपके दर्शन हमको मिलें।

इतनाकह फिर पुरवासी प्रजागण आपसमें कहने लगे कि देखो इस दुष्ट कालगति को कि जिस राजाके गमन करते समय पीछे राजालोग चलते थे तिस राजा के साथ अब बालकसमेत अकेली रानी जाती हैं सोभी नङ्गे पावोंसे और जिसके आगे कर्मचारी चाकर औ सेवक सब हाथी घोड़ोंपर सवार होकर साथ चलते थे सो हरिश्चन्द्र अबेने पावोंसे जाते हैं हाय! यह आपका सुकुमार मुख मार्गमें मलिन औ धूरिसे धूसर कैसा होजायगा हे राजन धर्मको संभारि कुछ बेर विलंब करिये और जो विशेषकर कठोरता ही क्षत्रियोंका परम धर्म है तो हे नाथ पुत्र कलत्र धन धान्य ग्राम सब छोड़ परछाहीं के समान हम सब भी आपके साथ चलते हैं क्योंकि जहां आप हैं तहांई हमको नगर औ स्वर्गका सुख है।

जब नगर निवासियोंके ऐसे बचन सुने तो राजा शोक सागर में मग्नहो प्रजोंपर दयाकर मार्गमें खड़े होगये, यह देख विश्वामित्र रोषसे लालनेत्र पुरके बाहर निकलकर कालके समान राजाके निकट आय यह बोलेकि हे दुष्टचरित मिथ्यावादी कुटिलमति धिक्कार है कि जो अपनी राज्य हमै देकर फिर लेनेकी इच्छासे बार बार ठिकरहा औ

खडा होता है, यह सुन राजा कांप उठे और स्त्रीका हाथ पकड़कर खींचते हुये अपनी बाट चले।

पक्षी बोले महाराज इसके आतुर उस सुकुमारी राज कुमारी को घसीटते समय विश्वामित्रने पीछेसे आयकर एक डण्डा मारा और कहा कि राजा राहमें कहां का नखरा लाई है, इस प्रकार मुनिको मारते देख राजाने दुखीहोकर यह कहा कि महाराज क्षमा करिये जाता हूं, इतने में बड़े दयालु पांच विश्वे देवा देवता ऐसी अन्याय देखकर बोलउठे कि यह विश्वामित्र बड़ा पापी औ अधर्मी है और किस लोक को जायगा कि जो ऐसे यज्ञकरनेवाले यजमान राजाको राज्यसे भ्रष्टकर दुर्दशाकर रहा है देखो अब हम सब किसको यज्ञसे श्रद्धासे मन्त्रपूर्वक दिये भये सोमलता के रसको पानकर हर्ष औ तृप्तिको प्राप्त होयंगे तो यह बिश्वामित्र यथार्थ बिश्वका अमित्र है।

पक्षी बोले कि विश्वे देवोंके ऐसे कठोर बचन उसकोर सुन विश्वामित्रने बड़ा कोपकर उन पांचो देवतोंको यह शापदिया कि तुम सब जाव मनुष्ययोनि को प्राप्त होउ यह शाप सुन उन विचारोंने इनकी बड़ी प्रार्थना की तो प्रसन्न हो बिश्वामित्रने फिर कहा कि मनुष्ययोनिमें तुम्हारे सन्तती न होगी और न विवाह होगा मद मत्सर औ काम क्रोधसे रहित हो तुम सब फेर देवयोनिको प्राप्त होउगे।

इसी हेत से वे अपने २ अंशसे आय कुरुवंशमें अव तरे सोई द्रौपदीके गर्भसे पांचो पाण्डुनन्दन भये थे इस कारण व पांचो महारथी पाण्डुपुत्र बिनब्याहे मारे गये और मुनिकी शापसे मुक्तभये।

यह पाण्डुकी कथा का सम्बन्धी जो कुछरहा सो सकल वृत्तान्त मैने तुमसे कहा और आपकी चारो प्रश्नोंका उत्तर हम दे चुके अब और क्या श्रवण करनेको इच्छा है।

इति मार्कण्डेये पुराणे द्रौपदी पुत्रोत्पत्तिः सप्तमः सर्गः॥७॥

---

८ अध्याय।

जैमिनि बोले हे द्विजराजो आपने मेरी चारो प्रश्नका उत्तर तो भलीभांतसे दिया पर अब राजा हरिश्चन्द्रकी कथा श्रवण करने की इच्छा है जो ऐसे महात्मा महाराज ने इतना बड़ा कष्ट पाया फिर ऐसा या इससे अधिक [illegible] भी पाया कि नहीं।

तब पक्षी बोले कि विश्वामित्रके वचन सुन बालक समेत अपनी शैव्यानाम भार्य्याको साथलेकर राजा धीरे धीरे काशीपुरी को चले कि वह वाराणसी त्रिशूलपर बसी शूलपाणिकी राजधानी है इसमे मनुष्य का कुछ अधिकार नहीं है, महाराज दुखसे पीड़ित पांव पयादे स्त्रीसमेत राजाने काशीपुरीमे पैठते ही देखा कि विश्वामित्र सामने खड़े हैं मुनिको देखतेही राजा नम्रहो हाथ जोड़ विनयसे बोले कि हे मुने मेरे प्राण औ स्त्री पुत्र जिससे आपका प्रयोजन औ सन्तोष होय उसे आप अर्घपाद्यमे लीजिये या और कोई काम हमारे जोग हो उसको कहिये।

बिश्वामित्र बोले राजन महीना पूराभया अब वह तो राजसूय की दक्षिणा मिले हों तुमने वचनका स्मरण

करते होउ, हरिश्चन्द्र बोले हे ब्राह्मन आज महीना पूरा होगा पर यह जो अभी आधा दिन बाकी है इतना और भी विलम्ब करिये मैं अवश्य देउंगा तब विश्वामित्रने कहा भला हम फिर भी घूमकर आवेंगे परन्तु जो आज वह दक्षिणा न मिलेगी तो तुम को हम शाप अवश्य देंयगे।

पक्षी बोले इतना कह मुनि तो चले गये और राजा अपने मनमें चिन्ता करने लगे कि जो देने कहा वह कहां से लाय कि प्रकार देंयगे बडे असमञ्जसमें पडे कि न मेरे पास धन और न कोई ऐसा इस समै मित्र कि जो सहाय करै और न क्षत्रीको दान का अधिकार है तो अब हम किस प्रकार उद्धार होंय औ नरक की यातना से बचैं क्या अपने प्राण परित्याग करें या किसी देश देशान्तर को चले जांय देखो जो प्राण देंय तो देने को कहि फिर नदे कर ब्रह्मधनके हरणी महापापी हम कृमियोनि को प्राप्त होंयगे इससे तो अब अपने को बेंचकर मुनिकी दक्षिणा देंय और हम दास भावको प्राप्तहोंय तो होंयगे इस प्रकार व्याकुल दीन मनमलीन राजा अधोमुख वैठे चिन्ताकर रहे हैं कि इतने में रानीवोंमे आंसूभर गदगद वानी से बोली कि महाराज चिन्ताको छोड़ो अपना सत्यपालन करो क्योंकि सत्यसे रहित मिथ्यावादी नर नरक औ स्मसानके समान हैं इससे पुरुषको सत्यके तुल्य और कोई बडा धर्म नहीं है देखो अग्निहोत्र अध्ययन दानादि सकल शुभ कर्म उसके विफल हैं जिसके बचन मिथ्या औ वेप्रयोजन हैं औ सत्य शास्त्र में बुद्धिमानोंने कहा है

कि जैसे महात्मोंके तारनेके लिये सत्य है तैसे झूठे दुष्टोंके बोरने को मिथ्या भी है और देखो सात अश्वमेध औ एक राजसूय यज्ञ करके भी छतिनाम राजा एकवार मिथ्या बोलने के कारण स्वर्गसे गिराये गये थे सो हे राजन्! मेरे पुत्र भी होचुका है इतना कह वह राजपत्नी रोने लगी तब रोदन करती भई निज रानी से राजा बोले हे भद्रे! सन्ताप छोडो और यह बालक भी वर्त्तमान है इससे जो कुछ कहने की तुम्हारी इच्छा होय सो कहो तब राजमहिषी बोली कि हे राजन् सत्पुरुषोंके पुत्रफल हेत ही स्त्री है और मेरे पुत्र होचुका है इससे अब हमको वेञ्चकर उस ब्राह्मणको दक्षिणा देना योग्य कर्म है।

पक्षी बोले कि इस बातके सुनते ही राजा मूर्च्छित भये फिर जब मूर्च्छा गई तो अति दुःखी हो विलाप करने लगे और बोले कि जो वचन तुम कहती हो इससे हमको बड़ा दुःख होता है क्या तुम्हारे हास विलास सहित मधुर आलाप हम को भूल गये हैं, हाय यह अनुचित निठुर वचन तुमसे कैसे कहा गया और जो कर्म कहनेके जोगभी नहीं सो हम कैसे करसकैंगे इतना कह राजा मूर्च्छित हो पृथिवीपर गिर पडे, महाराज को भूमिपर अचेत पडे देख राजमहिषी दुःख भरी करुणा-वचनसे बोली कि हा नाथ यह किस कर्म का फल है जो आपऐसे राजा रङ्क के समान भूमिपर पडे हैं, कि जिस आपने कोटिसे अधिक धन धेनु ब्राह्मणोंको दान किया सोई पृथीनाथ मेरे नाथ अनाथ की नाईं अब भूमिपर सोये हैं, देखो कहां वह सम्पत और कहां यह विपत कर्मकी गति कुछ जानी नहीं जाती बडे कष्ट की बात

हैं, हे देव इस महीपतिने कौन ऐसा पाप औ अपराध किया है, कि जो इन्द्र औ कुवेरके तुल्य हो कर भी इस दुर्दशा को प्राप्त भये, इतना कह स्वामीके दुःखसे पीडित वह सुन्दरी दुःख भरी रानीभी मूर्च्छित हो भूमिपर गिर पड़ी, जैमिने उस समै माता औ पिता दोनोको भूमिपर अचेत पडे देख वह बालक विचारा भूख का मारा व्याकुल हो बडे दुःखसे बोला हे पिताजी हमको बड़ी भूखलगी है और हे माय उठो हमको अन्न पानी देउ प्यासके मारे मेरी जीभ सूख रही औ क्षुधा दुख दे रही है ।

पक्षी बोले कि जैमिने इसी बीचमे महामुनि फिर आन पहुंचे औ हरिश्चन्द्र को मूर्च्छित देख अपने कमण्डलसे जल निकाल उस का छींटा मार यह वचन बोले कि उठोउठो राजन् वह मेरी यज्ञ की दक्षिणा दे। क्योंकि ऋणीका दुःख दिन दिन बढताजाता है, जब शीतल जल की सींच मुखपर लगी तो राजा की मूर्च्छा गई और देखा कि विश्वामित्र खडे हैं, यह देख फिर मूर्च्छित हो गिरपडे, तब मुनि क्रोध से भरे हरिश्चन्द्र के प्रति बोले कि राजन् जो धर्मको जानते औ मानते हो तो मेरी वह राजसूय की दक्षिणा दे डालो देखो सत्यसे सूर्य्य तपरहे हैं और सत्यही के ऊपर यह मेदिनी थिर है और सत्यके भरोसे स्वर्ग टिका है और धर्म भी सत्यका अवलम्ब कर वर्त्तमान है और सुनो कि एक समय हजार अश्वमेध यज्ञ औ सत्य इन दोनो को देवतोंने तुलापर धर के तौला तो सत्यही का पलरा भारी भया था, फिर बोले कि हम को इस प्रकार समझाने से क्या प्रयोजन है एरी दुष्टा

पापिनी क्रूर मिथ्यावादिनी रानी जो फल राजा और तुमको मिलेगा सो सुन कि आज जो मेरी दक्षिणा न मिली औ र्य्य अस्त भये तो मै अवश्य ही शाप दूंगा।

इतना कह मुनि तो चलेगये और राजा शाप की भयसे अति व्याकुल भये तब राजमहिषी शैव्या बोली कि हे महाराज मेरे वचन मानो और मुनि की शाप औ शापानलसे दग्ध हो मृत्युको न प्राप्त होउ, पतनीके वारबार कहनेसे राजाने कहा हे भद्रे अच्छा निर्दय निर्लज्ज हम अब यही कर्म करते हैं जो कोई क्रूर भी न कर सकै पर जो तेरी वाणीसे ऐसा दुर्वचन निकल सकै, इतना कह आप अति आतुर हो नगरको गये और नेत्र आंसूसे भरे गद गद कण्ठ यह वचन कहने लगे कि हे नगर निवासी महाजन लोगो मेरी एक वात सुनो और जो पूछो कि तुम को हो तो मै कठोर क्रूर पापीसे भी पापी कोई राक्षस हूं कि जो अपनी प्राणप्रिया भार्या को निज प्राण रहते वेंचने आया हूं सो जिस किसी गृहस्थ को गृह कर्म करने के लिये दासी मोल लेने की दरकार हो वह शीघ्र बोलै क्योंकि हम दिन रहते ही वेंचने चाहते हैं।

यह सुन कोई वृद्धब्राह्मण बड़ाधनी बोला कि वह दासी हम लेयंगे क्योंकि मेरे धन तो बहुत है पर मेरी स्त्री सुकुमारी है उससे कुछकाम नहीं हो सकता इससे काम काज औ रूप शील अवस्था के अनुरूप धनलेकर तूं अपनी स्त्री हमको दे, जब उसनें ऐसा कहा तो राजाका हृदय फटगया और कुछ न बोलसका तब वह ब्राह्मण राजाके वल्कल वस्त्रसे बहुतसा धन बांधकर उस रानीका

चुंटिया पकड़ झोंडी बनाने के लिये अपने घरको लेचला तब माता को घसीटते भये देख रोहिताख्य नाम उस का छोटी उमर का बालक अपनी माता का अञ्चल पकडे रोताहुआ साथलगा तो रानी बोली कि हे ब्राह्मण जो आप थोडी सी विलम्ब करो तो मै इस बालक को समझाय और अच्छी तरहसे देखके आपके साथ चलूंगी क्योंकि फिर इसका दर्शन हमको दुर्लभ है, इतना कह उस बालक से रानी बोली कि हे राजपुत्र हमारे अञ्चल को छोडो अब हम तुमारे स्पर्श करनेके योग्य नहीं हैं॥

इतनेमें वह ब्राह्मण रानी को खींचकर लेचला औ बालक भी अम्बा २ करता पीछे दौड़ा यह देख ब्राह्मणने उस लडके को एक लात बडे जोरसे मारा पर तौभी उसने पीछा न छोडा तब रानीने रोदन कर कहा हे महाराज मेरेपर दयाकर इस बालक को भी मोल ले लीजिये क्योंकि इसके विना हमसे आपका काम भली प्रकार न हो सकैगा इस हेत धेनु औ वत्स संयोग के समान इसका भी योग मेरे साथ करिये इसमे आपको बडा यश है यह उस दासी की बात मानकर ब्राह्मणने फिर हरिश्चन्द्र से कहा कि इस बालक का भी मोल हमसे लेलो जो धर्मशास्त्रमे स्त्री पुरुष का मोल शत सहस्र लक्ष कोटिलों लिखा है।

पक्षी बोले कि इतना कह वह ब्राह्मण बालक का मोल और भी धन राजाके उठने मे बाध सौंपकर उन दोनो स्त्री औ पुत्र को एक डोरीमे जोडकर ले चला तो यह देख बडे दुखसे पीडित राजा रोने औ बार २ ऊर्द्धश्वास लेने लगे कि, हाय जिस रानी को सूर्य चन्द्र वायु भी कभी न

देख सके तो दूसरे पुरुष की क्या बात थी सो आज इस दासी की दशा को प्राप्त भई और सूर्यवंश मे प्रगट हो सुकुमार यह राजकुमार भी बिकगया तो धिक्कार है मेरी आत्मा औ दुर्बुद्धि को कि जिसकी दुष्टनीति से इस दैवाधीन दशा को हम अब प्राप्त भये और धिक्कार है इस मेरे जीवन को कि इतने पर भी पापी प्राण इस देहसे न गये।

पक्षी बोले कि इस प्रकार विलाप करते हुये राजा की दृष्टिपथसे वह ब्राह्मण इनकी स्त्री पुत्र-को लिये भये ऊंचे भवन औ दृक्षोंकी ओटमें हो गया और विश्वामित्र ने भी उसी जग आयकर अपनी दक्षिणा मांगी तो राजाने वह धन जो स्त्री पुत्रको बेंचकर पाया था सो सौंप दिया फिर मुनि उस धन को स्वल्प जान औ राजा को शोक सन्तप्त देख क्रोधकर बोले कि एरे अधम क्षत्री इतना हीं धन राजसूय की दक्षिणाके समान तूने हमै दिया है तो मेरे तप औ तेज का बल देख कि मै कैसा विमल ब्राह्मण हूं और कैसी मेरी विद्या औ प्रभाव है, तब राजा बोले कि भगवन क्षमा कीजिये मै और भी देता हूं इतना तो स्त्री पुत्र बेंच कर दिया है, अब कुछ काल और विलम्ब करिये तो बाकी भी मिलेगा तब विश्वामित्र बोले कि जो यह दिन का चतुर्थ भाग बाकी है इतना हीं हम विलम्ब करेंगे और जैसे दिन अंथया औ दक्षिणा न मिली तो तुम को अवश्य ही हम से शाप मिलेगी।

पक्षी बोले कि ऐसे निठुर वचन कह वह धन लेकर कोपसे भरे ऋषि तो चलेगये परन्तु राजा फिर शोक सागर मे मगन हो नीचा मुखकर यह कहने लगे कि हे

टिनी मेस चमरी ...

पुरवासी लोगो अब इस आप अपने तईं बेंचते हैं जिस किसीको सेवक की इच्छा हो सो धन देकर इसे मोल लेवे परन्तु इसी बीचमें कि जबतक सूर्य अस्त न होंय, इतने में चाण्डाल का रूप धारणकर धर्म जो आये कि बड़ा बहुत कुत्सित रूप महाभयानक कुरूप केश दाढ़ी मूछें टेढ़ी कपोलपर ठाढ़ी कालारंग पीले नेत्र लम्बा पेट बड़े बड़े दांत देहसे दुर्गन्ध आती महाघिनावनी सूरत शनीचर कीसी सूरत कठोर बोल अनेक हतक पक्षी हाथमें लिये गलेमें मुर्दोंवली माला कफनके कपड़े ओढ़े पहिने दाहिने करसे नरोंकेकपाल बड़ा भयावना मुख लाठी हाथ कुत्ते साथ महाघोर-दर्शन आयकर यह बोला कि मैं तेरा गाहक हूं तूं शीघ्र अपना मोल कह थोड़ा या बहुत् जितने से तू अपनेको बेंचैगा॥

तब उसको वैसा क्रूर औ निठुर देख फिर शील रहित उसके बोल वचन सुन राजा हरिश्चन्द्रने पूछा कि तुम को हो उसने कहा कि मैं चाण्डाल हूं और इस उत्तम पुर काशीजीमें प्रवीर ऐसा प्रसिद्ध मेरा नाम है मुर्दों का मारनेवाला और उनके कफनके कपड़ोंका उतार लेनेहारा मैं बड़ा नामी हूं तब राजाने कहा कि हम चाण्डाल के सेवक तो न होसकेंगे जो लोक निन्दित औ परलोक का बाधक है वरन मुनिके कोपानल में भस्म होना भला है परन्तु जानबूझकर चाण्डालके वशमें तो न पड़ेंगे।

पक्षी बोले कि राजा उससे ऐसा कहरहे थे कि फिर विश्वामित्र आये और क्रोध आमर्षसें बड़े २ नेत्र काढे आगे ठाढ़े हो राजासे बोले कि यह चाण्डाल तुमको बहुत

धन देता है तो किस हेत तूं नहीं लेकर वह हमारी दक्षिणा देता है राजाने कहा हे भगवन् सूर्यवंशमें जन्म ले जानबूझकर धन की कामनासे मैं इस चाण्डाल का दास कैसे बनूंगा विश्वामित्र बोले कि जो तुम इस चाण्डाल के हाथ अपने को बेंचकर वह धन ले मेरी दक्षिणा अवधिके बीचमें न देउंगे तो मै निश्चय तुमको शाप दूंगा।

पक्षी बोले कि यह सुन हरिश्चन्द्र बडी चिन्तामें हो मुनिके पांव पकड अति विह्वल वचन बोले कि मै आपका भक्त औ दास हूं तिसपर भययुक्त औ दुःखी भी हूं सो आप मेरे पर प्रसन्न होंय चाण्डाल का सङ्ग बडा कष्ट है इस से वाकी जो आपका धन है तिसके बदले मै आपही का सेवक हो सब काम करूंगा तब विश्वामित्रने कहा कि जो तुम मेरे दास हो तो मैने तुमको इस चाण्डाल के हाथ एक अर्बुद धनपर वेंचडाला, पक्षी बोले कि जब विश्वामित्रने यह कहा तो वह चाण्डाल मन मे प्रसन्न हो एक अर्बुद धन ऋषिके हाथ दे बन्धुवियोग से व्याकुल राजाको बांध कर डण्डे मारता हुआ अपने घर लाया।

राजा हरिश्चन्द्र उस चाण्डालके भवनमें वास करते प्रातःकाल मध्यान औ सयङ्काल तीनो वेला यह कहा करते थे, कि वह बाला मेरी पत्नी अपने दीनमुख पुत्रको देखकर मेरा स्मरण करती होगी कि हम दोनो को राजा इस विपतसे फिर छुडावेंगे पर वह मृग नैनी यह नहीं जानती है कि मैने कैसा घोर पाप किया है देखो बन्धु वियोग राज्यका नाश स्त्रीपुत्रको विक्रय तिसपर चाण्डाल का दास होना यह कैसी [illegible] परम्परा चलीआती हैं

[illegible] दासी भई ग[illegible]

इस प्रकार पुत्र औ पतनीका नित सुमरन करतें उस चाण्डालके घर अकिञ्चन आतुर वेवश हो रहने लगे॥

कुछ काल बीते राजा हरिश्चन्द्रको उस चाण्डालने आज्ञा दी कि आजसे तुम स्मसानमे दिन रात रहा करो और जो मुर्दे आवें उनके कफन औ कर लेलिया करो उस करमे से छःभाग राजाके औ तीन भाग मेरे फिर दो भाग तुमारी चाकरीके हैं, यह उसकी आज्ञा पाय काशीकी दक्षिणओर जहां स्मसान था वहां,राजा आठपहर रहने लगे कि जिसमे स्त्रीपुरुष औ वारे वूढे दिन रात रोते पीटते और सैकडों सिआर औ सियारनी भरी रहती हैं और जलते हुये मुर्दोंका धुआं छायरहा फिर उनकी खोपडी जो फूटतीं हैं तिनकी दुर्गन्ध चहुं ओर उडर ही है, पिशाच, भूत, वैताल, डाकिनी, औ यक्ष, राक्षस जिसने मसानवासी सव भरे भये है।

और गीध गोमायुओंकी जमातें वैठी हैं कुत्तोंके झुंड घूम रहे हैं हाडोंके ढेरके ढेर लगरहे वडी दुर्गन्ध और दुःखका ठौर और अनेक मृतक जनोंके बन्धुवर्ग औ कुटुम्बी लोगोंके आरत नादसे हाहाकार मचरहा है कि हा माता पिता भाई भगनी पुत्र कलत्र स्वामी मित्र हमको छोड तुम कहां गये इस प्रकार कहकर रोते हुये मनुष्योंकी महा घोर अमङ्गल ध्वनि भरपूर रही हैं, और जलते भये मास और मेदाके फूहा उडरहे और अधजले काले मुर्दे दांत निकाले आगके वीच घाले मानौं हंस रहे हैं,जहांपर नर शरीरोंकी ऐसी दुर्दशा हो रही और जलते भये चितोंमें अग्निका चटचटाहट औ खोपडी चटक रही

आंखें कौडी सी छटक रहीं और केश हाडोंकी ढेरियों पर काले काकोंकी कतारें बैठी भई हैं॥

और मृतकमनुष्योंके बन्धुजनोंका रोदनशब्द मचरहा जो निर्दय नीच चाण्डालों के जीको आनन्द देनेवाला है और भूत वेताल पिशाचोंके उत्कट महाघोर गान कल्पान्तके समान हाहाकार उठ रहा है और जहांतहां महा महिष करीष यानै कण्डे और चितों की राखके ढेर ठौर २ लगे हैं फिर उलटे पुलटे दीपक औ अस्थि विकीर्ण नाना प्रेत समाजसे भरा वह श्मशान मसान नरक के समान भयको भी रावण भय प्रदान करनेवाला हैं।

हे महाराज राजा हरिश्चन्द्र उस मसान मे जायकर प्राप्त भये देखो एकतो स्त्री पुत्र औ राज्य के वियोगसे दुःखी दूसरे अपनी वह दशा देख यह शोच करते हैं, कि हाय हे विधाता वे मेरे सेवक औ मन्त्री तथा विप्रगण कहां गये और वह मेरी राज्य अब कहां गई और विश्वामित्र के दोषसे मन्दभाग्य मोहिं छोडकर स्त्री पुत्र भी चले गये इस प्रकार राजा मन मन मे चिन्ता करते हुये बार बार उस अपने स्वामी चण्डालके वचन स्मरण करतेभये फिर मलिन सर्वाङ्ग केशधारी धजा लगुड हाथ लिये इतस्ततो धावमान राजा कहने लगे कि इस मुर्देसे इतना और उससे जितना ..ग तिसमे से इतना मेरा और इतना राजाका और इतना चण्डाल का होता है।

इस प्रकार का काम करते औ मशानसे दिनरात धावते जीते जी राजा जनु दूसरी जोनिको प्राप्त भये और पुराने गंठीले खत्ते कटि औ शीसमे कं· ·कंथा पहिरे मुख उदर

हाथ पाँवमें मसान की राख लगी औ मांस मेदा मज्जामें अंगुली भरी लंबी सांस लेते मुर्दों की बचीभई खीर का आहार करते न दिन सोवें न रात और हां हूं शब्द बार२ बोलते राजाको बारह महीने सौवर्ष के समान बीते।

फिर एकदिन बन्धु वियोगसे व्याकुल परिश्रमसे थक कर मारेनींद के सोय गये तो श्मशान के प्रभाव औ दैवके बलसे यह अद्भुत स्वप्न देखने लगे कि मानो दूसरी देहसे गुरु दक्षिणा देकर बारहवर्ष के दुखसे उबरे, फिर देखा कि मानो आप चाण्डाली के गर्भमें प्राप्त भये तो चिन्ता करने लगे कि इहांसे मुक्त होंय तो दान धर्म करौं फिर जन्मले जब उसके बालक भये औ मसान का काम करने लगे सातवें वर्षमें एक मुर्दा निर्धनव्रतक ब्राह्मण को उसके बन्धु बान्धव मसानमें लाये तब वहां के नियमित मूल्य औ करके लिये उस शवके दाहको उसने बरज औ उन ब्राह्मणों को जो लाये थे अनादर किया।

तब ब्राह्मणोंने विश्वामित्रका चरित्र कहा जो पूर्व्व ही हरिश्चन्द्रके साथ भया था पर चाण्डालके बालकने तौभी न माना तब ब्राह्मणोंने शाप दिया कि हे अधम तू अभी घोर नरक को प्राप्त हो उनके इतना कहते ही राजाने सपने मे अपने को देखा कि फांसीलिये भयानक यमदूत आये और बांधकर बलसे यमपुरको लेचले यह देख राजा अति विकल मन हो कहने लगे कि हे माता पिता अब मेरा इहांसे उद्धार करो ऐसे ही कहते भये राजा को दूतोंने नरक मे लेजाकर तप्ततेल की कड़ाही में डाल दिया और यम कसाई छुरा धार छूरियोंसे फाड़ने लगे।

उस पीव शोणितभोजन अन्यतम नर्कमें सात वर्षको अपने को देखा कि जहां दिन २ पापी पचते औ दग्ध होते वहां आप भी पड़े हैं ऐसेही सौवर्षके समान सातवर्ष नर्कमें पचाय फिर दूतोंने पृथिवीपर गिरायदिया तो राजाने विष्टा वान्तभोगी कुत्तेकी योनि पाया फिर एक महीने में मरकर खर देह पाया।

ऐसेही हाथी, घोड़ा, वानर, वराह, छाग, विडाल, आदि पशुयोनि औ कङ्क, कुक्कुट, शुक, सारिका आदि पक्षी तथा मत्स्य, कूर्म, सर्प, कृमि आदि स्थावर, जङ्गम, नाना कुयोनियोंमें जन्मलेते मरते औ दुःख भोगते राजा को सौवर्ष पूरे भये फिर स्वप्नहीं में देखा कि निज कुलमें जन्म पाय अपनो राजपाट स्त्री पुत्र सब जुआमें हार आप अकेले हो शोक से वनको चलेगये तो वहां भी एक सिंह मुख पसारे इनके भक्षण करनेको दौड़ा चलाआता है, उसे देख राजा अपनी स्त्री पुत्र का शोच करने लगे कि इतने में सिंहने इन को पकड़ के चीर फाड़कर भक्षण कर लिया।

फिर देखा कि पुत्र समेत इनकी शैव्या नाम भार्य्या आई और कहने लगी कि हे हरिश्चन्द्र इस जुआके खेल से तुमारा क्या स्वार्थ है देखो तुमारी पुत्र समेत स्त्री तुमारे जीते जुये दूसरे जुआरी के हाथमें जाय पड़ी तो वह कितने शोचके योग भई है, राजाने फिर देखा कि आप स्वर्ग में हैं, और वहांसे देखते कि छूटे केश मलिन वेष वेवस्त्र शैव्या रानीको जुआरी खींचे लिये जाते हैं, और वह बार २ हाहाखाती कहतीहैं कि हे नाथ मेरी

नमम

रक्षा करो रक्षा करो, फिर देखा कि धर्मराज की आज्ञासे पुत्रको यमदूत आकाशमार्गमें लिये जाते औ रानी रोरो कर कहरही है कि राजन् इधर आवो।

तब राजा उस राजचिह्नयुक्त सुकुमार कुमार को देख चिन्ता को प्राप्त भये और कहने लगे कि यह बालक किसी राजकुलका है इसको यमदूत किस आशासे लायेहैं ऐसाही मेरा भी बालक अपनी माताकी गोदमें था, उस समय राजाके हृदयमें निज पुत्र कमलनैन रोहितका नाम आया कि वह भी वही अवस्था औ इसी रूपका क्या होगा जो यमके हाथसे बचा हो इतनेमें उस बालक की माता शैव्या विलाप करने लगी कि हे पुत्र किस पापका परिपाक यह महाफल है कि जो ऐसा घोर दुःख आनपड़ा जिसका अबलों अन्त नहीं है; हे नाथ इस दुःखसागर में हमें छोड आप कहां जाय सुचित हो बैठरहे हाय बड़े कष्ट की बात है कि राज्य का नाश औ बन्धु का वियोग फिर स्त्री औ पुत्र का बिकना तो विधाता ने राजा हरिश्चन्द्र का क्या क्या उपकार नहीं किया।

ऐसे वचन सुन अपने मृतकपुत्र औ पत्नी को पहिचान कर उस स्थानसे गिरपडे औ रोदनकर मूर्च्छित भये राजा की यह दशा देख रानी भी मूर्च्छाखाय गिरगई, फिर जब मूर्च्छा दूरभई तो राजा औ रानी दोनों विलाप करनेलगे फिर शोकसे पीडित राजा बोले कि हे पुत्र सुन्दर सुकुमार तुमारा मुख अब दीन देख मेरा हृदय विदीर्ण नहीं होता कि जो आपसे मेरे निकट आय पिता पिता कहते तुमको हम गलेसे लगाय पुत्र २ कहते थे तो अब

जिसको कहेंगे और धूरभरी घूसरी देह से आय स्नेह पूर्वक लिपट मेरे वस्त्र कौन मैले करेगा हाय इस कुत्सित पिता मैंने तुमको वस्तु के समान बेंच डाला हाय क्या विश्वामित्र ही के कहने से यमने तुमको ले लिया है।

राजा इसप्रकार विलाप कलाप कररहे थे कि इतने में यमदूत आय सर्पकी फांसीसे बांध राजाको भी यमपुर लेचले तो मार्गमें धर्मदेव ने आयकर कहा कि यह सब उत्पात विश्वामित्रही ने किया है पर तौभी राजाके मनमें अधर्ममूलक कोई विकार न प्रगटभया. ये सब दुर्दशा बारह वर्षमें राजाने स्वप्नके बीच भोगकीं जब बारह वर्ष बीतचुके तब यमके निकट इनको दूत लेगये और यमराज बोले कि यह महात्मा विश्वामित्र का तुमपर कोप है और विश्वामित्र तुमारे पुत्रकी भी मृत्युकरेंगे इतना कह यमराज ने हरिश्चन्द्र से कहा कि अब तुम मनुष्यलोक को गमन करो और बाकी दुख को भी भुगतो।

हे राजन् जब बारह वर्ष बीत चुकेंगे औ दुःखका अन्त आवेगा तब फिर तुमारा भला होगा और सुख सम्पत को देखोगे महाराज इतने में यमदूतोंने जो धक्का दिया तो राजा यमलोक से धरापर धड़ाक दे गिरे और निद्रा मूर्च्छा दोनों भी तुरत कहां की कहां गईं उस समय बड़ा कष्ट भया मानो जरेपै लोन लगा हो राजाने स्वप्नमें महा दुःख देखा जिसका अन्त नहीं है और स्वप्नमें जो बारहवर्ष बीते सो मसानके और २ चण्डालोंसे पूछा तो उन्होंने कहा कि यह क्या बकते हो अभीतो तुमको सोये दोघड़ी भई होंगी यह सुन राजा दुःखी भये औ देवतोंकी

...समें

श्मशान से कहा कि स्त्री औ पुत्र समेत मेरा कल्याण अब तुम्हारे हाथ है ब्रह्मा, विष्णु, महेश देवराज, धर्मराज, औ वृहस्पति को हमारी नमस्कार है।

इतना कह राजा फिर उसी चण्डालकर्म को करने लगा और सब भूल गया जटिल केश मलिन वेष कुचेल विह्वल लकुट हाथ इतस्ततो धावमान स्त्री पुत्र किसी की कुछ सुध नहीं यहां तक कि आप आपको भी भूल रहा है राज्यनाश से मनमारे राजाके मशानमे रहते एक दिन राजमहिषी कालेनागसे डसेभये मृतक बालक की लोथ लेकर रोती पीटती मशानमे आई सन्ताकुलप देह दूबरी धूरसे भरी छुटे केश मलिन वेश रोदन कर कहने लगी कि हे नाथ राजन आप अब कहां गये जो इस दशाको प्राप्त पुत्र को नहीं देखते पूर्व तो अहार विहार कर देखा है पर अब नाग डसे को क्यों नहीं देखते हो एहो ऐसे निठुर मन तुम किस हेतुसे भये हो।

इस प्रकार के विलाप कोसुन राजा कफनके लालचसे यहां तुर्त आया पर रोतीभई निजरानी को न चीन्हा और न रानीनें राजा ही को जाना, राजाने काले वस्त्रसे लपेटी उस सर्पदष्ट बालक की लोथ देखी कि राजलक्षणों से युक्त है वडी चिन्ता को प्राप्त भये और मनमें कहने लगे कि यह किसी वडे राजकुलका बालक है क्या जानिये किस विचार से इस को यमराजने लिया है और वह रोहिताश्व नाम मेरा पुत्र जो जीता है तो ऐसाही भया होगा।

राजा तो ऐसा सोच रहे थे कि रानी फिर विलाप

कर कहने लगी कि हे पुत्र किस पापसे यह महाघोर अपार दुःख आय प्राप्तभया कि जिसका पार नहीं देखो तो राज्यका नाश औ बन्धु का वियोग फिर पुत्रको विक्रय हे विधाता तुमने राजा हरिश्चन्द्रके साथ कौन अपकार नहीं किया है, इतने वचनके सुनते ही निज पत्नी औ पुत्रको जान राजा भूमिपर गिरपडे औ कहने लगे कि हाय यही शैव्या रानि औ रोहिताश्व हैं इतना कह महा दुःख औ सन्ताप करसे रोते राजाको मूर्च्छा आई यह देख रानी भी मूर्च्छा खाय धरनीपर तुर्त गिरपडी।

जब मूर्च्छा गई तो राजा रानी दोनो एकसाथ विलाप कलाप करने लगे कि हे पुत्र तुम्हारा सुन्दर सुकुमार मुख चन्द्र दुःख दीनदशा को प्राप्त देख यह वज्रसे भी अधिक कठोर मेरा हृदय नहीं विदीर्ण होता और तुम तात२ कर आपसे आप मेरेनिकट आगमन करते थे तो अबसे किसको गलेसे लगाय प्रीतिपूर्वक वत्स२ कहि गोदमें बैठा-ऊंगा और किसकी धूरिधूसर देह से मेरे वसन मलिन होंगे हाय दीपक से दीपके तुल्य निज शरीर से प्रगट तुमको मैं कुत्सित पिताने वस्तुके समान बेंचा है दैवने प्रथम मेरी राज्य हरली फिर वही निर्दय दैवने सर्परूप हो मेरे पुत्रको भी डसा हाय मन्द भाग्य मैं मृतक पुत्रका मुख देख दुःख रूप घोर विषसे अब अन्धा भया हूं, इतना कह उस पुत्रको लोय को गोदमें ले राजा मूर्च्छित भये और रानीने भी इनकी बोल चाल पहचानकर मनमें कहने लगी कि येतो वही पुरुषसिंह मेरे स्वामी बोल औ स्वरसे मालुम होते हैं, तो होनहो विद्वानजनों के हृदय[illegible]

ये राजा हरिश्चन्द्रही हैं इसमे कुछ संशय नहीं है देखो ऊंची नासिका औ शुक तुण्डके तुल्य अग्रभाग नीचे को नम्र गम्भीर नाभिकुण्ड औ कुन्दकलीसी दांत पांत विख्यातकीर्त्ति महात्मा राजा इस मसानमें किस प्रकार से आये हैं रानी पुत्र शोक मूल भूमिमें पतित पतिको बडी वार लों एकटक देखरही फिर भर्त्ता औ पुत्रकी वह दशा देख बडी व्यथासे पीडित निजपति का चण्डालके योग्य निन्दित कर्मदण्ड लेखि मूर्च्छाको प्राप्त भई।

फिर कुछ वेरमें सचेत हो धीरे से गदगद कण्ठ करुणा वचन बोली कि हे वेमर्जाद देव तुमको धिक्कार है कि जिस तूने देव के तुल्य महाराज को इस चण्डाल भाव को प्राप्त किया, हे अधर्मी दैव राज्यनाश सुहृदका त्याग साध्वी तनय का विक्रय करायकर भी तेरा मन सन्तुष्ट न भया फिर भी राजाको चण्डाल बनायकर छोडा, हाय हे राजन् इस प्रकार सन्ताप से भरी हमैं धरणी से उठाय पर्य्यङ्कपर बैठने को क्यो नहीं कहते हो और मै अब तुमारे छत्र चमर गडुआ व्यजन आदि राजचिह्न एक नहीं देखती हूं यह क्या विधाताने उलटा किया है कि पूर्व्वतो जिसके गमन समैमें आगे राजोंके झुण्ड निज वस्त्रोंसे धूर झारते जाते थे अब सोई राजा स्मशानमे जहां टूटे फूटे घट औ घटी अधजले नरोंके कपाल पडे हैं, और जहां तहां शवनिर्माल्य से दारुण औ मेदा बहकर पृथिवीपर लूखके साढ़ीसी जमरही है, और भस्म कोयले अधजले [illegible]नेंके ढेर लगे हैं औ गीध गोमायुके नादसे युक्त चील्ह

हाथजोड़ हृदयवासी वासुदेव भड़रायरहे हैं और पितोंके चाहा कि चिंतापर शोक धूमरा हो रहा है, और मुर्दके इन्द्रसमेत के आस्वादन औ खाने से तृप्ति औ आनन्द को प्राप्त राक्षस बैतालादि निशाचर जीव घूमरहे हैं तिस भयावन देखो भावन अभावन मशानमें दुःखसे पीड़ित राजा भी घूमरहे हैं।

इतना कह फिर राजाके कण्ठमे लगकर शोक से भरी उस घरी रानी आरत बानी से विलापकर यह वचन बोली कि हे राजन् यह स्वप्न है कि सत्य जो आप जानते हौ सो कहो क्योंकि मेरा मन महामोह मे मग्न होता है और हे धर्मज्ञ जो धर्म कर्म में किसी देव की सहायता नहीं है तो ब्राह्मण देवादिका पूजन औ प्रजाके पालनमे कुछ भी धर्म नहीं है कि जिस से तुम ऐसे धर्मपरायण राजा अपनी राज्यसे भ्रष्ट हो इस दशा को प्राप्त भये।

यह सुन राजा ने ऊर्ध्वश्वास ले गद्गद वचनसे अपनी चण्डालता के प्राप्ति का कारण सब रानी को कह सुनाया फिर रानी ने भी अपनी विपत औ पुत्रके मरण का सकल वृत्तान्त यथावत कहा तब राजा बोले कि हे प्रिये दीर्घ काललों क्लेश नहीं सहा जाता है देखो मेरी मन्द भाग्य को कि जो चण्डाल स्वामी की आज्ञा के बिना अनलमें प्रवेश करें तो दूसरे जन्ममे फिर भी चण्डाल का दास होना परैगा और नरक में जाय कृमि भोजन मूत्रपान औ रुधिर पीब से पिच्छिल वैतरणी का उतरना औ असिपत्र वनमे जाय शरीर का छिन्नभिन्न होना यह सब भोगना परैगा और रौरव महारौरव मे तपने जायगे परन्तु इस

दुखके समुद्रमे मग्नहोते हुये ह संशय नहीं है उपाव एक प्राण वियोग छोड़ दूसरा नहीं अब

देखो एक यह बालक जो मेरे वंश करीर का था सोभी मेरी दुर्भाग्य रूप करिणी ने समूल उखेड है परन्तु पराधीन मै इस दुर्गति के बीच मे कैसे प्राण परित्याग करूं अथवा बडे दुखमे मनुष्य पुण्य पाप नहीं देखता है और न वह दुख नाना नर्कमे न असिपत्र वनमे न वैतरणी के तरने मे है तो तिर्य्यग्योनिमे कहां है जो पुत्रके नाशहोनें मे है इस से मै अब पुत्र शरीरके साथ चिताके अनलमें भस्म होता हूं, हे रानी तुम मेरी अपराध को क्षमा करना और मेरी आज्ञासे तुम अब विप्र देव के भवन को गमन करो और आं... सावा दूसरे किसी प्रकार से उस विप्रदेव का अनादर कभी मत करना और अपने इष्टदेव औ स्वामी के समान जान सर्व प्रकार से उन को सन्तुष्ट रखना और मेरी एक बात कान देकर सुनो कि जो दान, होम, गुरु, विप्र की सेवा किया है तो पुत्र समेत तुमारे साथ फिर मेरा सङ्ग होगा और यद्यपि पुत्रका ढूंढना हमको तुमारे साथ उचित था पर इस लोकमे अब हमारा किया कहां होता है और हे प्रिये जो मैने एकान्तमे हंसी से कुछ अनुचित उचित कहा हो सो सब क्षमा करना, तब रानी बोली कि हे नाथ मैभी यह दुख न सहि सकूंगी इस लिये आपके साथ इस चिता के हुताशन मे प्रवेश करूंगी।

पक्षी बोले कि महाराज फिरतो राजा हरिश्चन्द्रने चिता बनाय उसपर पुत्र की लोथ को धरकर स्त्रीसमेत ... देर लगा हैं ...

हाथजोड़ हृदयवासी वासुदेव परमेश्वर का ध्यान धरकर चाहा कि चितापर बैठें कि इतने मे धर्मको आगेकर इन्द्रसमेत सकल देवता आनपहुंचे और बोले कि हे राजन् धर्म की जय है अब आप ऐसा साहस न करो देखो ये साक्षात् पितामह और ये धर्म भगवान आपके सन्मुख खडे हैं और साध्यगण मरुत विश्वेदेवा लोकपाल सिद्ध गन्धर्व किन्नर अश्वनीकुमार औ रुद्र भगवान आप आये हैं, और जिस विश्वामित्रके साथ मैत्री करनेको विश्वमे कोई समर्थ न भया सोई विश्वामित्र अब आपके साथ मित्रता करने की वडी इच्छाकर नारदादि देव ऋषि ब्रह्मऋषि औ बहुतेरे मुनिजनों के साथ जिनका दर्शन दुर्लभ है इहां आयकर उपस्थित भये हैं।

इतनेमें इन्द्र धर्म औ विश्वामित्र राजाके निकट आय कर प्रथम धर्म बोले कि हे राजन सहसा न करो हम धर्म हैं तितिक्षा दम औ सत्य आदि तुमारे गुणोंसे प्रसन्न औ सन्तुष्ट हो तुमको प्राप्तभये हैं, फिर इन्द्र बोले कि हे महाभाग हरिश्चन्द्र इन्द्र नाम हम तुमारे निकट आये हैं, स्त्री औ पुत्र समेत तुम ने सनातन लोक को जय किया अब पत्नी पुत्र सहित विमानपर चढ़ कर स्वर्गलोक को चलो जो स्वर्ग अन्य मनुष्यों को अलभ्य है सो आपने अपने सुकृत औ शुभ कर्मोंसे प्राप्त किया है।

पक्षी बोले कि फिर इन्द्रने आकाश से अपमृत्यु विनाश करनेवाले अमृत को मशानमे वरसाया और देवता गगन से दुन्दुभी वजाय फूल की वर्षा करने लगे, और देव समाज अन्तरिक्ष से विराजमान होरही है कि उसी

समय राजकुमार प्रसन्नमुख औ मन उठखड़ा भया तो राजा निज पुत्रको कण्ठ से लगाय रानी समेत दिव्यवस्त्र आभूषणों से भूषित पुष्पमाल्य को धारण कियेभये उस काल श्रीमान मूर्त्ति परम आनन्द को प्राप्त भये।

महाराज उस समै राजा हरिश्चन्द्र से इन्द्रने पुनर्वार कहा कि राजन स्त्री पुत्र सहित आप परमगति को प्राप्त भये अब अपने सत्कर्म से इस विमानपर चढ़िये, तब हरिश्चन्द्र बोले कि हे देवराज अपने स्वामी चण्डाल की आज्ञा के विना और उन से विन उद्धार भये मैं देवलोक जाने के हेत इस विमानपर नहीं चढ़सकता हूं, तब धर्म बोले कि राजन् यह जो तुम ने भावीवश भारी क्लेश सहा सो मैने तुमारी परीक्षा लेनेके हेत तुमको देखाया है, फिर इन्द्र बोले कि राजन भूलोक के मनुष्य जिस परम उत्तम स्थान में प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं उस पुण्य जनोंके लोकको अब तुम सुखपूर्व्वक चलो।

तब इन्द्रके प्रति हरिश्चन्द्र बोले कि हे देवराज आप को प्रणाम है, और यह मेरी बात श्रवण करिये कि मेरे वियोग से शोकके सागरमें मग्न कोशलपुर के वासी प्रजागण को छोडकर हम अकेले स्वर्गको कैसे गमन करेंगे देखो ब्रह्महत्या गुरुघात गोबध स्त्री बाल बध के तुल्य पाप निज भक्तजन के त्यागमे भी कहा है, फिर भजतेभये भक्तके त्यागकरनेवाले को न इहां सुख और न परलोकमे भी देखते हैं, इससे अब आप निजस्थान को प्रस्थान करिये और जो वे [सबकेसब मेरेसाथ स्वर्ग को चलसकैं तो हे सुरनाथ मैं चलने को तयार हूं और नहीं तो उन

प्रजोंके साथ नरक भोग करना ही मेरे जान भला है।

यह सुन इन्द्र बोले हे राजन उन सब जनोंके अनेक पुण्य पाप भिन्नभिन्न हैं तो तुम उन के संवात साथ स्वर्ग भोग किस प्रकार कर सकोगे, हरिश्चन्द्रने कहा हे नाथ कुटुम्बीजन औ प्रजागण के प्रभाव से राजा राजभोग करता है और बापी कूप तडाग आदि सत्कर्म औ नाना प्रकार यज्ञ युद्ध भी उन की सहायता से होते हैं, और मैने भी वह सब उन्हींके प्रताप से किया है तो फिर स्वर्गके लालच से उन उपकारी जनोंको कैसे छोड सकूंगा तिससे जो कुछ पुण्य दान जप तप मेरा है और वह मेरे अकेलेके लिये बहुत दिनोंके भोग करने योग है पर आपके प्रसादसे जो उन प्रजोंके साथ उससे एक दिन का भी भोग होसके सो कृपाकर करिये तो मेरे ऊपर आपका परम अनुग्रह है नहीं तो वह मेरे काम का नहीं।

तब इन्द्रने कहा कि अच्छा ऐसही करेंगे इतना कह प्रसन्न मन राजा इन्द्र औ धर्मराज तथा विश्वामित्र हित चितसे कोटिन विमान मंगाय जाय अयोध्यावासी जनोंसे कहा कि तुम सब इन विमानोंपर चढ़ो और राजा हरिश्चन्द्रके साथ स्वर्गको चलो, फिर विश्वामित्र बडी प्रीति से राजपुत्र रोहिताश्व को अयोध्यामे लायकर देव मुनि समेत राज्यतिलक कर के राजगद्दीपर बैठायदिया और आप हृष्टपुष्ट स्त्री पुत्र सुहृदजन भृत्यवर्ग प्रजागण समेत राजा हरिश्चन्द्रके साथ विमानपर चढ स्वर्गलोक को चले और एक एक पगपर लोग विमान से विमानपर आते जाते हैं महाराज उस काल अतुल विभव विभूति को प्राप्त राजा

हरिश्चन्द्र मानो एकवा युक्त इन्द्रपुरके बीच आनन्द से विराजमान हैं और उस समै की ऋद्धिसिद्धि देख दैत्योंके आचार्य्य शुक्राचार्य्य ने यह कहा कि देखो हरिश्चन्द्र के समान प्रतापी इस पृथिवीपर दूसरा कोई राजा न भया न है और न फिर होयगा ।

यह शुभसंवाद जो दुःख से पीडित नर सुनैंगे उनका दुख दूर हो सुखको पावेंगे और स्वर्गार्थी स्वर्ग पुत्रार्थी पुत्र भार्य्यार्थीभार्य्या राज्यार्थी राज्य लाभकरेंगे, देखो कैसा अद्भुत महात्म धीरजधर क्लेशसहने का है और कैसा दान का फल है कि जिसके बल से राजा हरिश्चन्द्र इन्द्रपुरमें जाय इन्द्रपदवी को प्राप्तभये है, पक्षी बोले कि हे जैमिने यह सब हरिश्चन्द्र का वृत्तान्त तो मैने तुमको कह सुनाया अब जो वाकी कथा रहगई सो सुनिये कि पृथिवीके नाशका कारण जो राजसूय यज्ञ का फल है तिसके निमित्त आडी औ वकपक्षी का रूपधर विश्वामित्र औ वशिष्ट का जो महा युद्ध भया था । इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे हरिश्चन्द्रोपाख्याने-ऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

९ अध्याय ।

पक्षी बोले कि विश्वामित्र के दुराचार से राज्यभ्रष्ट हो नाना दुखपाय पीछे राजा हरिश्चन्द्र जब देवलोक को गये तब राजपुरोहित मुनि वशिष्टजी जो गङ्गामे डूबीलार बारह वर्ष की तपस्या कररहे थे सो उतने दिन पूरेहोनेपर जल-वास से वाहर निकले और उस वीचमे जो दुर्दशा हरिश्चन्द्र को विश्वामित्रने की थी सो सब सुना कि उदारकर्मा राजा हरिश्चन्द्र को विश्वामित्रने स्त्री पुत्र समेत विक्रयकर नाना दुखनाय म चलने को

यातना दीं यहांलों कि चण्डाल का दास औ चण्डाल से भी अधिक वनायकर तव छोड़ा ।

महाराज वशिष्ठमुनि राजा हरिश्चन्द्रसे वडी प्रीति रखते थे इस हेत विश्वामित्र के ऊपर वडा क्रोध किया और कहने लगे कि देखो जब विश्वामित्रने मेरे एकसौ पुत्र मारे तव मेरे इतना क्रोध नहीं आया कि जैसा इस अन्याय को सुनकर भया है, देखो देव ब्राह्मण पूजक इस धर्मात्मा राजाको राज्यसे भ्रष्टकिया यह कितनी वडी अपराध है कि ऐसे सत्यवादी शान्त सुशील जो शत्रुके साथ भी गतमत्सर निरपराध मेरे आश्रित महात्मा राजा को स्त्री पुत्र भृत्य समेत इस दुष्ट विश्वामित्रने जो अन्तदशा को प्राप्त किया सो तो वडी हानि किया है इससे यह दुरात्मा ब्रह्मद्रोही राजद्रोही औ साधुद्रोही विश्वामित्र मेरी शापसे हततेज हो वकयोनिको प्राप्त होय ।

पक्षी वोले कि जैमिने इस प्रकार वशिष्टसे निज शाप को सुन विश्वामित्र ने भी वशिष्टको प्रतिशाप दिया कि तुम भी मेरी शापसे आडियोनि को प्राप्तहोउ, महाराज वशिष्ट विश्वामित्र अन्योन्य शाप से दोनो तिर्यक्योनि को प्राप्त भये पर तौ भी क्रोध के मारे वडे बल औ पराक्रम से परस्पर महाघोर युद्ध करने लगे, प्रमाणमे दोहजाहार योजन के ऊंचे आडीरूप वशिष्ठ भये और नव्वे अधिक तीन हजार योजन के ऊंचे वकरूप विश्वामित्र भये और दोनो वली परस्पर पंखोंके प्रहार करनेसे भूमितलवासी जीव जन्तु प्रजा जनोंको वडी भारी भयानक भय प्रदान करने लगे और अपने२ पंख फर्फराय वडे२ लाल२ नेत्र वाहर निकाल

कालके समान चरण चोंच औ पक्षोंसे एक दूसरे को मार२ प्रलयकाल मचावदिया फिर तो वज्राघात के समान उन दोनो के आघात औ पक्षवात से बडे२ पर्व्वत उखड पुखड उड उड कर जहां तहां पृथिवीपर गिरने लगे।

महाराज तब तो पर्व्वतपात कें आघात से धरा लगी डगमगाने औ समुद्रका जल उछलने धरती एक ओर बोझ-प्राय नौकाके समान नीचे को झुंक चली कि मानो पाताल गमन करने को उन्मुख भई है और कितने प्राणी पर्व्वतोंके पातसे औ कितने सिन्धुके जलकी छलकसे बङ्गुतेरे भूमिके हलचल से नाशहोने लगे, महाराज उस काल हाहा-कार मच गया और डरके मारे सम्पूर्ण जगत व्याकुल औ अचेत होगया सकल भूमण्डल अस्तव्यस्त भौ जहां तहां मनुष्य रोते पीटते चिल्लाते हैं, कि हे पुत्र हे पति इहां आबा हम इहां है देखो२ भागो२ यह पर्वत आया अब गिरता तब गिरता है जब इस प्रकारसे लोक व्याकुल भया तब देवतोंको साथ ले पितामह ब्रह्मा तहां आये और उन दोनो क्रोध भरे पक्षियोंसे बोले कि हे पुत्र तुम दोनो अब युद्ध बन्द करो औ सावधान होउ परन्तु ब्रह्मा के वचन सुनकर भी वे दोनो पक्षी क्रोध आमर्षसे भरे भये ब्रह्मा कि बात न सुन परस्पर युद्ध करते ही रहे।

तब ब्रह्माजीने देखा कि इनके युद्ध करनेमे लोक की क्षय होती है इस हेतसे उन दोनोपर हितकर तिर्यगभाव हर लिया तब दोनो पूर्व शरीर को प्राप्तभये और तामसभाव दूरभया फिर प्रजापति ब्रह्मा बोले कि हे पुत्र वशिष्ठ हे [illegible]नसत्तम विश्वामित्र तुम जिस तमो गुणके वशहो इस सुरनाथ [illegible] [illegible]लने [illegible]

युद्ध से प्रवृत्त भये हो अब उसको त्यागकरो राजा हरिश्चन्द्र को राजसूय का फल भया है, और तुमारा यह वृथा विरोध पृथिवी को क्षय करनेवाला है, कौशिकने राजा के साथ कुछ अपराध नहीं किया वरन बड़ो उपकार है कि जिससे राजा को प्रजा समेत स्वर्ग प्राप्त भया है और तपस्या मे विघ्न करनेवाले काम क्रोध को त्यागकरो तुमारा कल्याण होय यह ब्रह्मतेज बड़ा भारी बल है।

जब ब्रह्माने ऐसे कहा तब दोनो लज्जित हो परस्पर गले से मिलजुलके अपनी२ अपराध को क्षमा कराया फिर ब्रह्मा निज लोक को गये और वशिष्ठ विश्वामित्र दोनो ने अपने२ स्थान को प्रस्थान किया, हे जैमिने यह आड़ि औ बक का युद्ध तथा हरिश्चन्द्र की कथा जो मनुष्य यथाशक्ति कहते सुनते हैं उनके सकल पाप दूर होते और विघ्नों से बाधा कभी नहीं होती है, इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे आडि बक युद्धो नाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥

१० अध्याय।

जैमिनि बोले कि हे द्विजशार्दूल अब कृपाकर यह कहिये कि प्राणियों का जन्म औ नाश किस प्रकार से होता है और किस प्रकार बीज से उपज कर माता के गर्भ से वासकर बढ़ता है फिर माता के जठर से वाहर हो किस रीत से बढ़ता और वाहिर आते ही अज्ञान किस हेतुसे होता है, और किस प्रकार प्राणीमात्र मृत्युको प्राप्त हो अपने पुण्य पाप का फलभोग करते और उनके शुभ

अशुभ कर्म उन को सत असत फल देते हैं और जब पिण्ड रूप माता के उदर मे रहता है तब क्यों नहीं परिपाक होकर पचजाता है कि जहां बड़ी बड़ी गुरुपाक वस्तु भी गलजाती हैं तहां अति सुकुमार अल्प जन्तु क्यों नहीं जीर्ण होता है यह बड़े सन्देह की बात है और इस विषयमे सकल जीव मोह को प्राप्त होते हैं॥

तब पक्षी बोले कि यह प्रश्न तो भारी है पर हे जैमिने श्रवण करो कि जैसे सुमति नाम पुत्रने अपने पिताके प्रति कहा है कि कोई भृगुवंशी ब्राह्मण ने अपने जड़ रूप सुमति नाम पुत्र का उपनयन करके यह कहा कि हे पुत्र तुम वेद पढ़ो और गुरु की सेवा करो भिक्षान्न से भोजन कर ब्रह्मचर्य्यव्रत का निर्वाह करो पीछे फिर गृहस्थाश्रम मे आय विवाह करके यज्ञ पञ्चयज्ञ आदि उत्तम कर्म करो। जब तुमारे भी पुत्र उत्पन्न होचुके तब स्त्री समेत वन मे जाय वानप्रस्थ होउ, फिर कुछ दिन पीछे परिव्राजक धर्म का आलम्बन करो इस प्रकार से उस ब्रह्मपद को प्राप्त होउगे कि जहां शोक मोह औ आवा गमन नहीं है।

हे महाराज इस प्रकार पिताने अनेकवार बहुतेरा कहा औ समझाया परन्तु उस पुत्र के जीमे एक भी उपदेश न आया और न कुछ उत्तर दिया तौ भी उसके पिता प्रीति औ पुत्र स्नेहसे वार वार कहते ही रहे, तब एक दिन वह पुत्र हंसकर बोला कि हे तात जो आप उपदेश करते हैं यह मैने बहुतवार अभ्यास किया और नाना प्रकार की शिल्प विद्या औ शास्त्र सिखे पढ़े और दशहजार से कुछ अधिक जन्मों का स्मरण हमको बना है

और हानि लाभ लोभ सन्तोष उदय विभव अपचय क्षय
मनु मित्र कलत्र पुत्रों का संयोग वियोग अनेकबार देखा
फिर विविध प्रकार के माता पिता भाई बन्धु देखे और
अनगिनत सुख औ दुःख भी भोगे हैं और विष्टा मूल
क्लिन्ने मरे भये स्त्रीयों के उदरमे बहुते रीबार वास
भी किया और नानारोगों की पीड़ा जो बालपन यौवन औ
बुढ़ापे मे पावा सो सब अबतक हमारे ध्यान मे ज्योंकीत्यों
वर्त्तमान हैं और ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र योनि मे तथा
पशु, पक्षी, कीट, पतङ्ग, राजवंश आदि नीच ऊंच योनि
मे जन्म ग्रहण करते औ दुख सुख भोगते सब स्राव आपके
घरमे जन्मे हैं, और अनेकबार धनी दरिद्र स्वामी औ
सेवक भी भये ... नें दे... को मारा और उनसे हम भी
मारे गये, फिर दा... ान दिया और अकिंचन हो, ऊर्द्ध
दान लिया भी फि... पिता, कन्या, पुत्र, कलत्र,
भ्राता आदि के अर्थ ... ...य नाना व्यापार कर
धन लाय परम सन्तुष्ट भये और ... ...य रोय
पीठ हायमीज कर भी बैठे हैं।

इस प्रकार संसार चक्र संकट मे भ्रमण कर..
तात मैंने यह मोक्ष का साधन ज्ञान पाया है कि जिसके
होने से ऋक यजुर साम वेदका इष्टा क्रिया कलाप सब
हम को भला नहीं लगता है, और अब हमको बोध प्रगट
भया तो वेदसे क्या प्रयोजन है तो अब हम उस ब्रह्मपद
को प्राप्त होंयगे जिसमे ज्ञानसे सन्तुष्ट चेष्टारहित सुख दुख
वर्जित इष्टाक्रिया कलाप से शून्य होकर प्राणी रहता है
और कार्य हर्ष भय, उद्वेग, क्रोध, लोभ मोह, मद, मत्सर
... ...ग ... ...

जरा, मरण, से आतुर हो मैने अपने आत्मारूप मृग को फांस ने वाली सैकरों दुख सुख से भरी इस कर्म काण्ड जाल परम्परा को छोड दिया है, देखो इस वेदत्रयी में जिसको धर्म कहा है सो अधर्म से भरा पाप फलके समान है।

पक्षी बोले हे जैमिने इस प्रकार पुत्रके वचन सुन अति प्रसन्न मन्न पिता बोला कि हे पुत्र यह तुम क्या कहते हो और ऐसा ज्ञान तुमारे कहां से आया और किस कारणसे पूर्व हीं तुमारे जडता रही और अब ज्ञान भया है क्या किसी मुनि ऋषि वा देवताने तुमको शाप दिया था कि जिससे तुमारा ज्ञान गुप्त रहा सो अब प्रगट भया है, तब पुत्र बोला कि हे तात जो [illegible] है तो सुख दुख देने वाला मेरा वृत्तान्त श्रवण करें पीछे फिर गृह इस जन्म के पूर्व जन्मसे बीता है हे तात [illegible] आदि उत्तम कर्म [illegible], और आत्मविद्या के विचार मे श्रेष्ठ [illegible] तत्पर औ योग युक्त सदा योग ही [illegible] रहती थी फिर पीछे आचार्य भये और [illegible] शिष्यसेवक श्रोता जनों की सन्देह को दूर करने [illegible], तिस पीछे भावी वश अज्ञान ने ज्ञान को घेर लिया और भूलसे फिर गर्भवास की विपदमें जाय पडे परन्तु गर्भके बाहिर होनेके समय से लेकर एक वर्ष पर्यन्त सब जन्मों की सुरति पूर्व संस्कारसे बनी रही इस कारणसे हे तात हम इन्द्रीजित भये और अब ऐसी यत्न करेंगे कि जिस से पुनर्जन्म को न प्राप्त होंय और यह तो ज्ञान के दान करने का फल है कि जो पूर्व जन्म औ जातिका स्मरण बना रहा और यह बात वेद धर्मके अनुसार चलनेवाले पुरुषों को नहीं प्राप्त होती है इस हेत पर्व आश्रमहीं से [illegible]निसत्तम विस्मावित तुम।

मै ने निष्ठा धर्मको ग्रहण किया है और एकान्तित्व को प्राप्त हो अपने मुक्त होने की यतन करूंगा।

हे तात अब आप अपने मन की सन्देह कहिये कि जिस को समझाय औ प्रसन्न हो हम आपसे उऋण होंय, तब पिता बोला कि हे पुत्र संसारग्रहण के मूल की वार्त्ता कहो पुत्रने कहा हे तात श्रवण करो कि यह संसार चक्र ...य चक्रके समान सदा घूमता रहता कभी भी थिर नहीं होता है, मैने अनेकवार जनमते मरते इसका अनुभव अच्छी तरह से किया है इससे अब आप की अज्ञानुसार प्राणी की मृत्युसे लेकर गर्भवास औ पुनर्जन्म तक जैसा मै कहतो हूं ऐसा दूसरा कोई न कह सकेगा, हे तात अन्तकाल होने के समै बडी तीव्र वायुसे कोपित हो विना इन्धन की जठराग्नि प्रज्वलित होती और मर्मस्थानों को तोड फोड भिन्नकर देती है फिर उदान नाम वायु ऊर्द्ध्व गमन करतीभई खाने पीने की कोई वस्तु गलेके नीचे नहीं उतरने देती उस समय प्राणी को संकट औ क्लेश जो होता सो वही जानता है कि मारे पीडा और दुखके अकी वकी भूल जाती मुखसे राम का नाम भी नहीं निकलता परन्तु हे तात जिसने शुद्धमन औ श्रद्धापूर्वक अन्नपान का दान दिया है वह उस समय भी विना भोजन सन्तुष्ट औ आनन्द से अपनी शरीर छोड देता है, और जिसने किसी की प्रीतिमे बाधा नहीं डाला और न आप किसी से प्रीति को तोडा और आस्तिक धर्मसे सदा श्रद्धायुक्त बनारहा वह भी सुखपूर्वक मृत्यु को प्राप्त होता है, और जो देव ब्राह्मण की पूजासे निरत विषयसे विरत परनिन्दा से र...

सबके हित शीलमान दातापुरुष हैं, तिन की सुखपूर्वक मृत्यु होती है, और जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, तथा द्वेषसे भी निज धर्मको नहीं त्याग करते और जितना कहते वह अवश्य करते ऐसे सत्यवादी जन भी सुख से मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

और जो पिपासा से आतुर को जल औ क्षुधा पीड़ित को अन्न सामर्थ्य रहते नहीं देते हैं, ते नीरस नर्क्या मरण समय महा दारुण दाहको प्राप्त पानी पानी करतेना औ भूखसे मरते अनेक दिन हाथ पटक औ पांवरगर घट को लगकर अपनी इस निकंमी देह को जो कभी किसीके कामके नहीं आई छोड़ते हैं, और ईन्धन देने वाले को शीत नहीं लगता चन्दन देनेवाले को ताप नहीं उठती और जो किसी को उद्वेग या दुख नहीं देते उन को प्राण नाश के समै वेदना नहीं होती और मोह तथा अज्ञान के उपदेश देनेवाले अन्त समै भारी भय को प्राप्त होते हैं, और अधम प्राणी जिनसे किसी को कभी कुछ सुख नहीं भया औ कुटुम्बके दुखदाई जनमभर बने रहे वे बड़ी भारी वेदना से पीड़ित होकर मरते हैं, और कपट साखी मिथ्यावादी कुकर्मी कुमार्ग के उपदेश देनेवाले बड़े जन औ महात्मा पुरुषों के निन्दाकरनेवाले जन बड़े मोह मूर्च्छा से विकल विष्ठा मूत्र मे लोटपोट जीते ही जी नरक भोग करते हुये मरते हैं।

हे तात ऐसे दुष्ट प्राणीयों के लेनेको यमदूत बड़े बड़े भयानक रूप धारण करके आते हैं कि पापी नारकी नर उन को देख थर थर कंपते औ माता, पिता, भ्राता, पुत्र पुरुषों को नहा प्राप्त हो... हैं।

को एकवर्ण वाणी से पुकार मचाने लगते हैं फिर डरके मारे बिलबिलाकर कांपते आंखें घूमने लगते बडे जोर शोर से उर्द्धस्वांस चलने लगती कि जिससे जीभ सुखकर कणठा होजाती और नेत्र पथराय अन्धे होजाते कान वहिरे वडी वेदना औ कष्टसे छटपटाय२ उन की देह छूटती है, फिर शरीर छूटनेके पीछे उन का सूक्ष्म जीव जो वायुके आगे गमन करता है, उसके कर्मानुसार वनीभई यातना शरीर यातना के अर्थ प्राप्त होती हैं, वह यातना देह पूर्व शरीर के अंग रंग रूप अवस्था उंचाई स्थूलता मे ठीक समान होती है, हे तात जब जीवने यातना देहमे प्रवेश किया तब निर्दय यमदूत उसके गलेमे नागफांस लगाय और हाथ बांध पीछे से दण्डप्रहार करतेभये दक्षिन दिशा को घसीटते हुये ले चलते हैं।

फिर जिस मार्गमे ले जाते, वह कुश कांटे कील कंकर से भरी बड़ी कर्कश है और कहीं२ सैकडों गड्ढे जिन मे आग जलरही है कहीं सूर्य्यके तेजसे संतप्त भूमिसे मूंमुर मनो भड भुंजे के भाड की बालू है तिसके वीच नंगे पांवों घसीटकर लेजाते सबै उनके पांव भुलभुलाय के भुट्टे हो जाते हैं, तिसपर वे यमदूत धमकाते धक्केदेते मारते पीटते भयदेखाते हैं, कहीं सैकड़ों शृगाल औ लोह की चोंच वाले पक्षी फाड फाड खाते हैं ऐसी दारुण दुखदाई राहसे वडा कष्टकर यमपुर को पहुंचते हैं और अन्नवस्त्र छत्र उपानत के दान करनेवाले मनुष्य उसीमार्गमे सुखसे जाते हैं, इस प्रकार निजपाप से पीडित नर नाना क्लेश सहतेभये वारह दिनमे धर्मराज की संयमनीनाम पुरी को पहुंचतेहैं

और अपने कर्म विपाक से प्राप्त उस दूसरो यातना शरीर मे पीडा तो अधिक होती परन्तु प्राण नहीं निकलते इससे अग्नि दग्ध देहसे बडी दाह होती फिर ताडन छेदन करते हुये दूतों के शीत जलसे डुवानेसे बडी पीडा औ दारुण दुख पाते हैं ।

हे तात उस समय बन्धु जन तिलाञ्जली औ पिण्डदान जो करते हैं वही जायकर उस प्राणी को प्राप्त होता और वह भोजन पान करता है और बन्धु जन जो तेल उपटन लगाते औ खाते पीते सोभी उसको मिलता है और भूमिमे शैन करनेवाले मनुष्योंके ब्हलप्राणियोंको क्लेश नहीं होता औ दानकरनेवालोंके ब्हतक यमपुर मे संतुष्ट रहते हैं और बारहदिन पर्यन्त प्रेत प्राणी अपने घर मे जायकर कुटुम्बियों का दियाभया पिण्डपानी इत्यादिक देखता औ खाता पीता है फिर बारह दिन के पीछे उस प्राणी को यमदूत खैंचकर महाभयानक यमपुर को ले जाते हैं, और जाते ही वह जन्तु ब्हत्यु काल आदी चित्रगुप्त आदिकोंके मध्यमे बैठे हुये काले भुसुण्ड अंजनके पहाडसे यमराज को देखता हैं कि कराललंबे दांतोसे भयानक मुख औ भृकुटी कुटिल शीसजटिल महा दारुणमूर्त्ति आस-पास सैकडों कुरूप आधि व्याधिआदि रोग सब निजप्रभुको घेरेभये खडे हैं और यमराज अपने लम्बे लम्बे हाथोंमे लोह का डंडा औ कालपास लियेभये महाभैरव भयानक नाद कर रहे हैं, कि जिनकी आज्ञासे प्राणी शुभ औ अशुभ निजकर्म गतिको प्राप्त होते हैं ।

हे तात कपट साखी देनेवाले मनुष्य औ मिथ्यावदी

श्रवण करिये कि वह नर्क दोहजार योजन का लंबा चौड़ा औ जानु प्रमाण गहरा है, तिसमें तप्त अङ्गार पृथिवीके समान पटपर भरेभये जलजलाते हैं उस घोर नर्क के बीचमें पापकर्मी प्राणी को यमदूत ढकेलदेते और वह उसमें दौड़ता हुआ कहीं शरण नहीं पावता पगपगपर पांव जल भुनकर भुट्टा हो जाते औ बार२ फोले पड़२ फटजाते हैं इस प्रकार वह पापी एक रातदिनमें उस नर्क के पार जाता है फिर पापसे शुद्ध होनेके लिये दूसरे नर्कमें डालाजाता है, इस प्रकार जब अट्ठा इस नर्कभोग करचुकता तब वह कृमि, कीट, पतङ्ग, सिंह, व्याघ्र, शृगाल आदि दुखदाई तिर्यग् योनियोंका भोग कर फिर [illegible]ज, अज, अश्व आदि योनिको भुगतता है तिसपीछे बाकी कर्मभोगके लिये मनुष्ययोनि पाय कसाई, चण्डाल, चमार आदि नीच घरोंमें जन्म लेता है, परन्तु तहां भी अन्धा, काना, खोंडा, कुबड़ा, लंगड़ा, ठेंगना, बौना, बहिरा, होता हैं तिसपीछे फिर वह ऊंचा जाति में चढ़ चलता है, प्रथम शूद्र, फिर वैश्य, क्षत्री, विप्र, देवता आदि योनि को प्राप्त होता है कभी फिर भी पापकर्म से नीचे उतर चलता औ नर्कको जाता है।

हे तात पुण्यात्मा पुरुष औ धर्मात्मा जिस प्रकार जहां को गमन करते सो सुनिये कि धर्मराज की आज्ञा से पुण्यगति को जब जाते तो उत्तम हार नूपुर आदि नाना आभूषण दिव्यवस्त्र धारणकिये और स्रक्‌चन्दन आदि सुगंध से चर्चित कलेवर विमानोंपर बैठे साथमें गन्धर्व गान करते अप्सरा नाचतीभई आनन्द से स्वर्गको जाते हैं, और पुर

का फल भोगकर फिर स्वर्ग से च्युत हो, राजा महाराजा महात्मा जनोंके कुलमें जन्म ले सदाचार को प्रतिपालन करते हुये अनेक उत्तम भोगकर पुनः उर्द्धगमन करते हैं और मद, लोभ, ईर्षा दोष से दुराचार कर्मकर के मनुष्य फिर भी नीच गति को प्राप्त होते हैं, यह कर्मभोग जो जीव भोगता है सो सब मैंने आपसे कहा अब वह श्रवण करिये कि जैसे प्राणी गर्भसे प्राप्त हो वास करता है ।

इति श्रीमार्कण्डेये पुराणे पितापुत्रसंवादे दशमोध्यायः ।

---

११ अध्याय ।

पुत्र बोला कि हे तात जिस समय स्त्रीके रजमें पुरुष बीजको वमन करता है उस समय स्वर्ग या नर्कसे मुक्त भया जीव आयकर बीजमें प्राप्त होता तो उसके संयोग से स्त्री पुरुष दोनोंका बीज मिलकर एकरूपहो थिरहोताहै फिर कलल अर्थात् बड़े बूंदके समान होता तिस पीछे बुद्बुदके बराबर बनजाता है, फिर कुशबारीके तुल्य होता तब उसमें राईप्रमाण अङ्कुर उपजते और क्रमसे बढ़कर वे दो हाथ दो पांव एक शिर ये पाँच अङ्ग बनजाते हैं फिर क्रमसे उनमें भी नेत्र, नाक, कान, मुख, अङ्गुली, प्रगट होतीं औ बढ़ती हैं, फिर अङ्गुलीयोंमें नख निकलते तिस पीछे चर्म रोम प्रगटहो फिर केश जमते हैं उन अङ्गोंके सहित नारिअर के तुल्य वह कोश दिन२ बढ़चलता और नीचे को मुख रहता है और दोनो जानु पंसुरीसे लगी ऊपरसे हाथ जानुयुग से बंधे अंगूठे ऊपर को अंगुली जानुके आगे

को और जानु की पीठपर दोनोंनेत्र जानु के बीच नासिका औ चूतर एडीपर रहते हैं, इसप्रकार गर्भवासमें बालक बढ़ता है और माता की जठर अग्निसे दिन२ कठिन औ पोढा होता है और जो कुछ भोजन पान गर्भवती करती उसी से वह जीता है और आप्यायनी नाम नाड़ी उस की नाभि से लगीभई स्त्रीकी आंत रहने की जगहसे बन्धी सई रहती है उसी के द्वारा बालक को अन्न पान का रस प्राप्त होता है और गर्भमे उस प्राणी को अनेक जन्म का स्मरण बनारहता और कहता है कि अबको बार इस दुःखभवन से बाहर होकर ऐसा कर्म फिर न करेंगे कि जिससे पुनर्वार यह नर्करूप अन्धकूप गर्भवास मिले। इस प्रकार [illegible] चाचो चिन्ता करते उसको सैकरों [illegible] बीच विचार [illegible] जन्म औ चरित की सुरत आती है कि जो२ प्रारब्धवश उसने भोगा है, फिर नवयें दशयें महीना वह प्राणी अधो मुख अपनी ठौर से कुछ नीचेको जाता और प्राजापत्य नाम वायु जो गर्भमे उसके पीछे रहती धक्का देने लगती है तब उस स्थान से वह योनि के द्वारा दुख से पीडित बडे कष्टसे बाहर होता और मूर्च्छित हो पृथिवी पर अचेत पडा रहता है जब बाहिर की वायु लगती तो वह चेतन को प्राप्त होता और उसी समय विष्णु की माया उस को मोहितकर अज्ञान करदेती है तो वह प्राणी बालभाव को प्राप्त हो रोदन करने लगता तिस पीछे कालक्रमसे शिशु कुमार पौगण्ड किशोर यौवन प्रौढ़ वृद्ध अवस्थों को प्राप्तहोय फिर मरण औ जन्मग्रहण करते इस संसार के हेरफेरमे घटी

यन्त्रके समान घूमता फिरता कभी स्वर्ग औ नर्क कभी इहांई प्रगट हो निजकर्म के फलों को भोगता है और स्वर्गसे च्युत होते औ नर्कमे गिराये जाते अन्य जीवों को देखता है।

हे तात स्वर्गमे भी बडा दुख है कि जबसे जाता तभी से चिन्ता लगीरहती है कि एक दिन अवश्य गिराये जायंगे और नारकी जीवों को देख सोचता कि इस गति को हम भी एक दिन जायगे, हे तात गर्भवास मे बडा दुख फिर जन्म के समै योनिद्वारा बाहिर होनेसे अति कष्ट औ बालकपनमे भी दुख फिर यौवनमे काम, क्रोध, ईर्षा, लोभ से दुःसह दुःख बुढ़ापातो दुखका परम भवन है मरण मे अति दुःख यमदूतों के दर्शन औ कर्षण मे दुख नर्क मे दुख जहां देखो तहां ही दुख-तो इस संसारमे दुख छोड सुखका कहीं लेश भी नहीं है, परन्तु मूढ जो इस दुखको सुखकर समझे हैं तो अवश्य ही भोगते हैं और हे तात मैने इस संसार चक्रमे वार२ घूमते कहीं कुछ सुखका लेश नहीं देखा इस से अब मोक्ष के हेत यत्नकर रहा हूं तो वह छोड वेदत्रयी को कैसे पढूं॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे पितापुत्रसंवादे एकादशोऽध्यायः॥ ११॥

---

१२ अध्याय।

पिता बोला हे पुत्र तुमने बहुत अच्छा कहा यह संसार ऐसा हो दुर्गम औ दुख भवन है इसमे ज्ञान दान का बडा फल है, इस से हे पुत्र जो तुमने रौरव आदि नरक कहे हैं, उन को अब विस्तारपूर्वक कहो तो मेरा

मन सन्तुष्ट होय, तब पुत्र बोला कि पिताजी रौरव नाम प्रथम नरक तो मैं कह चुका अब महा रौरव का वृत्तान्त सुनिये कि वह बारह हजार योजन का है और तांबे की जमीन तिसके नीचे आग भरीभई है कि जिस की ताप से सब दिशा तपरही हैं और पूर्णमासी को संध्या समै उदय होते हुये चन्द्रके समान लाल प्रभा जगजगाय रही है कि देखते नहीं बनता और स्पर्श की तो क्या बात है उस नरक के बीचमे यमदूत हाथ पांव बांधकर पापी को डालदेते और वह उसमे कुलसताभया लोटता फिरता है फिर बडे२ बक, उलूक, काक, वृक, बिच्छू, डांस डंक मार२ और बडी२ लोह की चोंचों से छेद २ सारी शरीर झांझरी कर किसी काम की नहीं रखते और गीध इधर उधर घसीटते हैं, हे तात तब वह प्राणी इस दुर्दशा मे तात, मात, भाई, बन्धुजनों को बार२ पुकार२ कर रोता है पर कहीं किसीकी शरण नहीं मिलती, देखो जिन दुर्बुद्धियोंने बडे२ पापकर्म किये हैं वे इस प्रकारके महा कष्ट को हजारों वर्षलों भोगकरते हैं, कि जहां एक पलक भर भी कल्प के समान बीतता है।

और तीसरा तमनाम नरक है जो स्वभाव ही से अति शीत औ अन्धकार से भरा महारौरव के बराबर है जब उसमे प्राणी डालेजाते तो उस दारुण अन्धकार नर्कमे शीत के मारे इधरउधर धावतेहुये बिचारे पापी प्राणीएक दूसरे के साथ मुखभेड हो टक्कर खाते हैं, कि शिर फूट दांत नाक टूटजाते और मारे शीतके कपायकर शतकपास

के तुल्य हो थर२ कांपने लगते फिर भूख प्यास की तासंसे व्याकुल निराश विचारों के वडी तेज हड फोड दारुण हिमवायु हाड२ फोडदेती और मज्जा रुधिर जो वहां वहता उसी को क्षुधाके मारे चाटतेभये चार ओर धावमान परस्पर टकराते हैं, हाय जबतक पाप भोग पूरा नहीं हो चुकता तबतक उस अंधेरे भयानक नरक मे पापी प्राणी महा घोर दारुण क्लेश को भोग करते हैं।

चौथा निकृन्तन नाम नरक है उसमे कुंभार के ऐसे वडे२ चाक वेगसे घूम रहे हैं, हे तात पापियों को उनके उपर चढायकर यमदूत कालसूत से नखशिख लों सै कडों टुकडेकर डालदेते और वे फिर जुडकर एक हो जाते पर जीव नहीं जाता इसी तरह वार२ कटते तरासते रहते हैं और कहीं२ पर वडी२ खरसाने औ खरींद गंड, हैं, कि जिनपर चढाय पापियोंको रगडते औ खरादकर चूरचूरके समान ढेर कर देते हैं परन्तु फिर पापी ओंके त्यों हो जाते हैं, हे तात जबलों पाप का शोधन नहीं होता तबलों उनकी बहु दुर्दशा हजारों वर्ष होती रहती औ वे चिल्लाया करते पर उन की कोई एक नहीं सुनता है।

पांचयां अप्रतिष्ठ नाम नरक है जिस मे नारकी जन असह्य दुःख भोग करते हैं कि कहीं चक्र जिनपर खडा कर सैकडों वर्ष गोनोचाक संवांते और कहीं मोटे धागे लटके हैं कि जिनमे उलटाकर पैर बांध वरसोंतक फिरकी के समान फिराते और कहीं घटीयन्त्रमें नीचे मुखकर लटकाय देते कहीं योनियन्त्रके बीच मे पराेय वत्ती से ता

कैं समान खोंचतें और नाक मुख से रुधिर श्रांख। वहरहे हैं पापी प्राणी हाय२ कर रोते औ नाना यात सहते तहां हजरों वर्ष रहते हैं।

छठयां असिपत्र वन नाम नरक हजार योजन का है जिसमे तप्त तवाके तुल्य भूमि औ उपर प्रचण्ड सूर्य्यकी किरणों का सन्ताप सदा वनारहता है उस नरक के मध्यमें एक वन है कि जिसके वृक्षों के पत्र खड्ग के समान लटक रहे हैं, और वडे२ वलवान हजारहां कुत्ते जिनके वडे तीव्र दांत औ भयानक भारी मुख व्याघ्र तुल्य गरज रहे हैं, जव पापी उसमे डालेजाते तो तवासी भूमिपर थिर नहीं रह सकते उस वनको देख शीतल छायाके हेत तीव्र [illegible] मारे वाप माय पुकारते वन की ओर दौडकर जाते हैं, हे तात उस समै असिपातनी आंधी चलने लगती कि तरवारसे वे पत्ते टूट२ वायुके जोरसे पडड२ कर उन पापी प्राणियोंपर गिरने लगते औ वडे२ घाव उनको शरीरम होजाते हैं, तव वे प्राणी भागकर जलती भई भूमिपर गिरपडते और कुत्ते उनके अंग औ सारी शरीर को फाड २ खाने लगते हैं।

सातयां तप्तकुंभ नाम नरक है कि जिसमे हजारहां भडभूंजे के ऐसे कूंडे गडे हैं जिनके वीच वालू औ लोह चूर तप रहा है और भी अनगित भाड तप रहे औ तप्त लाल लोहेके खंभे भी लहक रहे हैं, और अनगिनत कडाहे तपरहे कि जिनके बीच किसी मे तेल किसीमे पानी खौलता है जव पापी प्राणी को उसमे ले जाते नीचे

सुख ... डालदेते औ उनका काढा बनाते कभी तेलमें जलाते कभी लोहचूरमे झुलसते कभी वालूसे कहलते हैं, तब उनकी शरीर लावासी छितरवितर अंगभंग होती खोपडी और आंखे फूटजातीं मास-मज्जा निकलपडती और गीध लोहकी चोंचों से खाल उखेड मास नोचर खाते हैं, फिर सिमसिमा यन्त्रमे डाल गलायकर तेलके साथ एक करदेते हैं कभी दर्रीं कहैं खलमे डाल खल करते कभी कोलूमे पेर निचोडलेते कभी तेलमे डाल मंथन करते कभी तप्त खंभेमे जञ्जीरसे वांध देते कभी भाडमे घुसेड भूनके भर्त्ता करते हैं हजारों वर्ष पापी यह दुर्दशा भोगते हैं, इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे नरकवर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

—०—

१३ अध्याय।

पुत्र बोला हे तात इस जन्मसे पूर्व्व सातवां जन्म मेरा वैश्यके कुलमें भया था तब मैने जलाशयमे जाय जल पीने से गौवों को छेंका और उन को जल पीने नहीं दिया तिस पाप कर्मसे नरकमे गया और वहां जाय देखा कि कोल्हू आदि नाना यन्त्रोंमे पीड़ित प्राणियोंकी शरीर से रुधिर मास मज्जा जो बहती तिसके कर्दमसे भरा वह नरक महा घिनावना होरहा है और यमदूत पापियोंको पटक २ तीव्र धार छूरोंसे चीर चीर कर उनकी खाल अलग कर रहे हैं और वे हाहाकार रोदन करते हैं, हे तात उसी

नरकमे पड़े भयें हम को भी कुछ अधिक एकसौ बरस बीते और उससे मैं भी दुख सन्ताप औ तृषा की दाह से व्याकुल नाना यातना भोग रहा था कि इतने मे तप्त बालूके कूंडे मे कलहारे जाते हुये, हमको शीतल मन्द सुगन्ध भरी सुखदाई वायु आयके लगने लगी तो उस समय सब नारकी नरोंकी वह कठिन यातना दूर हो गई और हम को भी स्वर्गके तुल्य सुख प्राप्त भया।

फिर हम सब नरकवासी चार ओर देख यह आश्चर्य कररहे थे, कि नरक मे ऐसा सुख कहां से आया इतनेमे देखते क्या हैं कि एक उत्तम पुरुष को यमदूत राह देखलाता भया साथ लिये चला आता है और कहता है कि इहां आ-इये यह देखिये, हे तात! वह महापुरुष उस घोर नरक मे जीवोंकी दुर्दशा देख दयाकर यमदूतसे बोला कि हे दूत! मैने ऐसा क्या पाप किया हैं, कि जो ऐसी भीम यातना की ठौर नरकमे आया, देखो राजा जनकके कुलमे उत्पन्न विपश्चित नाम मै भी राजा था, और भली भांत से प्रजा पालन औ अनेक यज्ञकर देवतों को सन्तुष्ट किया है, और न मै संग्राम छोड कभी भागा और न अतिथि अभ्या-गत को कभी विमुखफेरा न देव पितर ऋषि तथा सेवक औ साथियों के साथ कोई अनरीत की न कभी पर स्त्री या धनकी इच्छा की है देखो पूर्वकाल मे पितर औ पुण्यतिथि मे देवता, पौसाखे पर धेनु आदि प्यासे जीवों के समान आगमन करते हैं, फिर जिस गृहस्थके निकट से वे विमुख हो उर्द्धस्वास लेते हुये चले जाते उस का सुकृत

य तब ... कर्मम

औ धर्म नष्ट हो जाता है और पितरोंके विमुख होनेसे तो सात जन्मका सञ्चित शुभ नाश होता और देव विमुख होने से तीन जन्म का शुभकर्म नाश होता है इस से हे दूत! देव पितृ काम मे मै सदा सावधान रहता था, फिर जो इस दारुण नरक मे आया इसका क्या कारण है सो कहो। इति मार्कण्डेय पुराणे त्रयोदशोऽध्याय: ॥१३॥

---

१४ अध्याय।

जड बोला हे तात! हम सबके देखते सुनते वह यम दूत देखने मे तो भयानक-मूर्त्ति था, पर वचन बडे मधुर से औ नम्रता से बोला कि हे महाराज! आपने जो कहा सो सब सत्य औ ठीक है, परन्तु थोडासा पाप भी आपने किया था, सो मै आपको स्मरण कराय देता हूं कि विदर्भ देश की राजकन्या पीवरी नाम आप की पत्नी थी, उसका ऋतुकाल आपने वंध्य किया था, क्योंकि केकय देश की राजकन्या सुन्दरी नाम अपनी दूसरी स्त्री पर आप अधिक प्रेम करते थे, सो उसी ऋतुके व्यतिक्रम करने से आप इस घोर नरक को प्राप्त भये हैं, देखो जैसे होम के समयमे अग्नि घृत की अपेक्षा रखती है, तैसे ऋतुकाल मे प्रजापति वीजपात की इच्छा करते हैं इससे जो धर्मात्मा पुरुष ऋतुकाल को उल्लङ्घन कर काम क्रीडा मे आसक्त होता वह पितृ ऋणरुप पापको प्राप्त होय नरक मे अवश्य जाता है, हे राजन्! इतना हीं आप का पाप

है और नहीं इससे वह पाप भोग दर्शनमात्र से हो चुका अब आइये और अपनी पुण्य भोग करने के लिये चलिये

तब राजा बोला कि हे देवदूत! तुम जहां कहो गे हम तहांई चलेंगे पर कुछ पूछते हैं सो ठीक२ कहो कि लोह चोंचवाले काक जो नारकी मनुष्यों के नेत्र बार२ निकाल लेते और फिर२ वे हो आते तो इनोंने क्या पाप किया है, और जिह्वा को भी जडसे खैंच लेते औ फिर नवीन हो आती हैं, कितनो को फाडते कितने तप्त बालूसे भूने जाते कितनों को तेल कडाह मे पचाते हैं ऐसी२ नाना दुर्दशा भोगते औ अंगभंग हो नर नरकमे जो दिनरात दुख सहते सो किस२ पापकर्म का कौन२ फल हैं जिन को पापकर्मी भोग रहे हैं यह सब प्रथम हम को समझायकर पीछे और जहां चाहो तहां लेचलो।

यमदूत बोला कि हे महाराज! जो आप हम से पाप कर्मके फल पूछते हैं सो हम संक्षेप से कहते हैं कि पुण्य औ पाप पुरुष पर्याय याने पारी से भोगता है और भोगने से उनके पाप पुण्य दोनों की क्षय होती है भोगके बिना पाप पुण्य जीव के संग लगे रहते हैं, देखो दुर्भिक्ष से दुर्भिक्ष और क्लेश से क्लेश दरिद्रसे दरिद्र भयसे भय मृत्युसे मृत्यु को पापकर्मी पुरुष प्राप्त होते औ कर्मके बंधन से नाना गति को पहुंचते हैं, और पुण्यसे पुण्य उत्तमसे उत्तम उत्सव से उत्सव सुख से सुख स्वर्ग से स्वर्ग को श्रद्धा-वान दाता सत्पुरुष प्राप्त होते हैं, और पापी नष्टप्राणी जो हैं वे संसार मे व्याल सर्प दुर्ग महाकठिन रोग ग्राह

मोह को, चोरी निन्दा से हतभागे अभागे प्राप्त होते हैं और आगे को नहीं देखते कि इस के पर क्या फल है और पुण्यात्मा पुरुष उदार प्राणी इस संसार मे सुगन्ध माल्य दिव्य वस्त्र यान आसन मान को प्राप्त हो निज कीर्त्ति को श्रवण करते पवित्र मार्गसे उत्तम गति को जाते हैं।

महाराज! अनेक जन्मके सञ्चित पुण्य औ पाप मनुष्योंके सुख दुखके अङ्कुर हैं और जैसे वीज जल औ मृत्तिका की अपेक्षा रखते तैसे ही पुण्य औ पाप भी देशकाल पात्र की अपेक्षा करते हैं और थोड़ा भी पाप देशकाल के प्रभाव से पांव को कंटके समान बड़ी पीड़ा करता है जैसे अल्प कांटा शूल भूल मोटी कीलके तुल्य दुख देता है और जैसे कुपथ्य मिथ्याहार विहार औ श्रमसे तापादिक रोग होते तैसे ही एक दूसरे की आपेक्षा से पापफल देने में संङ्ग औ सहायक है और बड़े पाप दीर्घरोग आदि विकार शस्त्र अग्नि क्लेश पीड़ा वन्धन आदि फलका हेतु हैं इस प्रकार पाप पुण्य से प्रगट दुख सुख का भोग जीव संसार मे करता है मन वचन काय से अपने किये पाप पुण्यके प्रता-पसे दुखसुख नरक स्वर्ग देव तीर्यक मनुष्य आदि योनि को मनुष्य प्राप्त होते हैं इसमे सन्देह नहीं।

और हे राजन्! जो आपने पूछा कि किस पाप कर्म से कौन जातना होती सो सुनो कि जो अधर्मी नर परदा-राको कुदृष्टि से देखते और दुष्टमनसे परधन की इच्छा करते उनकी आंखें यमपुरके काक वार२ निकालते हैं औ यातना के लिये फिर२ होती हैं और जितने निमेष

पापी पापकर्ममे लगाते हैं उतने हजार वर्ष वे नेत्र निकालने की पीडा पाते हैं, और जो मनुष्य असत शास्त्र के उपदेश या संत्रणा शत्रु को भी देते और शास्त्र मे और ही लि [illegible] है कहते कुछ और हैं, और जो असत वाणी बोल या देवता ब्राह्मण गुरु वेद की निन्दा करते औ निर्दोष मे दोष लगाते हैं. तिन की जिह्वा बार२ निकाली जाती हैं जितने पल परनिन्दा करते उतने हजार वर्ष लों, और जो अधमनर पिता, माता, पुत्र, स्वजन, मित्र पुरोहित, विद्यागुरु, भार्या, सन्तान, साथी के साथ भेद रखते वेहूं देखो चीरे फाडे औ खलियाये जाते हैं, और जो मनुष्य दूसरे को सन्ताप देते औ आनन्दमे बाधा डालते औ पक्षा, चन्दन, सुगन्ध की चोरी करते और जो अधम नर [illegible] [illegible]ुष्यों को प्राणान्त कष्ट देते वे पापी लोह चूर औ तप्त वालूमे कलहारे जाते हैं, और जो मनुष्य देव या पितर कार्यमें एक आदमी का निमंत्रण अंगीकार कर दूसरे के घर भोजन करते हैं तिन को देखो गीध औ कुत्ते फाड२ खाते औ घसीटते हैं,और जो दुष्टनर कठोर वचन से साधुके मर्म को पीडा देते तिनको ये कराल मुख पक्षी पीडा दे रहे हैं, और जो पिशुनता करते या कहते कुछ करते कुछ, या भेद बुद्धि से मनमें कुछ कहते हैं तिन की जीभ देखो तीव्र छूरों से चीरी जाती हैं, और जो अभिमानी माता पिता गुरु का अनादर करते वे इस विष्टा मूत्र पीव के कुंडों में अधोमुख पडे हैं,और जो देव पितर, अतिथि, सेवक, अग्नि और पालतू पक्षी आदि को भोजन न देकर

आप खाते हैं, वेई दुष्ट देखो पर्वत समान शरीर औ सूईसा मुख पीव चर्बी चाटरहे हैं, और जो मनुष्य एक पांति मे बैठकर सजाति विजाति कोई क्यों न हो पंक्ति भेद करते हैं, वे देखो विष्टा खाय रहे हैं, और जो एक साथ विदेश चले औ साथी के पास राहखर्च नहीं है, या चुक गया है तो आप खाया और उस को न दिया वे थूक औ खखार खाय रहे हैं, और जो नर जूठे मुख या जूठे हाथ से गऊ ब्राह्मण अग्नि को छूते वे आगभरे कुम्भोंपर हाथ धर जीभ से चाटरहे हैं, और जो मनुष्य जूठे मुख सूर्य, चन्द्र तारागणों को इच्छा पूर्वक देखते हैं, तिन को आंखो मे यमदूत लोह की लाल सलाई फेरते इसी से देखो ज्वाला उठ रही हैं, और अग्नि गऊ माता, पिता, विप्र, ज्येष्ठभ्राता, भौजाई छोटी वहन वडे बूढे इन कों जो नर पांव से छूते तिन के पांवों मे देखो तप्त लोह की वेड़ी पड़ी भई हैं, और घुटने लों अंगारों की राशि में खडे किये गये हैं, और जिन मनुष्यों ने मोहनभोग मांस औ खीर तथा देवयोग्य अन्न विना संस्कार या देव पितर अतिथि को निवेदन न कर आप खाये हैं, तिन को यमदूतोंने ऐसा पटका कि देखिये आंखें निकल पडी हैं, और जिनोने गुरु देव ब्राह्मण वेद की निन्दा की है तिन की जीभ यमदूत खैंचते और वे रोयरहे हैं, और जो मनुष्य उन की निन्दा रुचि से सुने हैं, तिनके कानों मे लोह की लाल कील यमदूत ठोंक रहे हैं, और जो प्राणी क्रोध लोभ के वश हो घाट या कूप या देवमन्दिर या विप्र का घर या

सुन्दर सभा का घर या धर्मशाला तोडते औ विधंस करते हैं, तिन की शरीर से यमदूत खाल खींच अलग करते देखो लुण्ड लोट रहे हैं, और गऊ ब्राह्मण तथा तीर्थ की मार्ग मे जो मनुष्य विष्टा मूत्र करते हैं, देखो उनके मूल द्वार से ये कठोर यम काक आंते खैंच रहे हैं, और जो एक वर को कन्या देने कहिकर दूसरे को देते हैं, तो वे सारी शरीर चीर नोन की नांदों मे चभोरे जाते हैं, और जो पुत्र भृत्य, कलत्र, बन्धुवर्ग, आदि को छोड अपना ही पोषण करते और दुर्भिक्ष में सामर्थ्य रहते और को न देय आप खाते हैं तो उन का मांस उनके मुख मे यमदूत देते और वे भूखके मारे झखमार२ खाते हैं, और जो शरणागत या आश्रित जन का त्याग करते वे कोल्हू यंत्र मे पेरे होते हैं, और जो मनुष्य धन रहते कुछ सुकृत जन्म भर नहीं करते वे बडी२ भारी शिलों के नीचे दबाये और चक्कियों मे पीसे जाते हैं, और जिनोने पराई थाती या धरोहर को हरली है तिनके हाथ पांव बांधे पडे लोटते और सांप बिछू कीडे वज्रतुण्ड काक दिनरात नोंच२ खाय रहे हैं, और देखो दिनमें मैथुन करनेवाले औ परदारगामी कामी पुरुष ये हैं जो तप्त लोह की लाट मे बंधे हैं और लोह की कीलोंसे जडित सेमलके वृक्षोंपर चढाये उतारे जाते सारी देह चिथडा हो रही रुधिर बहता रोते हैं जो परनारीमे मन नेत्र लगाते तिन को देखो यमदूत उखल मे डाल चूर करते हैं और जो गुरु नीचे आप ऊंचे बैठ अनादर से पढ़ते वे मुडभर शिलोंपर ऊंचे से गिराये

जाते हैं, और जो निर्मल जल मे नाक थूक विष्टा मूत्र करते या डालते वेई दुर्गन्धभरे विष्टामूत्र के नरक कुण्डमे पड़े हैं और एक एक का मांस खाय रहे हैं और जिनोंने अतिथि सत्कार न किया फिर वेद अग्नि को दूषित किया है वे देखो पर्वत की चोंटी से नीचे शिलापर गिराये जाते हैं और जो विधवा स्त्रीके जारभये वे ये कोडे हैं जिनको चिंउटी खाय रही हैं और पतित से दान लेनेवाले और उन को यज्ञ होम देवपितर कार्य करानेहारे और तिनके साथ रहनेवाले मनुष्य पत्थर के कीडे हो पत्थर खाते हैं और चाकर मित्र पाहुन बालक के देखते जो मीठी वस्तु खाते और उन को नहीं देते न पूछते वे अंगारों मे पड़े हैं और कुत्ते नोंच २ खायरहे हैं, और जो अंधे बहिरे गूंगे मूर्खों को उहंकाते हैं और जो अधम स्त्रियोंके उपकार को नहीं मानते और दुष्टमति मित्रके उपकारी नहीं हैं वे प्रथम तप्तकुण्ड मे डाले जाते फिर चक्की मे पीसे जाते तिस पीछे गरम वालूमे भूनेजाते फिर कोल्हू मे पेरे जाते फिर असिपत्र वनमे जाते तिस पीछू छूरों से फाड़े जाते फिर चाकपर घुमाय कालसूत से तरासे जाते इस प्रकार अनेक यातनों से कैसे उद्वार पाते यह हम नहीं जानते हैं श्राद्ध भोजी ब्राह्मण जो एक को ठेल आप बैठते वेविषवाले सर्प के फेन को चाटते औ सब देह में लगाते निन्दैर सुवर्णचोर ब्रह्महत्यारे मदपीये गुरुपत्नीगामी बाकील यमेषदेनेवाले हजारों वर्ष अग्नि के बीच दग्ध हो पीछे जन्म हो घाटपाय क्षयी औ कुष्ठरोग से संयुक्त हो यह

उनका चिह्न है और वे मरकर फिर नरक को जाते फिर नरतन पाय कोढो चहूँरोगी होतेरहते हैं, राजन्! यह दुर्दशा उनको कल्पभर भोगनी पड़ती है और गोवध-करनेवाले तीन जन्म नरक भोगते हैं और उपपातक कर नेवाले भी दों तीन जन्म भोक्ते यह निश्चय है अब जिस२ पातक औ पाप से नरक भोग कर जौन२ योनि पावते सो श्रवण करिये। इति श्रीमार्कण्डेये चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

१५ अध्याय।

यमकिंकर बोला कि हे राजन्! पापी नरकभोगकर फिर जिस२ योनिमें जन्म पाते हैं सो सुनिये, कि पतित से प्रतिग्रह लेनेवाले औ उनके याजक ब्राह्मण नरक भोग [illegible] होते हैं और जो पढानेवाले दुष्टता करते वे कुत्ता होते और गुरुपत्नी औ धन की मनसे इच्छा करने-वाले और माता पिता का अपमान करनेवाले नरक भोग कर गदहा होते और माता पिता को क्रूर वचन या गाली देने से सारिका होते भाई की स्त्री का अनादर कर कबू-तर होते और उनको पीड़ा देनेवाले कछुआ होते और स्वामी का अन्न खाय या वेतन ले उसके मनमाना काम न करने से वानर होते हैं, पराई थाती हरनेवाले क्रमि होते निन्दा करनेवाले राक्षस होते विश्वासघाती मीन योनि पा-वते और कोई तरहके अन्न चुरानेवाले मूसहोते औ परस्त्रीत से छल करनेवाले प्रथम वृक होते फिर कुत्ता शियआप उंचे व्याल बक कंक क्रम से होते हैं जो दुर्बुद्धि जन र से गिरायें

वे पापी कोकिल होते हैं, मित्र गुरु राज भार्या के धर्षण करनेवाले शूकर होते औ यज्ञ दान विवाह में विघ्नकारी वे कृमि होते जो विष्ठा की गोली बनाय पिछले पावों से ठेलते भये ले जाते हैं, और कन्याके पुनर्दाता भी वही होते देवपितर को न देकर जो आपही अन्न खाते वे वायस पक्षी होते हैं पिताके समान जेठे भाई का अनादर कर क्रौंच होते और शूद्र ब्राह्मणीगमन कर कृमि, कीट, पतङ्ग, बिच्छू, मत्स्य, वायस, औ कछुआ, कसाई होते शस्त्रहीन को मार कर खर होते हैं, स्त्रीबालघाती कृमि होते भोजन चोर माछी होते और इसमें भी भेद है सो सुनो कि अन्न चोर मार्जार तिलपिन्नी चोर मूस घृत चोर नकुल मत्स्य मांस चोर काक सेन चील्ह होते हैं, दही लवण चोर कृमि दूध चोर बलाक तेलचोर तेलचट्टा मठा चोर दंश पूपचोर पिपीलक रसचोर तित्तिर लोहचोर काक कांसाचोर हारिल रूपाचोर कपोत कंचनचोर कृमि और वाहन या ऊनवस्त्र का चोर क्रकर रेशमचोर कुशवारी धोती अङ्गोछा का चोर शुक कपासवस्त्र चोर क्रौंच वल्कल चोर वक रंगेवस्त्र का चोर मयूर सुगन्धचोर छुछुंदर फल चोर शंठ काठचोर घुन फूल चोर दरिद्री यानचोर पंगुल शाकचोर हारीत जलचोर चातक होते हैं और भूमि-हरनेवाले रौरवादि नरक भोगकर तृण, गुल्म, लता, वल्ली, त्वक्सार, तरु हो कर फिर कृमि, कीट, पतङ्ग, जल पक्षी, खग, गड, चाण्डाल, कसाई, पंगु, अंध, वधिर, कुष्ठ, यक्ष्मारोगी औ मुख, नेत्र, उदर रोग से पीड़ित रहते हैं,

फिर स्त्रीरोगसे युक्त शूद्रयोनि को प्राप्त होते हैं, गऊ सुवर्ण औ भूमि हरनेवालों की यह गति मैंने देखा है, और विद्याचोर दक्षिणाचोर किसी की वृत्ति दूसरे को दिलानेवाले मूढ षंढ होते और जो मनुष्य बिन प्रज्व- लित अग्नि मे होम करते वे मन्दाग्नि औ अजीर्ण रोग से पीडित रहते हैं, हे राजन्। परनिन्दा कृतघ्नता निठुरता निर्दयता परका मर्म दुखावना परस्त्री गमन परधन हरण देव निन्दा अशुचि ठगविद्या कृपणता मनुष्यबध निषिद्ध कर्ममे सर्वदा रुचि ये सब लक्षण नरक से मुक्त नारकी प्राणियों के हैं, और जीवपर दया मधुर शुभ वचन परलोक चिन्ता पाप से डर सत्यबोलना परहित मे मन वचन वेद प्रमाण देवदर्शन देवपितर गुरु ऋषि पूजन सत्संग मे रुचि [illegible]न सुकर्म मे अभ्यसन बुधजनों से मैत्री पण्डित का मान प्रातस्नान किञ्चित दान ये सब स्वर्ग से भ्रष्ट पुण्य- जनों के लक्षण हैं, हे राजन्। यह जो मैंने कहा सो सब आपने भी देखा कि निज२ कर्मका भोग सब कर रहे हैं, अब आइये अन्यत्र को चलिये फिर पुत्र बोला कि हे तात! जैसे ही दूत को आगेकर राजा चले कि इतने मे नाना नरक यातना भोगते रहे जो पापीजन समूह एकवार्गी सबकेसब चिल्लाय उठे और बोले कि राजन्। हम अनाथ दीनोंपर दयाकर एक मुहूर्त्तभर और रहिये क्योंकि आपके अङ्ग सङ्गी पवन से हमारी पीडा औ ताप सब दूर हो गई और इस नरक मे बडे आनन्द को प्राप्त भये हैं, नारकी जनों के ये वचन सुन राजा ने यमदूत से पूछा कि येंहो

मेरे इहां रहने से इनको आनन्द किस हेतसे होता क्या मैने मर्त्यलोक मे कोई वडा पुण्य कर्म किया है जिससे इहां भी अनन्द होता है, तव यमपुरुष बोला कि हां देवपितर अतिथि भोजन से वचे भये अन्नको खाय कर यह आप की देह पली है इस कारण आपके अंग सङ्गसे शीतल वायु इन पापियों की यातना पीडा को हरलेती है और अश्वमेध आदि नाना यज्ञ आपने किये हैं, तिनके प्रताप से इस यमपुरके अस्त्र, शस्त्र, यन्त्र, अग्नि, चक्र, काक, गीध स्वान, पीडन छेदन दाहादि महादुःख के हेतु सब आपके तेजसे वलहीन हो कठोरता छोड कोमल भये हैं, तब राजा बोले कि मेरेजान स्वर्ग ब्रह्मलोक वैकुण्ठ मे भी सो सुख नहीं है जो दुःखी जीवों के दुःख दूर करने से है तो हे भद्रसुख! जो हमारे इहां रहने से इन विचारों को यातना की वाधा नहीं होती हैं तो हम अचल हो सदा इहांई वने रहेंगे।

दूत बोला राजन्! आप अपनी पुण्यका फल भोग करिये इन पापियों को कर्मके अनुसार यातना सहने दीजिये, राजा बोले जवतक ये दुःखी इहां है तवतक हम इस ठौर से अनत कहूं न जांयगे क्योंकि मेरे निकट रहने से ये सुखी हैं, और धिक्कार है उन के जीवन को जो शरणागत आतुर दीनपर सामर्थ रहते दया नहीं करते हैं, शत्रुपर भी दया करनी उचित हैं जो वह शरण मे आवे, देखो यज्ञदान तप जो कुछ इहां करते सो सब परलोक मे उन के काम नहीं आते जिनके मन वाल वृद्ध आतुर दुःखीपर भी कठोर बनें

रहते हैं, और वे मनुष्य नर देहधारी राक्षस हैं, हे दूत! जो मेरे रहते इन को भूख प्यास मूर्छा दुर्गन्ध आदि नरक पीडा नहीं होती और एक मेरे दुख सहने से ये बहुतेरे सुखीहैं, तो मैने क्या नहीं लाभ किया इससे अब तुमतो गमन करो और मै इहांहि रहूंगा।

दूत बोला महाराज! आपके लेनेके लिये देखो इन्द्र औ धर्म दोनो आये हैं, इससे शीघ्र चलिये फिर धर्म बोला कि आपने मेरी बडी उपासना की है इससे अब म आप को स्वर्ग ले चलता हूं विलंब न करिये राजा बोले हे धर्म! नरकपीडित जीव रक्षा के हेत मेरी शरण पुकारते हैं इससे मैं स्वर्ग को न जाउंगा, तब इन्द्र बोले इन्होने निज कर्म से नरक पाया है तुम अपनी पुण्य से स्वर्ग को चलो तब राजा बोले कि हे धर्म! जो आप जानते हो तो कहो कि मेरा कितना शुभ कर्म है धर्मने कहा राजन्! समुद्रमे जितने बूंद जल है और आकाशमें जितने तारा हैं और जितने धारसे मेघ वर्षा करते और गङ्गा के रेत मे जितनी बालू हैं महाराज जैसे ये सब असंख्य हैं तैसे ही तुमारे पुण्य की भी गिनती नहीं है और नरकवासियों पर जो आप दया करते यह भी आपकी असंख्य पुण्य हो चुकी है, अब आप सुरलोक को पुण्य भोगके लिये चलिये और ये पापी भी नरक भोग कर छुटी पावें, तब राजा बोले कि जो मेरे निकट होने से इनका कुछ भी भला न भया तो फिर मेरा सङ्ग करने की इच्छा मनुष्य काहे को करेंगे इस से जो कुछ हमारा

सुकृत है तिस से ये नरकी जीव यमयातना से छूट जांय इन्द्र प्रसन्न होकर बोले कि अच्छा आपने ऊंचेसे ऊंचा पद पाया और ये सब भी नरक से छूटगये, पुत्र बोला हे तात! उस समय राजापर पुष्पवृष्टि भई और राजा को उत्तम विमान पर चढाय कर इन्द्र स्वर्गलोक ले गये और दूसरे हजारों जीव जो उस समय यमयातना भोग रहे थे उस से छूटकर निजकर्म के अनुसार तिस२ जाति औ योनि मे प्रगटभये, हे तात! यह जो मैने कहा सो सब आंख से देखा है इस के पर अब और क्या कहैं सो कहिये इति मार्कण्डेये पञ्चदशोऽध्यायः॥ १५ ॥

१६ अध्याय।

पिता बोला हे वत्स! घटीयन्त्र के समान हेर फेर होते भये इस संसार की व्यवस्था औ स्वरूप जो तुमने कहा सो सब मैने जाना परन्तु ऐसी संसारगति मे आय अब हम को क्या करना उचित है सो कहो, पुत्र बोला हे तात आप जो मेरी बातपर विश्वास करो तो गृहस्थाश्रम छोड वानप्रस्थ धर्म मे तत्पर होय फिर उस को भी त्यागकर निज आत्मा को आत्मा मे लगाय एक दिन अन्तर भोजन औ मन को काबूकर संन्यास ग्रहण करो संन्यास मे भी बाहर के विषय छोड योग मे युक्त हो उस योग को प्राप्त होउगे जो संसारी दुःखरूपरोग का भेषज और मुक्ति का अतुल अनिर्वचन हेतु है जिस से फिर पञ्च भूतों के साथ संयोग को न प्राप्त होउगे।

पिता बोला कि हे पुत्र! अब तुम उस मुक्ति के हेतु रूप योग को कहो कि जिससे फिर जन्मपाय इस संसार दुःख को न पावें और मोह बन्धन से छूट जांय और संसार रूप प्रचण्ड मार्त्तण्ड की तापसे सन्तप्त मेरे मन को ब्रह्म ज्ञान रूप शीतल जल से सने अपने सनेह वचनों से सींच कर उस ताप को दूरकरो और अज्ञान कृष्णसर्प के डसने से विषपीड़ित मृतक हम को अपने वचन अमृत पानके द्वारा पान कराय पुनर्जीवदान करो और देह गेह धन जन की ममतारूप निगडबन्ध से पीड़ित मोहिं विज्ञान यन्त्र से खुलकर बाहिर करो, तब पुत्र बोला हे तात! श्रवण करो कि पूर्व्व समय जिसप्रकार से बुद्धिमान दत्तात्रेयने अलर्क के प्रति विस्तार पूर्व्वक योग कहा था, पिता बोला दत्तात्रेय किस के पुत्र हैं और किस हेत अलर्क से योग कहा औ अलर्क कौन थे जो योग को पूछा।

पुत्र बोला कि कोई कौशिक वंश का ब्राह्मण प्रतिष्ठान नाम पुरमें रहता था, और अन्य जन्मके पापों से कुष्ठरोग ग्रस्त था, परन्तु उस की पत्नी पतिव्रता थी और महाव्याधिग्रस्त निजपति की सेवा में सदा तत्पर देवताके समान जानती और प्रतिदिन पादप्रक्षालन उबटन स्नान भोजन शयन करवाती और पांवपलोटन विष्ठामूत्र खखार थूंक रुधिर पीव को धोय पोंछ विमलकर एकान्त में प्रीति प्रियवचन आदि अनेक उपचार करके पति को सन्तुष्ट रखती थी परन्तु इसप्रकार विनीतभाव से भी सेवा करती निज पत्नी को वह दुष्ट अति क्रोधी निजनिठुर वचन औ

भर्त्सना करता रहता था, पर तो भी उसकी वह भार्य्या वैसे घिनावन पति को सर्व्व श्रेष्ठ देवता ही कर मानती थी।

हे तात! यद्यपि वह ब्राह्मण एक पगभर भी नहीं चल सकता था, पर तौभी एक दिन निज भार्य्या से बोला कि ओरे तू हम को उस वेश्या के घर ले चल जिस को मैंने राजमार्ग में अटारी पर खडीभई देखा था वह मेरे हृदय में ऐसी चुभी कि भोर को देखा और अवरात आई पर वह मेरे मनसे न भूली औ जो वह सर्व्वाङ्ग सुन्दरी पीन-श्रोणि पयोधरा हमसे आलिङ्गन न करेगी तो तुम हमको मरा भया देखोगी हाय देखो तो काम ऐसा वाम है कि वेश्या से बहुतेरे मनुष्य प्रीति करते औ धन देते हैं परन्तु वह किसी के साथ प्रीति का लेश भी नहीं रखती यह सत्य है पर क्या करूं मेरा लालचीमन उसी के घरजाने में लगा है तब उसकी वह सती भार्य्या सत्कुल की कन्या पतिव्रता निज भर्त्ता के वचन सुनकर अपना कमर दृढ बांध औ बहुत सा धन साथ ले स्वामी को अपने कंधेपर चढाय उस अंधेरी राति में कि मेघ आकाश को घेरे औ झींसी पड रहीं विजुरी की चमक से राह देख धीरे२ धरतीपर पैर धरती स्वामी की इच्छाके अनुसार मार्ग में चली जाती थी और उसी राह में राजाने चोर के धोखे से माण्डव्य ऋषिको शूलीपर चढाय दिया था, और शूली में विद्ध वे वडी पीडा सहिरहे थे कि इतनेमें पत्नी के कंधेपर चढेभये उस ब्राह्मण के पांव का धक्का जो लगा तो माण्डव्य को वडी पीडा भई और उस दुख से क्रोधकर बोले कि जिसने ऐसे

लोभमें हम को पांव की ठोकर मारी वह अधम सूर्य्य के उदय होते ही निसन्देह प्राणनाश को प्राप्त होगा।

आक्षव्य को यह दारुण शाप श्रवण कर वह पतिव्रता ब्राह्मण की पत्नी बोली कि भला तो सूर्य्यही न उदय होंगे कि जिनके दर्शनसे मेरे पति का नाश है, हेतात उस सतीके वचनसे सूर्य्योदय के विना अनेक दिन लों रात ही वनी रही और देवतों को बडी भारी भय होती भई कि स्वाध्याय वषटकार स्वाहा स्वधा से रहित होकर यह जगत नाश होगा क्योंकि देखो दिनरात के विना मास औ ऋतु नहीं और ऋतु के विना उत्तरायण दक्षिणायन नहीं और अयनके ज्ञान विना संवत्सर कहां फिर संवत्के विना और काल का ज्ञान नहीं हो सकता है देखो पतिव्रता की वाक्यसे सूर्य्य नहीं उदय होते और सूर्य्योदय के विना स्नानदानादि कर्म सब वन्द हो रहे हैं, फिर यज्ञ होम अग्निहोत्र के विना हमारी तृप्ति किस प्रकार से होय यह बडा भारी असमञ्जस प्राप्त भया

देखो मनुष्य यज्ञ में भाग देकर हमको सन्तुष्ट करते और हम उनपर कृपाकर जलवृष्टिसे सस्य औषधी आदि को वढावते फिर औषध औ अन्न होने से मनुष्य हमारे अर्थ यज्ञ करते और हम उनकी सकल कामना पूरी करते हैं, और जिस देश के लोभी मनुष्य हमको न देकर आप ही खाते तो हम उन के विनाश के लिये जल, अग्नि, सूर्य्य, वायु, पृथिवी को दूषित करदेते जिससे उनके मरण हेतु नाना दारुण रोग प्रगटहोते और जो प्रथम हमको

तप्तकर बाकी आप खाते उनको हम पुण्य लोक देते हैं सो सूर्य्यके बिना अब सब लोकव्यवहार बन्दभया हैं तिससे अब किस प्रकार से फिर दिन होय ऐसे सकल देव परस्पर विचार कर रहे हैं, कि प्रजापति बोले हे देव सब! सुनो तेज तेजसे औ तप तपसे शान्त होते हैं सो देखो पतिव्रता के प्रताप से सूर्य्य नहीं उदय होते तो तुम सब अब पतिव्रता अत्रिपत्नी अनसूया तपस्विनी को सूर्य्योदय की कामना से प्रसन्न करो तो तुमारा मनोरथ सिद्ध हो यगा॥

पुत्र बोला कि हे तात! यह सुन देवतोंने स्तुतिकर जब अनसूया को प्रसन्न किया तब वह प्रसन्न हो बोली कि वर मांगो तब देवतों ने उसे प्रसन्न जान यह कहा कि जैसे दिन होता था, तैसे फिर होय, तब अनुसूया बोली कि पतिव्रता का महात्म जिसमे नष्ट न होवे इससे प्रथम उसका सन्मानकर पीछे दिन करोंगी जिससे फिर दिन रा[illegible]ति होय और उसका पति भी नाश न होय, इतना कह अन[illegible] [illegible] पतिव्रता ब्राह्मणी के घर गई और कुशल प्रश्न पूछा उसने निजधर्म औ स्वामी की कुशल कहा तव अनसूया बोली कि वीर! कहो तो स्वामी का मुख देख प्रसन्न होती हौ और सब देवतोंसे अधिक पतिपर प्रेम करतीहौ हे देवी! देखो मैंने स्वामी की सेवासे महाफल पाया है, देखो पांचवात मनुष्य को करना उचित हैं एक तो निजवर्ण धर्मके अनुसार धनसञ्चय दूसरे धनपाय विधि पूर्व्वक सुपात्र को देना औ सत्कर्म मे लगाना तीसरे सत्य सरल स्वभाव दया दानयुक्त सदा हो रहना, चौथे राग द्वेष

से रहित शास्त्रविहित कर्म श्रद्धा से करना, पांचये स्वजाति विहित कर्मसे परलोकप्राप्ति मे रुचि हे वहिन देखो बडे लोभसे यज्ञ दान आदि जो कुछ पुरुष करते उस पुण्य की अर्द्धभागिनी पतिकी सेवासे पत्नी होतीहैं, और स्त्रीको अलग यज्ञ, श्राद्ध, व्रत, तीर्थ, कुछ भी किसी शास्त्रमें नहीं लिखा है परन्तु एक पतिसेवा से स्त्रीके सब काम सिद्ध होते औ पर लोक सुधरजाता है इससे पति की सेवा मे सदा निःकपट मन रहना उचित है स्त्रीको पति की बराबर सुखदाई औ परमगति दूसरा कोई जगत मे नहीं है॥

पुत्र बोला कि हे तात! अनसूया के वचन सुन, वह ब्राह्मणी बोली कि आज मै धन्य भई और देवतोंने मेरेपर बडी दया की जो आपने अनुग्रह कर मोहिं दर्शन दिये मेरे [illegible] श्रद्धा के अंकुर को निज वचन वारिसे सींच कर बढाया औ हरा किया आपके प्रसादसे मैं जानती हूं कि नारी को पति के समान दूसरी गति नहीं है और पतिपर प्रीति करने से इहलोक परलोक मे स्त्री पतिके प्रसाद से सुखपावती हैं, और स्त्रीका स्वामी परम देवता है, अब कहिये कि जो आप कृपा कर मेरे मन्दिर को आई तो आप को क्या आज्ञा मै या मेरे पति करैं, तब अनसूया बोली कि इन्द्रादि सब देव बडे दुखी मेरे निकट आये औ कहने लगे कि देखो पतिव्रता के वचन से सूर्य्य नहीं प्रगट होते इस से सब लोक पीडित हो रहे हैं, सो अब आपसे देवता यह प्रार्थना करते हैं कि फिर दिन होय और हम भी इसी हेत आई हैं, सो सुनो कि दिन के विना सकल कर्म का

उच्छेद है औ धर्म छेद से अनावृष्टि अनावृष्टिसे जगत का नाश होगा सो तुम जो जगत को विपदसे उद्धार किया चाहो तो लोकपर प्रसन्न होय सूर्य्य को फेर उदय करावो, तब ब्राह्मणीने कहा कि दीदी माण्डव्य ऋषिने मेरे पति को शाप दिया है कि सूर्योदय होते ही तुमारा नाश होगा तब अनसूया बोली कि वहिन जो तुमको रुचै तो मै तुमारे पति की फिरसे नई अवस्था औ सुन्दर देह तथा स्वरूप कर देउं और हम को तुमारा मान मर्य्याद औ सौभाग्य रखना हित औ उचित है॥

पुत्र बोला कि हे तात! तब उस ब्राह्मणी ने अनसूया की बात अङ्गीकार कर सूर्यदेव का आवाहन किया, महाराज! उस समय तक दश रात हो चुकीं थीं तब सूर्य-मण्डल उदयाचलपर प्रगट भया और अरुण के देखते ही वह कुष्ठी ब्राह्मण पृथिवीपर गिरा औ तुर्त्त मरगया यह देख वह ब्राह्मणी पतिके वियोगसे अति व्याकुल हो रोने लगी तब अनसूया बोली बहिन! तुम विषाद न करो मेरे बल को तो देखो जो मैने पति की सेवासे पाया है इतना कह कर अनसूया बोली कि जो मैने स्वामी के समान अन्य पुरुष को कभी न देखाहो तो उस पुण्य से यह ब्राह्मण व्याधि मुक्त फिर युवा होकर जीवे, और स्त्रीसमेत सैकरों वर्ष आनन्द करे और जो मैने स्वामी के समान अन्य किसी देव को भी न जाना हो तो उस सत्यसे यह ब्राह्मण आ-रोग्य हो जीवे और जो मन वचन कर्मसे निज पतिमे रति

औ सेवामें मेरी मति रहती हो तो उस पुण्य औ सत्यसे यह ब्राह्मण कञ्चन देह होकर जी उठे॥

पुत्र बोला कि हे तात! जब अनसूया ने तीनबार प्रतिज्ञा कर ऐसे वचन कहे तब वह ब्राह्मण बिगत रोग युवा अवस्था को प्राप्त गन्धर्व के समान नखशिख सुन्दर तन उठ बैठा और देवतोंने आकाश से फूल बरसाय अनसूयासे कहने लगे कि हे कल्याणी! तुमने देवतों का बड़ा कार्य किया इससे मनवाञ्छित बर मांगो तब अनसूया बोली जो ब्रह्मा आदि सकल देवता हम पर प्रसन्न हैं और हम भी बरदान के योग्य हैं तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश मेरे पुत्रहोंय और संसारके क्लेशसे मुक्त होनेके लिये पति सहित हम योग को प्राप्त होंय, यह सुन ब्रह्मा विष्णु महेश [illegible] देव एवमस्तु कह कर औ अनसूया से आज्ञा ले निज२ धाम औ भवन को गमन किये और अनसूया भी उस पतिव्रतासे बिदा ले आशीर्वाद दे अत्रिके निकटको गई॥

इति मार्कण्डेये पितापुत्र संवादे षोड़शोऽध्यायः॥१६॥

---

१७ अध्याय॥

हे तात! तिसके बहुत दिन पीछे ब्रह्माजी के दूसरे पुत्र अत्रि भगवान् ने सकाम होकर ऋतुस्नाता निजपत्नी अनसूया को मनसे ध्यान जो किया तो रेतरूप विकार प्रगट भया तिस को वायु तिर्यक् औ ऊर्द्ध उडायकर लें गई फिर उस ब्रह्मरूप शुक्लबर्ण रजयुक्त रेत सोम नाम को दिशोंने धारण किया सोई सोम अत्रि से अनसूयामें मान-

सिक पुत्र सकल जीवकी आयुर्दा के आधार भये, और सतोगुण के वलसे विष्णुभगवान् आप आयकर प्रगट भये औ अनसूया के स्तन भी पान किये और दत्तात्रेय इस नामसे प्रसिद्ध अत्रिके दूसरे पुत्र भये, और हैहय वंश मे प्रगट दुष्ट कार्त्तवीर्य अर्जुन को अत्रिके प्रति अपराध औ दुष्टता करते देख वडा कोपकर सातही दिन पीछे माता अनसूया के गर्भ से बाहिर आय तमोगुण से भरे रुद्रके अंश से प्रगट महा क्रोध मूर्ति दुर्वासा जी प्रगट भये ॥

हे तात! इस प्रकार अत्रिके तीन पुत्र भये तिनमे ब्रह्मा जी सोम और विष्णु दत्तात्रेय साक्षात् शङ्कर मूर्त्ति दुर्वासा हैं सोम अपनी शीतल किरणोंसे वृक्ष लता औषधी औ मनुष्योंको आनन्द वढाते भये सदा स्वर्गमें वर्तमान रहते हैं और दत्तात्रेयजी दुष्टदैत्य राक्षसों का निग्रह औ साधुजनोंपर अनुग्रह पूर्व्वक प्रजापालन करते हैं और दुर्वासा जी विप्र औ अपमान करनेवालों को मन वचन और दृष्टिसे भस्म करते भये सदा तप करते रहे फिर अत्रिने सोम को प्रजापति का अधिकार दिया और दत्तात्रेयने योगमे तत्पर हो विषयोंका भोग किया और दुर्वासा माता पिता को छोड उत्तम व्रत धारणकर अवधूत हो पृथिवीपर जहां तहां घूमते तप करते रहे ॥

हे तात! दत्तात्रेय योगी थे परन्तु अनेक मुनिकुमार प्रीतिसे उनके सङ्ग लगेरहैं, यह देख दत्तात्रेय सङ्ग छोडने के अर्थ एक दिन तलावमे डुवमार वैठे तौभी उन सुन्दर मूर्ति दत्तको छोडकर वे मुनिकुमार अनत कहूं न गये

उसी ठौर रमेरहे और दिव्य एकसौ वर्ष बीतगये तब दत्ता-त्रेय सुचारु पीन नितंब दिव्य वस्त्र धारण किये भई एक युवा स्त्री को साथ लिये जलसे निकलकर बाहिर आये कि स्त्रीसङ्ग देख ये बालक मेरा सङ्ग छोडेंगे और मुनिपुत्रोंने भी जाना कि ये असङ्ग हो रहाचहते हैं, इससे फिर भी साथ न छोडा तब तो दत्तात्रेय उस नारी के साथ मद्यपान करने लगे, तो मुनिकुमारोंने गीत वाद्य वनिता भोग मदसंसर्गसे दूषित जानि उनका सङ्ग त्याग कर दिया परन्तु वे योगीश्वर थे मद्यपान औ स्त्रीसङ्गसे दोषी नहीं भये जैसे अग्नि वायु अपावन नहीं होते येतो साक्षात् भगवान् हैं बडे२ योगवित् योगी जन जिन की चिन्ता औ ध्यान करते हैं इति मार्कण्डेये दत्तात्रेयोत्पत्तिः सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

१८ अध्याय ॥

पुत्र बोला हे तात ! कुछ काल बीते जब कृतवीर्य स्वर्ग वासी भया तब पुरोहित पुरवासी महाजन औ मन्त्रीलोगों ने एकठठे हो उसके पुत्र अर्जुनको बुलाया और राजकर-नेके लिये पिताके सिंहासन पर बैठाय तिलक करने को कहा परन्तु अर्जुनने यह उत्तर दिया कि हम राज्य तो न करेंगे क्योंकि उस का उत्तरफल नरक है जिस हेत वनिज बैपार में बारहवां हिस्सा और गोपाल किसानों से छठयां हिस्सा जो राजा लेता सो चोरादिकों से रक्षा के निमित्त है और जो इससे अधिक लेय तो वह राजा

चोरधर्मी हैं और उस का सुकृत जाता है और षष्ठभाग लेकर जो यथोचित रक्षा न बनपडी तो राजा को नरक होता ऐसा पूर्व राजोंने नियम किया है इससे हम तपस्या कर अपनी मनवाञ्छित गति को प्राप्त होंयगे और यद्यपि मैं शस्त्रधारणकर अकेला पृथिवी भर की रक्षा करसकता हूं पर तौ भी मैं अपने आत्मा को पाप का भागी औ पर लोक का अभागी न करूंगा ॥

अर्जुन की यह निश्चय जानि मन्त्रियों के मध्यमें बैठे अति बुद्धिमान वृद्ध गर्गमुनि बोले कि हे राजकुमार! जो तुम नीति पूर्वक भली प्रकार से राज्य करने की इच्छा करते हो तो दत्तात्रेय के निकट जाय उन की आराधना करो वे समदर्शी योगयुक्त हो त्रिभुवन की रक्षा करते औ साक्षात् विष्णु का अवतार हैं जिन की सेवाकर इन्द्रने अपना पदपाया जिस को दैत्यों ने छीन लिया था तब अर्जुन ने पूछा कि किस प्रकार देवतोने आराधना की और कैसे दैत्योंने इन्द्रपद छीना औ फिर इन्द्रने पाया यह कहिये॥

गर्गमुनि बोले कि पूर्व समय देव औ दानवों का बडा दारुण संग्राम भया तहां दैत्यों का अधिपति जंभासुर था, और देवतों के सेनापति इन्द्र थे उन दोनों दलों को युद्ध करते दिव्य एकवर्ष बीता तब विप्रचित्ति आदि दैत्यों से देव हारमान जय की आश छोड बृहस्पति के निकट जाय सब समाचार कहे तो बालखिल्यों के साथ मन्त्रणाकर बृहस्पतिने कहा कि अब तुम सब दत्तात्रेय के निकटजाय उन की सेवाकर सन्तुष्ट करो और उनके लोक विरुद्ध

आचरण पर न जाइयो उनके वरदान से दैत्योंको सहज मे नाश करोगे यह सुन देवता दत्तात्रेयके आश्रम को गये और लक्ष्मी समेत उनको देखा कि गन्धर्व गान कर रहे औ आप मद पान मे आसक्त बैठे हैं देवतों ने प्रणाम किया और उत्तम भक्ष्य भोज्य आगे धरकर स्तुतकरने लगे तिस पीछे फिर देवता उनके उठने से उठते और बैठने से बैठते जब वे चलते तब पीछे होलेते थे।

इस प्रकार की सेवा से सन्तुष्ट हो एक दिन दत्तात्रेय जी बोले कि तुम सब क्या चाहते जो हमारी इतनी सेवा करते हो तब देव बोले कि हे मुनिशार्दूल! जंभ आदि दानवों ने हमसे त्रैलोक्य छीनलिया और यज्ञमे भाग भी वेई लेते और हम मारे२ फिरते सो आप हमारी रक्षा [illegible] के बधकी उपाय करिये कि जिससे आपके प्रसादसे हम फेर स्वर्गवास को पावें, दत्तबोले हे देव मदपान मे आसक्त उच्छिष्ट इन्द्रियों के बशीभूत हमसे शत्रु पराभव की इच्छा किस हेत करते हो तब देव बोले हे जगन्नाथ तुम अनघ हो तुम को कुछ दोष नहीं लगसकता सदा पूर्ण ज्ञान सच्चिदानन्द रूपहो फिर दत्त बोले कि यह तो तुमने सत्य कहा समदर्शी हमको ज्ञान है परन्तु निरन्तर स्त्री सङ्गसे दूषित हैं देवबोले कि यह तो निर्दोष जगत कीमाता हैं और जैसे सूर्य्य की प्रभा ब्राह्मण औ चण्डाल के संसर्ग से भी शुद्ध एकरूप रहती तैसे यह भी पवित्र एकरूप है।

गर्गबोले कि देवतों ने जब ऐसे कहा तब दत्तात्रेय हँस कर बोले कि जो तुमारा यही मत है तो युद्ध के अर्थ

असुरों को यहां ले आवो बिलम्ब न करो मेरी दृष्टिके पर-तेही चीण बल औ हततेज हो सब नाश को प्राप्त होजा-यङ्गे, गर्ग बोले हे राजकुमार यह सुन देवतोंने संग्रामके हेत दैत्यों को बुलाया और वे बडेरोष से देवतों पर तुरत आन पहुंचे औ लगे मारने तो देव सब दल के आश्रम को भगे और दैत्य भी उनके पीछे लगे तो जाय कर दत्तात्रेय जी को देखा कि बाम उरूपर साचात् लक्ष्मी बिराजमान मधुर बाणी बोलरही हैं यह देख दैत्यों ने उस स्त्री के लेनेकी अभिलाषा की और देवतों का पीछा छोड दिया फिर मोह से आतुरहो परस्पर कहने लगे कि जो यह स्त्री हमारी होय तो हम कृत कृत्य औ धन्य होंय इससे आवो हम सब इस को पालकी मे बैठायकर अपने घर को उठाय ले चलें ।

गर्ग बोले इतना कह दैत्य दानव उस सुन्दरी को शिबिका पर चढ़ाय और पालकी अपने शीस पर धर निजघर को लेचले तब दत्तात्रेय ने हंसकर देवतोंसे कहा कि अपनी बडी भाग्यसे तुम सब बढ़े जिसहेत लक्ष्मी सात स्थान उलंघन कर शिर पर चढ़ी तो अब नवयें स्थानको प्राप्त होगी, देवतों ने पूछा महाराज ! कौन स्थान मे प्राप्त हो लक्ष्मी पुरुष को त्याग कर देती हैं दत्त बोले कि लक्ष्मी पुरुषके पगमे आय स्थान देती और जङ्घामे प्राप्त हो वस्त्र धन देती गुह्यस्थानमे कलत्र औ क्रोड़मे सन्तान फिर हृदय मे मनोरथ सिद्ध करती और कण्ठमे आभूषण मुखमे कविता शक्ति शिर मे प्राप्तहो उस का त्यागकर फिर अन्य पुरुष

को प्राप्त होती हैं सो इनके शिर पर चढ़ी तो अब त्याग करैगी इससे तुम सब शस्त्रले शत्रुवों का वध करो और किसी बातसे मत डरो मैने इन दुष्टों को पहिलेही हततेज करदिया फिर परदारके स्पर्श करने से इनका बल बुद्धि पुण्य पराक्रम सब नाश हो गया है।

गर्ग बोले कि यह सुन देवता बिबिध अस्त्र शस्त्र धारण कर दैत्य दानवों को लगे मारने और शिरपर लक्ष्मीके निबाससे सब बिनाश को प्राप्त भये ऐसा हमने सुनाहै फिर लक्ष्मी आय कर दत्तात्रेय को प्राप्त भई और दैत्यों का नाश कर देवतोने आय दत्तात्रेय जी की बड़ीं स्तुत किया फिर उनसे बिदाहो प्रणाम कर देव सुखसे स्वर्गको गये और प्रथम की न्याईं आनन्द से रहने लगे हे राजकुमार तैसेही तुम भी अपने मनमाने अतुल बिभवके हेत शीघ्र जाय कर उनकी आराधना करो॥

इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे अष्टादशो-ऽध्यायः॥ १८॥

---

१९ अध्याय॥

ऋषिके बचन सुन राजा कार्तबीर्य दत्त के आश्रम को गये और गन्ध पुष्प फल मूल मधु आदि का अनयन औ अन्नादि साधन पादसंबाहन उच्छिष्ट मार्जन से भक्तिपूर्वक दत्त की सेवा नित करने लगे, तो एक दिन मुनि दत्तात्रेय प्रसन्नहो कार्तबीर्य से यह बोले कि मद्यपान स्त्रीभोग से

कुत्सित औ परोपकार में असमर्थ हमारी सेवा से तुमको क्या फल है इस से किसी और समर्थ पुरुष की आराधना करो कि तुम्हारा काम सिद्ध होय, जड़ पुत्र अपने पिता से कहता हैं कि हे तात! जब मुनिने ऐसा कहा तो राजा गर्ग के बचन स्मरण कर मुनि से प्रणाम पूर्वक करजोड़ यह बचन बोले कि हे देव निज माया का आश्रय लेकर हमको क्यों मोहित करते हो आप अनघदेव सबके जनक और यह परम पवित्र साक्षात देवी जगत की जननी है।

तब दत्तजी अति प्रसन्न हो बोले राजन जिससे तुमने मेरी गुप्त बात कही इस से मैं प्रसन्न हूं अब तुम मनभावता वर मांगो, देखो जो मनुष्य मद्य मांस गन्ध माल्य औ घृत युक्त मृष्टान्न की नैवेद्य मेरे आगे धर मनोहर गीत बाद्य से लक्ष्मीसमेत मेरी पूजा करते हैं तिन को हम धन पुत्र दारा आदि लोकके सब सुख दे कर सन्तुष्ट करते हैं और जो हमारा अनादर अपमान या निन्दा करते उनका नाश करते हैं, राजा बोले कि जो आप हम पर प्रसन्न हैं तो उत्तम ऋद्धि सिद्धि दीजिये कि जिससे हम प्रजापालन करते अधर्म को न प्राप्त होंय और सुसङ्गमे ज्ञान रणमे जय औ सहस्र बाहु तथा शैल बन भूमि आकाश पाताल मे अविहत गति अतिथिलाभ दानमे रति आपमे प्रीति और मेरे स्मरण मात्र से मनुष्यों को धन धान्य की वृद्धि कुमार्गी जनों को सुमार्ग शिक्षा और अधिक पुरुष के हाथ से अपना वध यही वर दान दीजिये, यह सुन दत्तात्रेय बोले

राजन् जो जो तुमनै वर मांगा सो सो सब तुमारी भक्ति औ मेरे प्रसाद से चक्रवर्ती तुम को प्राप्त होगा।

जड बोला हे तात यह सुन अर्जुन ने दत्त को प्रणाम कर निज पुर मे आय प्रजा मन्त्री औ महाजनों को बुलाय राज तिलक लिया और दत्तसे सिद्धिपाय उस बली हैहय वंशी ने डौंड़ी फिरवाय दी कि हमै छोड़ आज से जो कोई दूसरा शस्त्र धारण करैगा वह प्राणघात दण्ड पावेगा और मनुष्य के वध करनेवाले औ चोर भी प्राणदण्ड पावेंगे यह आज्ञा पाय उसके देशभरमे एक उसको छोड़ दूसरा कोई शस्त्रधारी नर न रहा वही ग्रामपाल पशुपाल क्षेत्रपाल औ द्विजपाल होताभया और चोर आग समुद्र आदि बिपद मे स्मरणमात्र से वह तुर्त उद्धार करता था उसके राज्य करते हुए धन धान्य से परिपूर्ण रहा और अर्जुन ने अनेक यज्ञ औ बडे२संग्राम किये इस प्रकार उसकी सिद्धि औ मान देख अङ्गिराने कहा कि कार्तवीर्य के बराबर यज्ञ दान संग्राम औ तपस्यासे दूसरा कोई राजा न भयाहै और न होगा।

हे तात। दत्तात्रेयसे जिस दिन उसने वरपाया था बरस बरस उस दिन वह दत्त के निमित्त बराबर यज्ञ करतारहा और उस की देखादेखी प्रजा भी वह यज्ञ करने लगी देखो चराचर के गुरु साक्षात् विष्णुस्वरूप दत्तात्रेय का जन्म औ माहात्म्य पुराणों मे कहा है और जो मनुष्य इनका ध्यान करते वे सकल सुखभोग कर इस संसारसागर के पार जाते हैं और जिनके ये वचन हैं कि भक्तिसे बैष्णवों को हम सदा सुलभहैं तो तिनकी

शरण कहो कौन कोई लेयगा देखो धर्मप्रचार औ अधर्म नाश के लिये जो अनादि निधन देव इस जगत का आप पालन कर रहे हैं हे तात! अब पितृ भक्त अलर्क, राजर्षिकी कथा औ उनके प्रति दत्तात्रेयने जो योग कहा सो सुनिये॥

इति मार्कण्डेये ऊनविंशति तमोऽध्याय:॥१९॥

२० अध्याय॥

जड बोला कि पूर्व समय शत्रुजित नाम राजा थे जिनकी अनेक यज्ञों में पुरन्दर सोमलता का रस पान कर परम सन्तुष्ट भये फिर उनके पुत्र अरिविदारण नाम जो बुद्धि बल औ सुन्दरता में गुरु शुक्र अश्विनीकुमार के समान भये और रूप शील बयस आचरण मे अपने सदृश अन्यर राज कुमारों के साथ आहार विहार अक्षबिनोद आदि नाना क्रीडा दिन रात करते और अस्त्र शस्त्र गज रथ अश्व आरोहण के अभ्यास मे सदा तत्पर रहा करते थे फिर अरिविदारण का शील स्वभाव औ क्रीडा देख समान वयस ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्य जनों के भी अनेक बालक अति प्रीति से खेलने के लिये आया करते थे॥

हे तात! ऐसे ही किसी समय अश्वतर नाम नाग के दो पुत्र नागलोक से भूतल को आयें और दोनो भाई सुन्दर तरुण मनोहर मूर्ति बिप्र के वेष से आयकर राज कुमार के सङ्ग प्रीतिपूर्वक नाना विनोद औ क्रीड़ा करने लगे, इसीतरह प्रतिदिन अरिविदारण की रीति प्रीति औ नीति से वशीभूत दोनो नागपुत्र दिन को नित आयाकरें

और राजकुंअर भी हास बिलास नाना बिनोद से प्रसन्न उन दोनों नागोंके बिना स्नान भोजन शयन मधुपान औ क्रीड़ा न करते थे और वेभी रातको रसातल में जाय राज कुमार के बिना कष्ट से रजनी विताय फिर भोर को आय निज मित्रों के साथ विहार करते थे ॥

यह देख एक दिन उनके पिता अश्वतर नाग ने पूछा हे पुत्र तुम दोनो भाईको मर्त्यलोकसे बड़ी प्रीति किस कारण से भई जो बहुत दिनोंसे रातछोड़ दिनमे तुमको इहां नहीं देखते हैं जब पिता ने यह कहा तो वे प्रणाम कर बोले कि हे तात ! शत्रुजित नाम राजा के ऋतध्वज नाम एक प्रसिद्ध पुत्र हैं जो रूप शील गुणसागर औ बुद्धिमान प्रियवादी नीतिनिधान हैं उनके शिष्टाचार औ प्रीति प्रणय नाना भोग विहार से वशीभूत हम दोनो भाई का मन क्या भूतल क्या नागलोक उनके विना कहीं प्रसन्न नहीं रहता है और उनके वियोग से रात को पाताल शीतल नहीं लगता परन्तु दिनको उनके साथ सूर्य्य की तापसे भी हमको परम आनन्द होती है ॥

यह सुन अश्वतर नाग उन का पिता बोला कि ऐसे पुण्यात्मा पुरुष का वह पुत्र धन्य हैं कि जिसकी पीठपीछे बड़ाई तुम ऐसे गुणी कररहे हैं हां इस संसार मे वेद शास्त्र पढ़े भये बहुतेरे नर निशील हैं और बहुतेरे मूर्ख सुशीलभी हैं परन्तु विद्या औ शील दोनो गुणसे परिपूर्ण कोइ विरला नर धन्यहै देखो जिस मनुष्यके गुणको मित्र औ परा क्रमको शत्रु सदा कहते उसी पुत्र से पिता पुत्रवान औ माता

सुआसिनी होतीहै और हे पुत्र कहोतो तुम दोनो भाई ऋत ध्वजसे कभी कुछ लिया है या उनके सन्तोषके लिये तुमने कोई उत्तम वस्तु दिया है कि नहीं ॥

जिस हेत इस संसार मे वही पुरुष धन्य है और उसी का जीवन सुजीवन औ जन्म सुजन्म है जिसके निकट से याचक विमुख न जाय और मित्रका मनोरथ दुर्बल न होय नहीं तो कूकर सूकर भी जनमभर निज पेटपाल अन्तको मरजाते हैं इससे मेरे घरमें सुवर्ण रत्न आसन यान वाहन जो वस्तु उनके योग्य हो निसन्देह भेंट देना उचित है और धिक्कार है उस पुरुष के जीवन को जो उपकारी मित्रों के साथ उपकार न करके अपने तई जीता जानता क्या भूल है कि आप दिन२ घटते जाते परन्तु धन घटनेकी भयसे अपयश औ छपणदोष अङ्गीकार करलेते और अन्तको पछताते भये रीते हाथों चले जाते हैं और सत्य तो यह है कि मित्रके साथ उपकार औ शत्रु पर अपकार रूप जल को जो मनुष्यरूप मेघ वरसता है उसको उन्नती होने को देवता सदा इच्छा करते हैं ॥

नागपुत्र बोले हे तात ! सकल वस्तु से परिपूर्ण ऋत- ध्वजके साथ कोई कौन उपकार करेगा कि जिनके घर अर्थीजन सदासिद्ध मनोरथ होते हैं और जो जो उत्तम पद औ रतन उनके घर हैं वे पातालमे हमारे यहां कहां फिर जो वस्त्र भूषण आसन वाहन उनके हैं सो अन्यत्र कहू नहीं हैं और राजकुमार ऋतध्वज बडे बडे ज्ञानी जनों की भी सन्देह मिटाय देते हैं हां उनका एक कर्त्तव्य कर्म जो ब्रह्मा विष्णु महेश छोड दूसरे को असाध्य है ॥

यह सुन नागराज बोला हे पुत्र! यदपि वह कर्म बड़ा कठिन है पर तौ भी इस असाध्य कार्य्य के अवण करने की इच्छा हम करते हैं देखो बुद्धिमान को क्या असाध्य है क्योंकि दृढ़ विश्वासी औ उद्योगी पुरुष देवत्व इन्द्रपद औ उनसे भी ऊंचे पद को प्राप्त होते हैं और जिन की इन्द्री औ मन वशीभूत हैं ऐसे निरालसी उद्यमी मनुष्यों को अज्ञात औ अलभ्य इहां और स्वर्गमें कुछ भी नहीं है देखो चलती हुई चींटी हजार कोसलों जाती और बैठे गरुड़ ठौर छोड़ डगभर भी डगर नहीं जासकते हैं भला देखो तो कहां भूतल औ कहां वैकुण्ठ का द्वार जिस को उत्तानपाद राजाके पुत्र ध्रुवने पाया इससे उन राजकुमार का जो काम है सो कहो जिसके सिद्ध होने पर तुम उनसे उऋण होउगे।

नाग पुत्र बोले हे तात! ऋतध्वज ने अपना पूर्ववृत्तान्त हमसे कहा है, जो उन की कुमार अवस्था मे भया था कि किसी समय उनके पिता राजा शत्रुजित के निकट गालव नाम ब्राह्मण एक उत्तम तुरंग अपने साथ लेकर आये और यह बोले कि राजन् कोई अधम दैत्य मेरे आश्रम में आय यज्ञ विध्वंस करता, और मेरे आश्रम संचारी छोटे जीवों को सिंहादि नाना हिंसकरूप धारकर मार२ खाता है और समाधि में ध्यानयुक्त हम को देख ऐसे आचरण करता कि जिनसे हमारा मन चञ्चल हो सावधान नहीं रहता है, हे राजन् उस को आप अपने कोपानल सें तुर्त भस्म कर सकते हैं और हम नहीं कर सकते क्योंकि उस कर्म के करने में बडे दुखसे सञ्चित की हुई तपस्या की हानि होने का बड़ा डर है।

हे राजन्! एक समय मैं उस दैत्य के उपद्रव से मनमारे दुखी बैठा था, कि इतने में स्वर्ग से यह घोड़ा आया और आकाशवाणी भई कि यह तुरङ्ग सकल भूमण्डल घूमकर भी श्रमयुक्त नहीं होता और सूर्य्यरथ के साथ चल सकता है सो तुमको मिला और आकाश, पाताल, जल थल, वन, पर्वत सर्वत्र अविहत गति है फिर जिससे यह समस्त भूमण्डल श्रम रहित भ्रमण करता, इस हेतु कुवलय इस नामसे लोक में प्रसिद्ध होगा और जो दुष्टदानव तुमको क्लेश देता है उस को भी शत्रुजित राजा के पुत्र ऋतध्वज नाम इस पर सवार हो कर मारेंगे और इसी अश्व के नाम से वे राजकुमार भी लोक में कुवलयाश्व नाम से प्रसिद्ध होंगे।

इसी हेत मैं आपके निकट आया हूं करे उस विघ्नकारी दानव का निवारण करिये इस लिये यह अश्व रत्न मैने आप को निवेदन किया अब आप अपने पुत्र ऋतध्वज को मेरे साथ जाने की आज्ञा दीजिये जिसमें मेरा औ आप का धर्म लोप न होय, राजाने ऋषिके वचन से निज पुत्र को अश्वपर चढ़ाय मङ्गल करवाय गालव ऋषिके साथ विदा किया और गालव भी कुमार को सङ्ग लेकर आनन्द से निज आस्रम को चले। इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे कुवलयाश्वचरिते विंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥

२१ अध्याय ।

नागराज बोला हे पुत्त्र ! नृपनन्दन ऋतध्वज गालव ऋषिके सङ्ग जायकर जो चरित किया हो२ अब सो सब कहो क्योंकि वह उन की कथा अति विचित्र औ मनोहर है तब नागपुत्त्र बोले कि हे तात ! राजकुमार ऋतध्वजने गालवमुनिके आश्रम में रहकर ब्रह्मवादी ब्राह्मणों के सकल विघ्न दूर किया फिर कुछदिन पीछे वीर कुवलयाश्व को वहां वास करते एक दिन मदके उन्मादसे उन्मत्त अनजान की नाईं वह अधम दानव पातालकेतु वराह रूप हो गालवमुनि को नितकर्म सन्ध्योपासन में तत्पर जान विघ्न करने औ डरपाने को आया तो उसको देखते ही मुनि के शिष्य एकबारगी चिल्लाय उठे और अपन२ [illegible] की ठौर छोड़२ कर जहां तहां भागे ।

यह देख राजकुमार तुर्त कुवलयाश्व पर सवार हो धनुष बाणले उस बराहरूप दुष्टके पीछे दौडे और वह भागचला तब कुमारने अर्द्धचन्द्राकार एक बाण कान पर्य्यन्त खैंचकर उसे मारा तो बाणके लगते ही वह बराह अपने प्राणरच्छा के हेत बडे गहन वन की ओर को चला और राजपुत्त्र भी उसके पीछे लग चले, हे तात! वह हजार योजन लों भागता ही चला गया पर कुमारने उस का पीछा न छोड़ा तब बराह एक अन्धकूप के समान भयानक महागर्त पाताल द्वार में लघुतासे कूदपड़ा और कुमार भी घोड़ासमेत उसके पीछे ही उसमे कूदे परन्तु उसको वहां न पाय आप पाताल मे जायकर उजेला देख अति आश्चर्य्य को प्राप्त भये ।

फिर वहां फिरते घूमते ऋतध्वजने एक नगर देखा [illegible]

सोने के महलोंसे जगमगाय रहा मानो इन्द्रपुर है कुमार उस पुरमें प्रवेशकर श्रीशोभादेख अवाक हो रहे और बड़ी विलम्ब लों वहां घूमते रहे पर कहीं एक भी मनुष्य या कोई और जीवजन्तु न नजर पड़ा फिर उस सूने नगरमें जाते २ एक स्त्री देखपड़ी तो कुमारने उससे पूछा कि तुम किस की कौन हो और किसने कहां किस कामके लिये पठाया है इनको यह बात सुन उसने उत्तर तो कुछ भी न दिया परन्तु एक बडे महल के ऊपर को चढ़गई राजकुमार भी घोडे को एक ओर बांध उसके पीछे आप भी उसपर चढ़ चले तो ऊपर जायकर देखा कि उस उत्तम भवनमें सुवर्ण की शय्यापर नख शिख सुन्दर औ सुकुमारी एक कुमारी कन्या विराजमान है।

ऋतध्वजने उस विमल अनङ्गलता को देख जाना कि यह रसातल की देवता है और सर्वाङ्ग सुन्दर इनको देख उस ने भी जाना कि ये रतिपति या ऋतुराज हैं फिर लज्जासे उठ खड़ी भई चञ्चलचित्त हो आपसेआप इनके वश भई और मनमें कहने लगी कि ये देव या गन्धर्व कि विद्याधर हैं ऐसी चिन्ताकर उसांसले भूतलमें बैठ मूर्च्छागत भई फिर कुमार भी उस की वह दशा देख मोहित हो समझाने लगे कि मत डरो२ इतने में जिस को प्रथम महलपर चढ़ते देखा था, वह स्त्री अति व्याकुलमन आयकर तालव्यजन से वायु करने लगी तब ऋतध्वजने उससे पूछा कि इन की मूर्च्छा का कारण क्या है यह सुन लाजभरी वह मूर्च्छित बाला बोली कि सखी तुम इनको हमारा सकल वृत्तान्त कह सुनावो।

तब वह सखी उसके मोहका कारण जो कुमारके देखनेसे

भया था कहने लगी कि विश्वावसु नाम एक गन्धर्वराज हैं तिन की यह कन्या औ मदालसा इसका नाम है और वज्रकेतु दानव का पुत्र पातालकेतु नाम पातालमें रहता है एक दिन यह उपवन को विहार करने गई थी तो वह दुष्ट दानव मेरे विना इसे अकेली जान तमो मई मायाकर इसको हरलाया है और अगली तेरस के दिन इसके साथ अपना विवाह करेगा पर इसके योग वह किसी प्रकारसे नहीं है जैसें शूद्र वेदके योग नहीं है और बीतीभई कल्हको यह विचारी बाला अपने प्राणघात करनेपर तयार थी पर सुरभी नाम देवधेनु ने आयकर कहा कि यह अधम दानव तुमको न पावेगा तुम अपना जीवन वृथा क्यों देती हो सुनो जो मनुष्य मर्त्यलोकसे आयकर इसको बाण मारेगा सोई तुमारा स्वामी थोड़े दिनमें होगा।

और मै बिन्ध्यगिरि की कन्या कुण्डला नाम इसकी सखीहूं और पुष्करमाली के साथ मै व्याही थी, परन्तु जबसे मेरे स्वामी पुष्करमाली को शुंभ नाम दैत्यराज ने बध किया तबसे मै अपना परलोक सुधारने के लिये दिव्यगतिसे तीर्थयात्रा किया करती हूं और बराहरूप धारी दुष्ट पातालकेतु को किसीने मुनिरक्षाके कारण बाण मारा है यह देख औ सुरभी के वचन सुरत कर मै शीघ्र इहां को आई हूं और इसके मोह का कारण सुनिये कि देव के समान सकल गुण खान तुमारे दर्शन मात्रसें इसके मनमे प्रीति उपजी परन्तु भार्य्या तो दूसरे की होगी जिसने बराहरूप पातालकेतु को बाणमारा है इसहेत यह मूर्च्छा को प्राप्त भई कि तुमारे में तो इसका मन अनुरागी

है और भर्ता दूसरा मिलेगा क्योंकि सुरभी के वचन अन्यथा नहीं हैं जबलों यह जियैगी तबलों दुखभोग करैगी।

और मै इस की प्रीति से दुखित इहां आई हूं क्योंकि सखी और निजदेहमे कुछ अन्तर नहीं होता है जो यह अन्य माने पुरुष को पति पावेगी तो मै निचिन्त हो तप करोंगी और तुम देव दैत्य गन्धर्व या नागोंमे कौन हो औ किस हेत इहां आये क्योंकि न मनुष्य की ऐसी देह होती और न इहां आने की नर मे सामर्थ है जैसा मै ने यह सकल वृत्तान्त आपसे सत्य२ कहा तैसाही आप भी अपने समाचार यथार्थ कहिये तब कुव-लयाश्व बोले कि हम राजा शत्रुजित के पुत्र हैं पिता की आज्ञासे तपस्वी जनोंकी रक्षाके लिये गालवमुनि के आश्रम को आये इतने मे कोई दुष्ट वराहरूप मुनि की तप[illegible] भ[illegible] करने को आया तो मै ने उसे एक बाण मारा, और वह भागा मै भी उसके पीछे लगा तो वह एक अन्धकूपमे कूदा और मैभी घोड़े समेत उसमे फांद पड़ा फिर अश्वपर सवार अकेला मै उस अन्धेरे में भटकता भया इस उजाले मे आया तो तुमको देखा और पूछा पर तुमने कुछ उत्तर न दिया तब मै तुमारे पीछे इस घरके ऊपर चढ़आया हूं यह मै ने सब सत्य २ कहा है हे कुण्डले! न मै देव हूं न मनुष्य हूं देवादिक सब मेरे पूज्यपात्र हैं तुम इसमे कुछ सन्देह न मानो।

नागपुत्र बोले तात! तब तो वह लाजभरी कुमारी सखी का मुख देख जड़सी रहगई फिर कुण्डला बोली हे वीर! आपने सब सत्य कहा पर इस गन्धर्व कुमारी का मन अन्य पुरुष से [illegible]र न होगा क्योंकि चन्द्र को कान्ति सूर्य्य को प्रभा धन्य पुरुष

को लक्ष्मी उत्तम को शान्ति उदार को कीर्ति सुजन को प्रीति औ दुष्टको भीति अवश्य प्राप्त होती हैं क्याँदेवधेनु सुरभी के वचन मिथ्या होंगे आप ही ने उस अधम दानव को मारा है इससे अब ऐसा करोकि यह भाग्यवती कुमारी तुमारे ही साथ विवाह सम्बन्ध को प्राप्त होय और यह काम तो विधाताने पूर्व्वंहीं निर्माण कर राखा कि जिससे यह घटना घटी है।

नागपुत्त्र बोले तात! राजकुमारने उत्तर दिया कि मै पराधीन हूं तब उसने तुम्बरु नाम गन्धर्व्व का स्मरण किया जो उसके कुल का पुरोहित है वह मदालसा की प्रीति औ कुण्डलाके गौरव से समिध कुश आदि विवाह की सब सामग्री लिये भये तुर्त आया और पावक प्रगट प्रचण्डकर मङ्गलाचार पढ़ वेदविधि से मदालसा का विवाह करवाय फिर तपस्या करने [illegible]म को पलट गया तब कुण्डला बोली सखी! इनके साथ तुमारा संयोग देख मै कृतार्थ भई और अब थिरचित्त हो तप तीर्थव्रत कर पवित्र हूङ्गी कि जिसमें फिर ऐसी संसारी दुरवस्था न भोगने पड़े।

चलती वार सखी के स्नेह औ विरह से व्याकुल कुण्डला राजपुत्त्रके प्रति बोली कि आप सरीखे सुजनों को माहात्मा पुरुष भी उपदेश देनेके योग्य नहीं हैं तो फिर मेरी स्त्रीजाति की क्या वात है इससे मै तुमको उपदेश नहीं देती परन्तु स्मरण कहै। हूं कि आप दया से स्नेहयुक्त चित्त हो इस विचारी सुकुं तुमने गन्धर्व्वकुमारी का भरण पोषण लालन पालन औ किया इससे भांतसे करना क्योंकि भार्य्या का भरण पोषण स्वामी सारी पुण्यसे करते चले आये और अर्थ धर्म काम की सिद्धिमें क्या फल

सहाय करती हैं और स्त्रीपुरुष परस्पर जो वशीभूत औ प्रीति संयुक्त रहैं तो अर्थ धर्म काम ये तीनो बने रहैं देखो भार्य्याके विना पुरुष को धर्मादि नहीं प्राप्त होसकते क्योंकि वे तीनो स्त्रीके आधीन हैं तैसे ही भर्त्ताके विना स्त्री भी धर्मादि के साधनमे समर्थ नहीं है हे नृपनन्दन! देव पितर अतिथि पूजन भी स्त्रीके विना पुरुष नहीं करसकता हैं और देखो नाना उपाय से उपार्ज्जित और प्राप्त भये धनको जो पुरुष निज घरमें लाया भी तो भार्य्या के विना वह नष्ट होता और कुभार्य्या के सङ्गमें भी वड़ी हानि होती है देखो पितरोंको सन्तान प्रगट कर और अन्नादिके पाकसे अतिथि जनोंको औ पूजासे देवतों को पुरुष सन्तुष्ट कर सकते हैं इस हेत स्त्री की रक्षा पुरुष सदासे करते आये हैं इतना मैने तुम दोनोसे कहा अब मनमाने इष्ट देशको जाती हूं और राजन् तुम इसके साथ धन पुत्त्र आयुर्दा औ सुखसे भरपूर हो दिन दिन वढ़ो।

नाग कुमार बोले कि हे तात! इतना कह कुण्डला निज सखी मदालसाके गले मिल औ राजकुमार को प्रणाम कर आकाश मार्गसे तीर्थ को चली गई और ऋतध्वज मदालसा को अश्वपर चढ़ाय पातालसे निजदेश चलने को तयार भये न मं देव इतने मे दानवोंने जाना और परस्पर पुकारकर कहने इसमे कुछ कि जो कन्यारत्न पातालकेतु लाया था, उसको एक नागपु दुष्टांसे हरेलिये जाता है यह शब्द सुन गदा खड्ग सखी का सुख दे॰ आदि नाना शस्त्र संयुक्त निजसेना साथ लेकर आपने सव सत्य दुर्त आनदक्कंरा और खड़ा रह२ कहां जाता िर न होगा कहते हुये ऋतध्वज पर शस्त्रों कीवर्षा करने लगे

राजकुमारने भी अपने बाणों से उनके सब शस्त्र काट गिराया और एकक्षणमें कुमारने उनके छिन्नभिन्न शस्त्रोंसे पाताल तल भर दिया फिर त्वाष्ट्र नाम अस्त्र दानवों पर चलाया तो पातालकेतु समेत वे सब दैत्य जैसे कपिल देवके तेजसे राजा सगरके साठहजार सन्तान भस्म भये थे तैसे ही सबकेसब दानव उस अस्त्रसें क्षणमात्रमे भस्म हो गये।

तिस पीछे राजपुत्र ऋतध्वज स्त्रीरत्न समेत अश्वपर सवार हो निजपुर को आये और पिताके चरणों को प्रणाम कर वह सकल वृत्तान्त जो पाताल गमन कुण्डलाका दर्शन मदालसा की प्राप्ति दानवों के साथ संग्राम औ उन सबका बध अपना पुनरागमन कहा यह सुन राजा शत्रुजितने पुत्रपर अति प्रसन्न हो कण्ठ [illegible] गाया और कहा कि हे पुत्र! सत्पात्र तुमने [illegible] उद्धार औ मुनिजनों की रक्षा किया देखो जो मेरे पूर्व-पुरुषोंने उपार्ज्जन किया तिस को मैने केवल बंचाय कर राखा और तुमने तो बहुत बढ़ाया है औ इस संसार में धन जन यश औ बल प्रताप जो कुछ पिता पैदा करै तिस को जोंकात्यों राखै वह मध्यम पुरुष है और जो उसमें अपनी सामर्थ्य से कुछ अधिक करै वह उत्तम नर है और जो उसमें भी कम [illegible] तिसको अधम कहते हैं, फिर जो एक वारगीं सर्वनाश कर वह नर नरक नपुंसक समान जीवतप्रेत औ मुर्दोके तुल्य है।

हे पुत्र! मैने तो ब्राह्मणों की रक्षामात्र की पर तुमने रक्षा औ पाताल गमन असुर नाश यह अधिक किया इससे तुम उत्तम पुरुष हो और तुमसे पुत्र होने से हमारी पुण्य-वानोंमे गिनती भई देखो मनुष्य उस पुत्रसे प्रीतकर क्या फल

पाले हैं जिसने ज्ञान दान औ प्रतापसें पिता को अधिक प्रसिद्ध न किया और धिक्कार है उसके जन्मको जो पिता के नामसें लोक मे जाना जाता है और जिस पुत्रसे पिता प्रसिद्ध होता उसी का जन्म सुजन्म है जो निज कर्म से प्रसिद्ध हो तें ते धन्य हैं और जो पितृ पितामह के नामसे प्रसिद्ध वे मध्यम हैं और जो मातृपक्षसे प्रसिद्ध सो अधम हैं इससे हे पुत्र तुम धन पुत्र बल यश सुख से दिन२ बढ़ो और इस गन्धर्व कन्या से तुमारा वियोग न होय इस प्रकार बार२ पिताने प्रियवचनसे आशीर्वाद दे बधूसमेत सुतको निवासस्थान जाने की आज्ञा दी राजकुमार मदालसाके साथ निजपुरमें विहार करते भये और गन्धर्व कन्या भी नित प्रति भोर को उठ सास ससुरके चरणों को प्रणामकर फिर निज पतिनो सङ्ग वन उपवन नदी निर्झर मे जाय रमा रामके समान रमती रही

इति मार्कण्डेये मदालसा विवाहो नाम एकविंशोऽध्यायः ॥२१॥

२२ अध्याय।

नाग नन्दन बोले हे तात! कुछ काल बीते एक दिन राजा शत्रुजित ऋतध्वज सें फिर बोले कि पुत्र साधु औ ब्राह्मणों की रक्षा के लिये कुवलय नाम अश्वपर सवार हो नितप्रति भोर को पृथ्वीपर्य्यटन कर आया करो और उन की कुशल देखने मे सदा तत्पर रहो क्योंकि दुष्ट पापरूप हजारों दानव हैं तो जिसमे उनसे मुनिजनों को कोई बाधा न होय ऐसी चेष्टा करना यह पिता की आज्ञा पाय राजकुमार प्रति

दिन भोर ही अश्वपर चढ़ दोपहरमें सारी पृथ्वी भ्रमण कर फिर आय पिता के चरणों को प्रणाम करते और बाकी दिन औ रात मदालसाके साथ विहार करते थे।

एक दिन भूमण्डल भ्रमण करते२ यमुना तटपर आयकर देखा कि पातालकेतु का छोटा भाई तालकेतु नाम दानव बड़ा मायावी औ छली एक उत्तम आश्रम बनाय मुनिका वेशकर बैठा है राजकुमार को देख पूर्व बैर का स्मरण कर बोला कि हे राजपुत्त्र! तुमसे हमारी कुछ प्रार्थना है सो जो तुमारी इच्छा हो तो पूरी करो क्योंकि तुमसे धार्मिक सत्यवादी पुरुष मुनिजनों की आज्ञा को भङ्ग नही करते हैं कुमार बिन जाने उस कपटमुनिके वचनपालन करने पर तयार भये और पूछा कि [illegible] क्या बात है जिस को आप हमसें चाहते हैं [illegible] सेवक से कहिये।

तब कपटमुनि बोला कि हमें धर्म औ प्रजाके हित बरुणदेव की यज्ञ औ सुवर्ण की प्रतिमा बनाय पूजन करना है इस हेत आप अपने गले का आभूषण दीजिये और जबलों मैं जलके भीतर जाय प्रजापुष्टिके हेत वेद मन्त्रसे बरुणदेव की स्तुतिकर फिर शीघ्र पलटके न आउं तबलों आप इस मेरे आश्रम की रक्षा करिये जब कपटमुनिने यह कहा तो कुमार ने प्रणामकर कण्ठभूषण उतार के सौंप दिया और कहा कि आप निःसन्देह गमन कर अपना काम सिद्ध करिये मै आप की आज्ञाके अनुसार आश्रमके निकट रहूंगा और मेरे रहते कोई उपद्रव तथा हानि न होने पावेगी।

नागसुत बोले कि हे तात! जब ऋतध्वजने यह कहा

तो वह कपटमुनि यमुनामे पैठ डूब मार गया और कुमार उसकी कुटी की रक्षामे तत्पर रहे फिर वह मायावी दुष्ट दानव भाई पातालकेतु का पलटा लेने के लिये जलके भीतर से मुनिवेष वनाय राजकुमारके कुटुम्ब औ मदालसा के निकट जाय यह बोला कि वीर ऋतुध्वज मुनिजनों की रक्षा करते भये मेरे आश्रम के समीप आये तो किसी दैत्यने मारा कर उनकी छाती मे शूल मारा वडे दुःख की वात है कि मरतीवार कुंअरने यह कण्ठभूषण देकर हमै इहां पठाया और उनकी लोथ शूद्रतापसों ने यमुनातीर जलाय दिया और आंसूढारते हींसते भये उनके घोड़े को वह दुष्ट दैत्य लेगया यह महाकष्ट कठोर हृदय मैंने अपनी आंखों देखा अव जो करनाहो करिये और प्रतीतिके लिये यह उनका कण्ठभूषण लीजिये हम तपस्वी को सोना से क्या काम है।

नगसुअन वोले कि इतना कह कर और वह आभूषण भूमिमें धर आप जहांसे आया था वहां को फिर चला गया इहां कुमारके माता पिता औ वंधु अनाथ की नाई विलाप करते२ मूर्छा खाय भूमिपर गिर पडे फिर सचेत हो राजा औ राजमहिषी महा कष्टसे विलाप कलाप करने लगे और मदालसाने वह पतिका कण्ठभूषण देख औ दैत्यसे निज नाह कावध सुन अपने प्रिय प्राण तुर्त त्याग कर दिया फिर तो पुरमे पुरवासियोंके रोदनसे हाहाकार मचगया तव स्वामीके वियोग से मरी भई मदालसा को देख राजा मन सावधान कर कुटुम्ब जनसे वोले कि रोदन मत करो यही गति हमारी औ तुम सब की भी एक दिन होगी।

और देखो इस संसार में जितने नेह नाते औ सम्बन्ध हैं सो सब मिथ्या कोई भी सत्य नहीं तो क्या पुत्र का शोच करैं और क्या पतोहू का औ विचारकर देखो तो कृतार्थरूप दोनो क्या शोच के योग हैं क्योंकि नित मेरी सेवामे निरत मेरे बचनसे मुनि रक्षामें तत्पर मेरा पुत्र जो मृत्यु को प्राप्त भया सो वह क्या बुद्धिमानोंके निकट शोच के योग है और दे[illegible] तो अवश्य ही जाना है फिर जो उस[illegible] पुत्रने ब्राह्मणों के काममे त्यागा तो इससे और अधिक उपकार औ फल क्या है और यह जो सत्कुल की कन्याने स्वामीके साथ प्राण दिया सो अति उत्तम औ उचित किया क्योंकि स्त्रीको पतिसे भिन्न और कोई देवता नहीं है हां हमको औ हमारे बन्धुजन को [illegible] दयावान् जनोंको तब शोच होता जो स्वामी से वियोगिनी होकर यह जीवती रहती इसने तो भर्ता का बध सुनते ही तुर्त शरीर छोड़ स्वामीके साथ गमन किया तो फिर कैसे शोचके योग है देखो स्वामीके वियोग का दुख इसने कुछ भी न जाना भला जो स्वामी इह लोक परलोक मे सकल सुख का देनहार उसको कौन अधम नारी मनुष्यकर मानेगी देखो पुत्रने ब्राह्मणोंके अर्थ प्राण देकर अपना परलोक सुधारा औ हम सब को कृतार्थ किया है।

नाग सुत बोले कि तिस पीछे ऋतध्वज की माता बोली हे राजन्! ऐसी प्रीति हमको न कभी माता पिता से भई और न भगिनी भ्रातासे कि जैसी ब्राह्मणों की रक्षा करने मे पुत्र का बध सुन कर भई है देखो जो मनुष्य व्याधिग्रस्त हो मरते औ उनके कुटुम्ब दुखसे रोवते तिन की माता वृथा

पुत्त्रवती हैं और जो संग्राममें निडर लड़ते औ गो ब्राह्मण दीन की रक्षामें शस्त्रसे हत होते वेई इस पृथ्वीपर धन्य हैं उन्ही के जन्मसे पिता पुत्त्रवान् औ माता वीरस्त्र कहावती है और उन्ही के जन्मसे स्त्रियोंका गर्भक्लेश सफल होता नहीं तो विष्ठा मूत्र कृमि के समान भये तो क्या फल है वे केवल माता ही को क्लेश नहीं देते वरन कुल औ मातृयौवन कुठार जबलों जीते सारे कुटुम्बको दुख देतें हैं ।

तिसपीछे राजाने पुरके बाहर जाय पूत औ पतोहूका संस्कार कर तिलाञ्जली दिया और इहां तालकेतु भी मुनिवेश से यमुना जलके बाहिर आय राजपुत्त्रके प्रति प्रणयपूर्व्वक मधुर वचन बोला कि हे भूपाल! आपने हमको कृतार्थ किया और हमारे अर्थ बड़ा कष्ट सहा अब निज भवन को प्रस्थान करिये अब हम तुमको धन्यवाद देते हैं कि इहां तुमारे रहने से हमारी अनेक दिनों की अभिलाष जो महात्मा वरुणदेव की यज्ञ करने को थी सो पूरी भई यह सुन राजकुमार मुनि को प्रणामकर घोडे पर सवार हो पिताके पुरको चले ।

इति मार्कण्डेये मदालसा वियोगे द्वाविंशोऽध्यायः ॥२२॥

२३ अध्याय ।

नागपुत्त्र बोले कि हे तात! राजपुत्त्र ऋतध्वज माता पिता और मदालसाके देखने की अभिलाष से शीघ्र निज पुरमें आनपहुंचे और नगरमें पैठते प्रथम तो पुरवासीजनों को व्याकुल औ उदास देखा फिर तुर्त ही मन प्रसन्न हंसते देख

और कितनों को अहो भाग्य कहते सुन फिर निकट आय आय अंकमाल दे दे औ गलेसे मिल असीस करते कि हे कल्याणरूप! तुम चिरंजीव रहो और हम सब को औ अपने माता पिताके मन को सदा आनन्द बढ़ावो यह कहते आगे पीछे घेरेभये पुरवासियोंके बीचमें चले चले आनकर पिताके द्वारपर पहुंचे फिर उन सब को विदाकर आप अपने बाप के घरमें पैठे तो इन को देख माता पिताने कण्ठ लगाय आशीर्वाद दिया फिर ऋतध्वजने पिता को प्रणामकर अति विस्मित मन हो पूछा कि यह आश्चर्य ऐसा क्या है पिताने सब समाचार कह सुनाये जो कपट मुनि तालकेतुने किये थे।

तब तो राजपुत्र पिताके मुखसे वह कथा औ प्राणप्रिया मदालसा [illegible] मरण सुन लाज औ शोकसिन्धुके सङ्गमसें मग्न हो [illegible]में चिन्ता करने लगे कि हाय वह बाला रूपविशालाने मेरा मरण सुन अपने प्रियप्राण को त्याग करदिया और धिक्कार है निठुर हृदय हम को कि जिसके अर्थ वह विचारी सुकुमारी मृगनैनी मृत्यु को प्राप्त भई और उसके विना अब मैं निर्दय निर्लज्ज कठोर हृदय अबलों जीवता हूं फेर अपने मन को थाम औ मोह को दूरकर उसांस ले मन मनसे कहने लगे कि जो वह मेरे लिये मरी तो मै भी उसके अर्थ अपने प्राण त्याग करूं तो इससे उसका क्या उपकार भया और यह बात भी स्त्रीजनोंके योग्य है और जो दीन हो रोदन करैं तो यह भी मेरे योग नहीं क्योंकि हम पुरुष हैं और शोकसे मलिन वेष धारणकर जड़वत् हो रहैं तो शत्रुजन पराभव करैंगे और हम को तो शत्रुवों का नाश औ प्रिया

की आज्ञा का पालन करना उचित है क्योंकि जीवित उनके आधीन है उस को हम कैसे छोड़ सकैं परन्तु अब हमको यह करना उचित है कि अन्य स्त्रीभोग को त्याग करैं पर वह भी उस का कुछ उपकार नहीं हैं किन्तु अवश्य हो करना पड़ा जिस लिये उपकार अपकार दोनों से वाहिर है भला जिसने मेरे अर्थ प्राण दिये उसके वास्ते इतना थोड़ा भी तो करैं नागनन्द्दन बोले कि यह ठीक ठहराय उसको तिलञ्जली देकर फिर ऋतध्वज बोले कि जो वही मदालसा भार्य्या न मिलेगी तो इस जन्ममे मेरी अन्य कोई स्त्री न होगी और उस गन्धर्व कन्या को छोड़ मै दूसरी नारी से भोग न करूङ्गा यह मैने सत्य प्रतिज्ञा किया नागनन्द्दन बोले हे तात! उस गन्धर्वकुमारीके विना स्त्रीसुख छोड़ राजकुमारको तुल्य शील वयस निज मित्रोंके साथ नाना क्रीड़ा औ विहार करते रहते थे तो हे तात! यही इनका परम कर्तव्य काम है जो मदालसा की पुनर्वार भेंट होना सो किस की सामर्थ जो कराय सकै यह वात ईश्वरों को भी असाध्य है तो दूसरे किसी की क्या गिनती औ सामर्थ्य है जो कराय सकैं।

यह पुत्रों की वात सुन नागराज एकक्षण भर तो मौन रहे फिर सोच विचार हंसकर बोले कि पुत्र देखो जिस काम को अशक्य जान मनुष्य नहीं करते हैं तो उस मे उद्योगहानि से वड़ी हानि होती उचित यह है कि अपने वल पौरुष भर यत्न करैं क्योंकि काम की सिद्धि दैव औ पौरुष के आधीन है तिस हेतुसे हम तपस्या मे तत्पर हो इस वडे काम में ऐसी उपाय करैंगे कि जिससे यह काम शीघ्र सिद्ध होय जड़ बोला

कि इतना कह नागराज हिमालय पर्व्वतके सुचावतरण नाम तीर्थमें जायकर अतिकठिन तपस्या ठान त्रिकाल स्नान इन्द्रियों का संयम औ आहार का नियम करत सरस्वती देवीमें मन लगाय स्तुति करने लगा, जब नागने सरस्वती की ऐसी बड़ी स्तुत करी तो विष्णु की जिह्वा सरस्वती प्रगट हो नागसे बोली हे कम्बलके भाई! अश्वतर नाग हम तुमारेपर प्रसन्न हो वर देती हैं, जो तुमारी इच्छा होय सो मनवाञ्छित वर मांगो तब नाग बोला कि जो भगवती आप प्रसन्न होय वर देती है तो हम औ हमारे भाई कम्बल की सहाय करो कि सकल स्वर ताल अङ्ग समेत गान विद्या हम दोनो भाईको होय सरस्वती प्रसन्न हो बोली तथास्तु सप्तस्वर तीन ग्राम एकईस मूर्च्छना उञ्चास ताल और जो कुछ गान विद्याके अङ्ग हैं सब सहित उत्तम रूप तुम औ तुमारे भाई मेरे प्रसादसे गान करोगे और कुछ अधिक भी जानोंगे सो सुनो कि चार प्रकार पद औ तीन प्रकार लय तीनप्रकार यति और तोद्यआदि अशेष सङ्गीत मेरे प्रसाद से जानोगे तुमारे समान मर्त्यलोक पाताल औ देवलोकमें गान विद्या निधान कोई दूसरा न होगा।

जड़ बोला कि इतना कह सरस्वती देवी तो अन्तर्धान भई, और भगवती के प्रसाद से कम्बल औ अश्वतर दोनो भाई गान विद्यामें ऐसे निपुण भये कि जैसा सरस्वतीने कहा था, तिसके पीछे पर्व्वतराज कैलाशके शिखरपर विराजमान भगवान् कामारि त्रिपुरारि शिवजी की आराधना करने को संध्या सवेरे मध्यान औ अर्द्धरात्रिमें भक्तियुक्त तन्मय हो दोनो भाई तन्त्रीलय सहित सप्तप्रकार का गान करने लगे, फिर

बहुत काल पीछे उनके गान औ स्तुतिसे प्रसन्न हो भोलानाथ बोले कि अब हम को सन्तुष्ट जान तुम अपने मनमाना वर मांगो सोई हम तुमको देयगे यह सुन भाई समेत अश्वतर ने प्रणामकर कहा कि हे दयाल त्रिलोचन! जो आप हमपर प्रसन्न हैं तो यह अभिलषित वर हम को दीजिये कि राजकुमार ऋतध्वज की मदालसा नाम मृत पत्नी उसी रूप शील औ अवस्था से मेरी कन्या होय औ पूर्व्वजन्म का सकल वृत्तान्त उसको स्मरण रहै तब महादेवजीने कहा एवमस्तु हे पन्नगराज! जो तुमने मांगा सो सब निःसन्देह मेरे प्रसादसे वैसही होगा और सुनो कि जब श्राद्धका समय आवे तो तुम सावधान हो श्राद्धकर मध्यम पिण्डको भोजन करलेना फिर उसके खानेके पीछे तुमारे मध्यम फणासे मदालसा प्रगट होगी यह वर पाय शिवजी को प्रणामकर सफल मनोरथ दोनो भाई अपने घर रसातल को आये और अश्वतर नागने त्रिपुर हर की आज्ञानुसार श्राद्धकर मध्य का पिण्ड खाय उस अपने मनोरथ का स्मरण किया तो नागके मध्यफणासे वह गन्धर्व्व कन्या ज्योंकीत्यों प्रगट भई और यह बात भुजङ्गराजने किसीसे नहीं कहा फिर उस कन्या को अपने अन्तःपुर मे स्त्रियोंके बीच छिपायकर यत्न से रख छोड़ा।

नागनन्दन दोनो भाई नितप्रति भूलोकमे जाय ऋतध्वज के साथ बिहार किया करते थे, कि एक दिन नागराज प्रसन्न मन निज पुत्त्रोंसे बोला कि जो मैने तुमसे पूर्व्व कहा था सो क्यों नहीं करते हो कि अपने परम उपकारी राजपुत्त्र ऋतध्वज को मेरे निकट क्यों नहीं लाते जब प्रीतियुक्त पिताने

ऐसे कहा तो वे दोनो भाई तुर्तही मित्रके पुर को गये और राजकुमार के साथ विहार करने लगे फिर प्रसङ्ग पाय राजपुत्रसे प्रणाम पूर्व्वक यह बोले कि आप कृपाकर एकबार हमारे भी घर चलिये तो परम अनुग्रह है यह उनकी बात सुन ऋतध्वजने कहा कि यह घर भी तुमारा ही है धन जन वाहन वस्त्र आभूषण जो कुछ हमारे है सब आपका है जो जिस को चाहो वेखटक देडालो जो हमपर सांची प्रीति रखतें हो, देखो विधाताने हम को अपनी दया से सब कुछ दिया पर इतनी हीं प्रवञ्चना किया कि जो तुम दोनो भाई इस मेरे घरपर ममता नहीं आनते न मेरी वस्तुको अपनी कर जानने हो इससे जो आपके जीमें मेरा प्रिय औ अनुग्रह करना उचित [illegible] होय तो हमारे धन जन औ भवन पर ममता [illegible] और जो कुछ हमारा सो आपका औ आपका सो हमारा आप हमारे बाहरी प्राण हैं और तुम को हमारी शपथ है कि फिर कभी ऐसे भेद भावके वचन न कहना।

तब कोमल हृदय हो कुछ प्रणय प्रीतिके कोपसे नागसुत बोले कि हे मित्र! ऋतध्वज जो आपने कहा सो सत्य है इसमे कुछ भी सन्देह नहीं और हमारे भी जीसे ऐसा ही है यह अन्यथा न मानिये परन्तु हमारे पिताने आपके देखने की इच्छाकर हमसे कहा है कि हम कुवलायश्वके देखने को बार२ मन करते तो तुम उन को एकवार क्यों नहीं लेआते हो यह [illegible]नते ही ऋतध्वजने आसनसे उठ पृथिवीपर शीसधर जैसी आज्ञा तात की कहकर प्रणाम किया और बोले कि आज हम धन्य हैं हमारे समान पुण्यवान भूतलमे दूसरा को है

कि जिस हमारे देखने को तात अश्वतर वार२ मनमे उत्साह करते हैं तो अब और विलम्ब करना उचित नहीं उठो चलते हैं हम उन की आज्ञा एकक्षण भी नहीं टारसकते यह उनके चरणों की शपथकर कहते हैं, जड़ बोला कि इतना कह राजपुत्त्र उठ खड़ेभये और उनके साथ नागराज के दर्शन को चले जब पुरके बाहिर हो जायकर गोमती नदीके तीर पहुंचे और तीनो मिल उस नदी मे पैठे तब ऋतध्वजने जाना कि इनका घर नदीके पार है फिर जब गहरे मे पहुंचे तब वे दोनो नागकुमार इनको पकड़कर खैंचा औ तुर्त पाताल को ले गये और वहां जाय ऋतध्वजने उन दोनो भाईयोंको देखा, कि नरदेह छोड़ नागरूप भये और फणों की मणी जगमगाय रही हैं यह देख राजपुत्त्र विस्मित हो प्रीति से हंसकर बोले कि भले भाई भले हो फिर पाताल की शोभा देखते भये उनके साथ नागराजके घर को चले और मार्गमे वहां की शोभा देखते कि तरुण वृद्ध कुमार अवस्थाके नागोंसे सोभित औ जहां तहां नागकन्या क्रीड़ाकर रहीं हैं जिनके कानों में कुण्डल गलेमे गजमुक्तोंके हार ऐसी बह्नार देते कि मानो तारागणोंसे गगन शोभायमान होरहाहो कहूं गीत कहूं वीणा बेणु मृदङ्ग बज रहे हैं ऐसे सैकडों सुन्दर घरोंसे उस नागपुर की शोभा हो रही है यह शोभा देखते ऋतध्वज नागकुमारोंके साथ जाते जाते नागराजके भवन को गये तहां जायकर देखा कि महात्मा नागराज केयूर कुण्डल औ विमल मुक्ताहार आदि आभूषणोंसे संयुक्त और दिव्यमाल्य अम्बर धारण किये सुवर्णमय मणिजालस घटित उत्तम आसनपर विराजमान हैं,

ऋतध्वज को उन दोनो नागपुत्रोने देखाया कि देखो यही हमारे पिता बैठे हैं और पितासे भी कहा कि वीर कुवलयाश्व राजपुत्र ये हैं फिर राजकुमारने नागराजके चरणों को प्रणाम किया और अश्वतर नागने इन को बलकर तुर्त उठाय अपने हृदयसे लगाय चिरञ्जीव कहि आशिर्वाद दिया और कहा कि शत्रुजय कर माता पिता की सेवामें सदा तुमारा मन रहै फिर बोलें कि हे वत्स। धन्य तुम हो कि जिसके गुण पीठि-पीछे परोक्षमें कहे जातें हैं और तुमारे अलौकिक सद्गुणों को मेरे पुत्रोंने वार२ कहा और सत्य है कि जीवन गुणीका भला औ निर्गुण तो जीते ही मृतक है और गुणवान मातापिता का सुखस्वरूप औ शत्रुजनों का ज्वररूप है देखो गुणी जन सज्जनोपर विश्वास औ सत्सङ्गकर अपना लोकहित औ पर लोक सुधारलेता है और देवपितर द्विज बन्धु मित्र अर्थी दीन विकल आदि सब गुणीपुरुषके चिरञ्जीव रहने की मनमे सदा इच्छा करते हैं और देखो निन्दासे दूर दुःखीपर दयालु विपद पडे के आश्रय ऐसे उदार गुणी पुरुषोंका जन्म धन्य और सफल है, राजकुमारके प्रति इतना कहकर नागराज निज पुत्रोंसे उन की सत्कारके अर्थ बोले कि अब इन को स्नानआदि क्रमसे आहार सम्भोग यथा रुचि करवाय तिस पीछे एक साथ बैठ मनभावनी औ हृदय को सुहावनी आनन्ददेनेवाली कथा वार्त्ता कर कुछकाल वितावेंगे ऋतध्वज उनकी ये सव बातें सुनते समझते अङ्गीकार करते रहे फिर अश्वतरने निज पुत्र औ राजपुत्र सहित आनन्द पूर्वक एक साथ बैठ यथा जोग औ यथा रुचि अन्न पानादि भोजन किया। इति मार्क-

ण्डेयपुराणे कुवलयाश्व पातालगमनो त्रिविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

२४ अध्यायः ।

जड़ बोला कि हे तात ! जब आहार कर भुजङ्गराज आसनपर विराजमान भये औ नागपुत्त्र राजपुत्त्र भी समीप में आन बैठे तब नागराज समयके अनुसार नानाप्रकार कथा कह राजकुमार को प्रसन्न कर प्रीति के बचन बोले कि वत्स ऋतध्वज ! देखो यह घर तुमारा है इससे अपने सुखसमाचार औ कर्तव्य कर्म जो होय बेखटक कहो और पुत्त्रके समान मेरी ओरसे कोई सन्देह मत करो सोना चांदी वस्त्र वाहन आभूषण मणि मुक्ता और जो किसी दुर्लभ वस्तु की भी अभिलाषा हो सो भी मांगो तब राजपुत्त्र बोले हे महाराज ! आपके प्रसादसे मेरे पिताके घरमें सब कुछ भरपूर है इससे मै क्या माङ्गू और ऐसा कोई कार्य्यभी नहीं है जिसको कहूं हमारे पिता हजारों वर्षसे पृथिवी का पालन करते और आप पाताल का इससे मेरा मन याचना के उन्मुख नहीं होता देखिये वही पुरुष पुण्यवान औ स्वर्गका सुखभोग करते हैं कि जिनके पिता वर्तमान हैं और देखिये युवा अवस्था उत्तम मित्र औ अरोग शरीर के आगे धन तृण समान है फिर पिता धनी और मै क्या युवा नहीं हूं और जब कुछ नहीं रहता तो मांगने को मन होता है और रहते मेरी रसना कैसे मांगेगी और जो मनुष्य पितृ बांह की छांह मे बैठे चिन्ता नहीं करते कि मेरे घरमे धन है कि नहीं वही लोकमे सुखी हैं

सु-

और जो बालपनसे पिता विहीन औ कुटम्बी हैं ते आनन्द रसके सुखस्वादसे रहित विधातासे बञ्चित भये हैं सो मैं आपके प्रसादसे पिताके दिये भये धन औ रत्नसमूह नित याचकों को देता रहता और आज मैंने क्या नहीं पाया जो आपके च णयुगल के मेरी मुकुट मणिने स्पर्श किया जड़ बोला कि जब राजकुमारने यह कहा तो पन्नगराज निज पुत्त्रोंके उपकारी राजपुत्त्रके प्रति प्रीतिपूर्वक बोला कि हे पुत्त्र! जो रत्न सुवर्ण आदिके लेने की इच्छा नहीं है तो और जो तुम्हारे मन को रुचता हो सोई कहो, फिर ऋतध्वज बोले कि हे भगवन्! आपके प्रसादसे मेरे घरमें सब कुछ है तिसपर आपके दर्शनसे और भी विशेष भया और इतने हीं से हम कृतकृत्य औ सफल जीवन भयें जो देवता आपके साथ [illegible] पुण्य का अङ्गसङ्ग भया और जो आप की चरण धूरिने मेरे शीस पर निवास किया तो मैंने सब कुछ पाया फिर जो आपकी इच्छा हमको मनवाञ्छित देने की अवश्य ही है तो पुण्यका सञ्चार औ संस्कार मेरे हृदयमें बना रहै क्योंकि सुवर्ण मणि रत्न वाहन आसन घर स्त्री धन जन अन्न पान वस्त्र माल्य भूषण लेपन गीत वाद्य सुयश सुन्दर आरोग्य शरीर औ अनेक प्रकारके सुखभोग ये सब फल मेरे जान पुण्यरूप वृक्ष के हैं, इससे मनुष्यको उचित है कि उस वृक्ष के मूल की रक्षा के लिये यत्नका थाला बनाय विचार नीरसे नित सींचै तो पृथिवी मे दुर्लभ क्या है फिर नागराज बोला हे प्राज्ञ! तुमारी मति धर्ममें ऐसी ही बनी रहेगी और जो तुमने कहा कि सकल सुख धर्मके फल सो सत्य है परन्तु तथापि

मेरे घर आयके अब तुम को कुछ लेना अवश्य है यद्यपि वह वस्तु तुम्हारे मतसे मनुष्यलोक में दुर्लभ भी क्यों नहो ।

जड़ बोला हे तात ! नागराज की यह बात सुन राजपुत्र निज मित्र नागपुत्रोंके सन्मुख एकटक देख रहे तब वे दोनो नागकुमार पिताको प्रणामकर राजपुत्रके उस मनोरथ को प्रगट कर कहने लगे कि जो वार२ पूछने पर भी मन छोड़ कण्ठले नही आया कि हे तात ! इन की प्रियपत्नी गन्धर्व कन्या मदालसा नाम दुरात्मा तालकेतु दानव से वञ्चित उस दुष्टके छल को अनजान उस अधम यवन के मुखसे मृत्युहत इनको सुन अपने प्रिय प्राणपतिके अर्थ परित्याग किये तबसे इनोने यह प्रतिज्ञा की है कि मदालसा छोड़ और कोई स्त्री मेरी भार्य्या न होगी इस कारण उसी सर्वाङ्गसुन्दरी के देखने की इच्छा राजकुमारके मनमे है जो यह वात हो सके कि ये उसको फिर देखैं तो अलवता इनका मनोरथ वर आवे औ परम उपकार भी है तव नाग बोला कि लोकमें प्राणियोंका वियोग होकर जो पुनर्वार उसी रूपसे संयोग होना यह वात शम्बरासुर की माया औ स्वप्नके विना कव हो सकती है ।

जड़ वोला कि नागके मुखसे इतनी बात सुन प्रणामकर ऋतध्वज प्रीति औ लाजयुक्त वचन वोले कि हे तात ! अब माया की भी मदालसा को कृपाकर दिखाइये तो भी आपका परम अनुग्रह है, नाग वोला कि तात ! जो माया देखा चाहते तो इहांई देखो क्योंकि घर आया बालक अतिथि भी गुरुके समान श्रेष्ठ है, जड़ बोला कि इतना कह नागने निजभवनके भीतर सोई भई मदालसा को उनके मोहके लिये वुलवाया और

कहा कि हे कुमार देखो यही तुम्हारी भार्य्या मदालसा है कि नहीं, राजपुत्त्र ऋतध्वज उसको देखते ही तुर्त निर्लज्ज हो हे प्रिये२। कहते भये उसके सम्मुख चले तब नागराजने वारन किया कि हे पुत्त्र! यह माया की है इसको मत छुवो मैने तुम से पहिले ही कहराखा कि माया स्पर्श करने से अन्तर्धान हो जाती है, यह सुन राजकुमार मूर्च्छित हो अवनीपर अचेत गिरपड़े फिर सचेत हो हा प्रिये२ यह क्या गति भई इतना कह अपने मनमे चिन्ता करने लगे, तब मदालसा बोली कि देखो इस राजकुमार का कैसा आश्चर्य्य भूत अचल स्नेह मेरे पर है कि जो संग्राम के बीच शत्रुवों को गिरानेवाले उनको बिना शस्त्र लगे जिस स्नेहने बेचेत कर गिराया और मोहमाया की प्रबलता देखो कि नागराजने प्रथम हीं मायाकी कह कर सुनाया और माया मिथ्या है यह बात भी प्रसिद्ध है औ सब कोई जानते पर तौभी ऋतध्वज ऐसे बुद्धिमान पुरुष तुर्तके तुर्त ही भूलगये देखो आकाश वायु अग्नि जल भूमिसे निर्मित इस देह की ऐसी चेष्टा है। जड़ बोला, कि हे तात तिस पीछे नागनाथने ऋतध्वज को समझाय बुझाय मदालसा का मरण औ जीवन आदि सकल वृत्तान्त कह सुनाया, तब राजपुत्त्र ऋतध्वज मगनमन अति प्रसन्न बदन हो निज कान्ता मदालसा को पाय महात्मा नागराज को प्रणाम कर स्त्रीसमेत उसी कुवलयाश्व पर सवार हो हंसी खुशी निज नगर को चले।

इति मदालसा प्राप्तिः चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

२५ अध्याय ।

जड बोला, कि हे तात राजकुमार ऋतध्वजने निज पुरमें आय माता पिता को प्रणाम कर वह सब समाचार कहा कि जैसे मृत भई मदालसा को फिर पाया और मदालसाने भी सास ससुर के चरणों को प्रणामकर निज परिवार के छोटे बड़े वारे बूढ़े सब को वन्दन आलिङ्गन आदि से यथाजोग मिल भेंट उचित सन्मान किया, तिस पीछू पुरवासियों के घर घर महोत्सव औ आनन्द बधाई बजने लगीं, राजकुमार उसी सुन्दरी मदालसा के साथ गिरि कानन वन उपवन निर्झर आदि रमणीक स्थानोंमें नाना प्रकार विहार करतें रहे और वह गन्धर्वकन्या मदालसा भी काम भोगसे पुन्यक्षय की वासना कर राजपुत्र के साथ विहरती रही फिर बहुकाल के पीछे ऋतध्वज के पिता राजा शत्रुजित भली भांति प्रजा पालन कर कालधर्म को प्राप्त हो स्वर्ग गये तिस पीछे मन्त्री औ पुरवासियोंने ऋतध्वज को राजतिलक कर सिंहासनपर बैठाया फिर औरस पुत्रके समान प्रजा पालन करते भये ऋतध्वज से मदालसा के गर्भ सें प्रथम पुत्र उत्पन्न भया तो उसका नाम पिता ने विक्रान्त धरा और सेवक परिजन सब परम सन्तुष्ट भये परन्तु मदालसा हंसी और उत्तान सोये भये रोते बालक को लाड़के बहाने से कहने लगी कि हे पुत्र! तुम तो शुद्ध हो और तुमारा नाम कुछ नहीं है यह जो पिता ने धरा सो कल्पना मात्र है और यह जो तुमारी देह सो भी पञ्चभूतमय हैं तुम इससे अलग हो फिर किस हेत रोदन करते क्या निज इच्छा से जन्मले अब राजपुत्र कहावोगे इस कारण विलाप करतेहो तो आकाशादि पञ्चभूतके गुणोंकी

कल्पना तुमारी इन्द्रियों में हैं और निवल आकाशादि पांच-
भूतोंके गुण दिन दिन बढ़ते जैसे पुरुष की देह अन्न औ जल-
पान से बढ़ती है परन्तु तुमारी तो न वृद्धि और न हानि है,
तुम कञ्चुकके समान इस नश्वर निज देह में मूढ़ता को न प्राप्त
होव देखो शुभ औ अशुभ कर्म से निर्मित मद अहङ्कार से
युक्त जामाके समान यह देह तुमको पहिराई गई है और इस
को पहिर तुम किसीको तात किसीको मात किसीको भ्रात
किसीको भगिनी किसीको पुत्र कलत्र मित्र अपना पराया इन
प्राणियों को अनेक प्रकार जानते और मानतेहो, और दुख
निवारण के लिये दुख और भोगोंको सुखके अर्थ जो जानते
सो मूढ़हैं जिस हेत वे सुख फिर दुखरूप होजाते और दुखभी
सुख होते [illegible] अज्ञान जन जिनका चित्त मूढ़हैं उलटा मानते
[illegible]तिरूप हाड़ दिखाना हांस औ कुटिल नेत्र युगलसे
तर्जन विलास औ कठोर मांसपिण्ड कुच औ रतिस्थान विशिष्ट
योषिता क्या नरक नहीं है और देखो कि सवारी तो धरती पर
औ शरीर सवारी पर औ शरीर पर कोई अन्य पुरुष सवार है
परन्तु ममता बुद्धि जैसी देहमें है तैसी और पर नहीं होती
यह मूढ़ता छोड़ और कहो क्या है। इति २५ अध्याय।

२६ अध्याय।

जड़ बोला, कि दिन दिन बढ़ते हुये उस बालक कोराज-
पत्नी मदालसाने दुलार के बहाने से इस प्रकार बोध दे कर
संसार से निर्मोह करदिया और जैसे बल बुद्धि औ देह उस
बालक की बढ़ती थी तैसेही माता के उन बचनों से आत्मबोध

भी दृढ़ चला तो जन्महीसे लेकर बोध कराया गया वह बालक अन्तको गृहस्थाश्रम करने से अलग हो गया, फिर जब दूसरा पुत्त्र भया तो पिता ने उसका नाम सुबाहु धरा तब मदालसा हंसी और उसको भी उसी प्रकार बालकपन से प्यार के बहाने समझाती रही तो वह भी महामति ज्ञानी हो गया, फिर तीसरा पुत्त्र भया तो राजा ने उसका नाम शत्रुमर्दन कहा, यह सुन मदालसा बहुत हंसी और उसको वैसेही दुलार के वचन कह सुबोध करदिया तो उसने भी सब काम छोड़ दिया इस प्रकार वे तीनों पुत्त्र तपहेत बनको चलेगये फिर जब चौथा पुत्त्र भया और राजाने उसका भी नाम करने की इच्छा की तो मदालसा को मुस्काती भई देख राजाने आश्चर्य्यभूत हो कहा कि देखो जब२ मैंने पुत्त्रोंके नाम किये तब२ तुम हंस उठीहो इसका क्या कारण है मैंने तो समझके विक्रान्त सुबाहु शत्रुमर्दन ये बलप्रताप से युक्त सुन्दर नाम किये जो क्षत्रियों के जोग हैं परन्तु जो तुमारे मतमें वे नाम अजोग हैं तो अब इसका नाम अपने मनमाना धरो तब मदालसा बोली हे महाराज। हमको तो आपकी आज्ञा माननी उचित है इससे जो आप कहते हैं तो इसका नाम अलर्क ऐसा लोकमें प्रसिद्ध होगा और यह आपका सबसे छोटा पुत्त्र बड़ा बुद्धिमान होगा यह माता का किया असंबन्ध अटपटा नाम सुन राजा ऋतध्वज हंसकर बोले कि हेप्रिये। यह जो इस मेरे पुत्त्रका नाम तुमने धरा सोतो अनमिलसा मालूम होता इसका अर्थ क्या है सो तो कहो तब मदालसा बोली हे राजन्। नाम तो व्यवहार की कल्पना है और आप अपने धरेहुये नामों की निरर्थकता

सुनिये कि जिस हेत आत्मा निरञ्जन पुरुषको बुद्धि मान जन व्यापक कहते और क्रान्ति कहते गमनको जिससे एक स्थान से दूसरे स्थानको पहुंचना होता है और देहका ईश्वर यह आत्मा सर्वव्यापी है न कहीं कभी जाता न आता इससे विक्रान्त यह इसका नाम व्यर्थ है और सुबाहु जो दूसरे पुत्रका नाम आपने धरा सो पुरुष रूप आत्मा जो रूप रहित है तो उसके बाहु कहां हैं और तीसरे पुत्रका अरिमर्दन नाम आपने कहा वह भी उसके अजोग है क्योंकि जो पुरुषरूप परमात्मा एकही सकल शरीरोंमें है तो उसका शत्रु मित्र दूसरा को है और यद्यपि क्रोधादिकोंके वशहो प्राणियोंका मर्दन प्राणी करते हैं पर यह तो क्रोधादिकों से भिन्नहै इससे यह नाम भी निरर्थक है और जो कहो कि व्यवहार के अर्थ एक अनर्थ नाम की भी कल्पना लोग करलेते तो इसका अलर्क यह नाम आपको व्यर्थ प्रतीत काहेसे भया जड़ बोला कि मदालसा ने जब ऐसा कहा तब राजा ऋतध्वज ने उसकी बात मान लिया फिर मदालसा जैसे पूर्व पुत्रोंको बोध देती रही तैसेही इस चौथे बालक को भी देने लगी, यह देख राजाने कहा कि हे मूढ़े ! यह क्या करती है क्या तू मेरी सन्तान उच्छेद करेगी हे दुष्टे समझाय बुझाय बोध देकर जैसे मेरे उन तीनों पुत्रोंको गृहस्थाश्रमके बाहर किया तैसे इसको भी करेगी यह भली बात नहीं है अब जो तू अपना औ मेरा भला चाहै और मेरे वचन मानै तो इस पुत्रको निवृत्तिमार्ग न दिखाय प्रवृत्ति पथमें लगावो देखो यह करने से नतो कर्ममार्गका उच्छेद होगा और न पितरोंके पिण्ड का विच्छेद और देखो पितृगण जो देवलोक मे हैं अथवा मनुष्य

योनिमें हैं या तिर्य्यगयोनिमें हैं क्या पुण्यवान और क्या पुण्य-हीन क्षुधासे आतुर जो हैं तिनको स्वधर्मरत मनुष्य तर्पण औ श्राद्धसे सन्तुष्ट मन औ तृप्त करते हैं और देवता अतिथिजनोंका भी सत्कार होता और देखो देवपितर मनुष्य भूत प्रेत पिशाच गुह्यक कृमि कीट पक्षी आदि जितने जीव जन्तु हैं सबका सत्कार औ जीविका यह सब कर्ममार्ग मे स्थिर नरोंसे है इसी हेत वे सब इसकी वृद्धि मनाते औ उपकार करते हैं तिस कारण इस पुत्रको चत्रजातिके योग जो लोक परलोकमें फल दायक हो सो काम भली भांति से उपदेश करो जब स्वामीने यह कहा तो वह उत्तम स्त्री मदालसा अलर्क नाम पुत्र को दुलार के वहाने से यह कहने लगी कि हे पुत्र ! तुम बढ़ो और अपने सत्कर्म से पिता को सुख दो जो मित्रोंके उपकार और शत्रुवोंके नाश हेत हैं रे पुत्र तू धन्य है जो एक अनेक वर्षलों धन धाम प्रजा पालन और शत्रु का निग्रह करेगा और उस पालन से तुमको भी सुख भोग होय और धर्मसे सुन्दर फल औ अमरपद पावोगे और इस धराके अमरों अर्थात् ब्राह्म णोंको पर्व पर्वमें तृप्त करो, औ बन्धुजनों की कामना पूरी करो दूसरों का हित हृदयसे सदा चिन्तन करो निज मनको परदार से लौटेरो और अनेक यज्ञ कर देवतोंको सन्तुष्ट करो आश्रित द्विजजनोंकी मनभरे राखो युद्ध से शत्रुवोंको सन्तोष देउ हे वीर ! वाल अवस्थामे तुम बन्धजनों का मन आनन्द करो और कुमार अवस्था पाय पिता की आज्ञा पालो युवा हो सत्कुलकी भूषण तुल्य निज नारियों को सुख देउ और वृद्ध अवस्था पाय वन वासी मुनिजनोंके साथ बास करो औ राज्य करते समै सुहृदजनों

कों आनन्द औ साधु सज्जन की रक्षा संग्राम में दुष्टशत्रुवों का वध करो और गज ब्राह्मणके अर्थ हे पुत्त्र। मृत्यु को भी प्राप्त होउ। इति मार्कण्डेये मदालसोपाख्याने पुत्त्रानुशासनं नाम षड्विंशोऽध्यायः॥ २६॥

२७ अध्यायः।

जड़ बोला कि इस प्रकार लाड़लड़ाते औ दुलराते वह अलर्क नाम बालक बल बुद्धि औ शरीर से दिन२ बढ़ने लगा, फिर जब कुमार अवस्था को प्राप्त भया तो पिता ने उपनयन किया जब वह जनेउ पहर व्रती भया तब अपनी माताके निकट जाय प्रणाम कर बोला कि अम्मा अब जो लोक परलोक औ सुखके लिये कर्त्तव्य कर्म हों सो सब कृपा कर कहो तब मदा[illegible] बोली कि हे पुत्त्र! राज्यपर बैठकर राजाको उचित है कि सात काम जो भूल करनेवाले हैं उन व्यसनों को त्याग कर औ निज धर्मके अविरुद्ध प्रजोंका पालन करना और बाहिर मन्त्र प्रकाश होने पर शत्रुसे अपनी रक्षा करनी जैसे रथपर बाहिर प्रकाश होनेसे नाश है और शत्रु दोषसे दुष्टभये मंत्रियोंका जानना और निज दूतोंके द्वारा शत्रु के दूतोंका जानना और राजाको उचित है कि इष्ट मित्र शिष्ट औ बन्धुजनोंका भी विश्वास न करै और कार्य्य वशते शत्रु पर भी प्रीति करै और स्थान वृद्धि क्षय आदि षड्गुणज्ञ हो काम का वशवर्त्ती न होय और राजाको उचित है कि प्रथम अपने आत्माको जीतै फिर मन्त्रीयोंको तिस पीछे भृत्य औ पुरजनोंको तब शत्रु से बिरोध करै और इनको बिना जय किये जो वैरीको जीतने चाहते है

शत्रुवोंसे बाधा को प्राप्तहोते हैं तिससे हेपुत्र कामादिक परम शत्रु हैं प्रथम इनको जीते क्योंकि इनके जय करनेसे फिर सर्वत्र अवश्य जयहै और जो इन कामादिकोंसे आप जयकियागया वह नाश भया देखो काम क्रोध लोभ मोह मद मान हर्ष ये विनाश करनेवाले वड़े शत्रु हैं सो सुनो कि कामके वशीभूत पाण्डु की क्या गति भई औ क्रोधसे हतात्मज अनुह्राद्की लोभसे ऐल मद से बेन मानसे राजा वलि हर्ष से पुरञ्जय की परन्तु इन सबको जीतकर महात्मा मरुत्तने सब जीता इन बातोंका स्मरण कर निजदोषोंसे रहित हो राजा काक कोकिल मयूर हंस कुक्कुट मृग मृङ्ग व्याल लोहसे चरित शिखै और शत्रु मे कीटका आचरण औ समय मे चिंउटी की चेष्टा दिखावै और चन्द्र सूर्य्य रूप से नीति पालै और बन्धकी शरभ पद्म शिल्पी औ गुर्विणी स्तन गोपाल योषितों से बुद्धि शिखै और शक्र अर्क यम सोम वायुक तुल्य अपने पांच रूप धारण करै जैसे महीके पालन हेत इन्द्र चौमासेमे वृष्टि कर सबको तृप्त करते और जैसे सूर्य्य आठमास सूक्ष्मरूपसे जल सोषते तैसे राजाकर ग्रहण करै और जैसे यम शत्रु मित्र उदासीन पर समय पाय दण्ड करते और जैसे पूर्ण इंदुको देख नर प्रसन्न होते ऐसे समभावसे राजाभी रहै और जैसे वायु सबमे गुप्तरूप रहती तैसे राजाभी चारपुरुषों के द्वारा पुरवासी मन्त्री बन्धुजनोंको जानै तो उसका मन लोभ मोह काम अर्थसे खैचा नहीं जाता वह स्वर्गप्राप्त होता है और स्वधर्मसे विचल मन कुमार्गी जनोंको जो फिर उनके उनको धर्ममे लाता वह स्वर्गवास पाताहै और जिसकी राज्यमे वर्णाश्रम धर्म नहीं उच्छिन्न होने पाते हे पुत्र! उसको इहां वहां निरन्तर

कोई अकिंचन रंक भूखा जो मांगता हो औ अपने द्वारपर आवे तो उसकोभी सामर्थ रहते भोजन कराय देय।

और धनी मनुष्यके निकट जायकर जो उसका सजाती दुख पाता है तो उसने जो पाप किया सो उस धनी को भोगना पड़ता है, और [illegible] उपहार भी देवै।

हे पुत्त्र! ब्रह्मा तथा विश्वेदेवों को तो गृहके मध्यमे देय कहो तो मन सन्तोष होय, तब मदालसा बोली कि हे पुत्र!— दान अध्ययन यज्ञ ये तीन धर्म ब्राह्मण के हैं और याजन अध्यापन औ पवित्र प्रतिग्रह ये तीनो जीविका हैं, और क्षत्रीके भी दान अध्ययन यज्ञ ये तीन औ चौथा भूमिरक्षा धर्म हैं औ [illegible] जीविका और वैश्यके दान अध्ययन यज्ञ यही तीन [illegible] वाणिज्य कृषी पशुपालन तीनो जीविका हैं और शूद्र के दान यज्ञ औ तीनो वर्णकी सेवा धर्म हैं जीविका शिल्पकर्म अथवा सेवा क्रयविक्रय भी जानो, ये वर्णधर्म कहे अब आश्रम-धर्म श्रवण करो कि जो नर निजधर्म से चुत नहोय तो अवश्य सिद्धि को प्राप्त होय और निषिद्ध आचरण से नर्क होता इसमें सन्देह नहीं है देखो जबतक जनेउन होय तबलों द्विजाति जो चाहे सो कहै करै औ खावे पीवे परन्तु जब जनेउ होजाय तब ब्रह्मचारी होकर गुरुके गृहमे बास करै और उस समय के उसके धर्म सुनो कि नित अध्ययन त्रिकाल स्नान अग्निसेवा मे तत्पर रहै औ भिक्षाटन से अन्न लाय कर गुरु को निवेदन करै फिर गुरुकी आज्ञा पायकर उसको खाय और गुरु के काममें

शत्रुवोंसे बाधा को प्राप्तहोते हैं तिससे हेपुत्त कामादिक परम शत्रु हैं प्रथम इनको जीते क्योंकि इनके जय करनेसे फिर सर्वत्र आश्य जयहै और जो इन कामादिकोंसे आप जयकियागया वह नाश भया देखो काम क्रोध लोभ मोह मद मान हर्ष ये विनाश करनेवाले बड़े शत्रु हैं सो सुनो कि कामके वशीभूत पाण्डु की क्या गति भई औ क्रोधसे हतात्मज अनुह्राद्की लोभसे ऐल मद से बेन मानसे राजा वलि हर्ष से पुरञ्जय की परन्तु इन सबको जीतियो कन्यासे जो अङ्गभङ्ग न होय विवाह कर स्वधर्म प्रति पाले और निजकर्मसे जो धन मिले उससे देव पितृ अतिथि को भक्तिपूर्वक तृप्तकर पश्चात् कन्या पुत्त दीन आश्रित पशु पक्षी भृत्य अन्ध पतितों को भी यथाशक्ति देकर आप आहार करै औ गृहस्थ ऋतु समैमें स्त्रीगमन करै और पञ्चयज्ञ बलि वैश्वदेवादि को कभी न त्याग करै यह मैने गृहस्थ का धर्म कहा अब बानप्रस्थ का धर्म सुनो कि गृहस्थ सन्तान की सन्तान देख और दिन२ निज काया की घटती जान ज्ञानवान माया मोह तज अपने आत्मा को शुद्ध करनेके लिये तीसरा आश्रम वानप्रस्थ धारण करै कि जिस वानप्रस्थमे बनके कन्द मूल फलादि भोग औ तपस्यासे शरीर औ इन्द्रियों को दुर्बलकर अपने काबू करते हैं और भोगरहित स्त्रीका संयोग औ भूमिशयन ब्रह्मचर्य्य देव पितृ अतिथि का सत्कार त्रिकाल स्नान जटा वल्कल का धारण होम सदा योगाभ्यास वनके तेलका सेवन ये सब पापशुद्धि के अर्थ बडे उपकारी हैं इसीसे बानप्रस्थ कहते हैं।

हे पुत्त! अब चौथा भिक्षु आश्रम जो संन्यास तिसका

कोई अकिंचन रंक भूखा जो मांगता हो औ अपने द्वारपर आवे तो उसकोभी सामर्थ रहते भोजन कराय देय।

और धनी मनुष्यके निकट जायकर जो उसका सजाती दुख पाता है तो उसने जो पाप किया सो उस धनी को भोगना पड़ता है, और सायंकाल मे जो अतिथि आवे तो शयन ... उपहार भी देवै।

हे पुत्त्र! ब्रह्मा तथा विश्वेदेवों को तो गृहके मध्यमे देय औ धन्वन्तरि को ईशानमे इन्द्रको पूर्वदिशा मे यमराज को द- निजधर्म को छोड़ कर अन्यथा करै तो वह राजदण्ड के याग- है और जो मनुष्य निजधर्म छोड़ पाप करते हैं और राजा उनको दण्ड न दे कर उपेक्षा करता है उसके इष्टापूर्त आदि धर्म सब नाश हो जाते हैं इस हेतुसे राजा सब वर्णोंको निज निज धर्ममे चलावे और जो न मानैं तो दण्ड कर फिर उनको उनके स्वधर्म मे स्थापन करै यह उत्तम राजधर्म है। इति मार्कण्डेये पुत्त्रानुशासने मदालसावाक्यमष्टविंशोऽध्यायः॥२८॥

२९ अध्याय।

अलर्क बोले कि माता गृहस्थाश्रममें रहकर मनुष्य को जो कर्म करन अवश्यहै और जिसके करनेसे लोक परलोक में बड़ा उपकार होता और न करने से नर पापके भागी होते हैं और कौन कर्म किस प्रकार किये जाते और किन कर्मोंके करने का कारण हैं यह सब ठीक२ यथार्थरूप समझायकर हमसे कहो, तब मदालसा बोली कि हे वत्स! श्रवण करो इस संसार में मनुष्य गृहस्थाश्रम को धारणकर जगतके यावत् प्राणियों

शत्रुवोंसे बाधा को प्राप्तहोते हैं तिससे हेपुत्र कामादिक परम-प्रबल शत्रु हैं प्रथम इनको जीते क्योंकि इनके जय करनेसे फिर सर्वत्र आश्रय जयहै और जो इन कामादिकोंसे आप जयकियागया वह नाश भया देखो काम क्रोध लोभ मोह मद मान हर्ष ये विनाश

मध्य सामवेद मुख है और इष्टापूर्त अर्थात् यज्ञ होम कूप तड़ाग बाग वापी मन्दिर धर्मशाला आदि इसके शृङ्ग हैं, और वेदकी सुन्दर ऋचा इसकी त्वचा औ रोम हैं फिर शान्ति औ पुष्टि इसका गोबर मूत्र है और चार वर्णके मनुष्य इसके चारो चरण हैं, देखो यह वेदमयी धेनु इस जगतकी जीवन-मूर सदा अक्षय बनी रहती जिसकी नेकभी न्यूनता कभी नहीं हैं, और स्वाहा स्वधा वषट्कार औ हन्तकार इसके चार थन हैं देखो स्वाहाको देवता स्वधाको पितर वषट्को मुनिजन औ हन्तको मनुष्य सदा पान किया करते हैं इस प्रकार यह वेद-मयी धेनु सबको सर्वदा तृप्त करती रहती है।

हे पुत्र! इस हेतुसे वेदोंके उच्छिन्न करनेवाले महापापी मनुष्य अन्धतम नाम नरक को जाते हैं और जो मनुष्य उचित समयमे इस धेनुके वत्स स्वरूप देवादिकों को प्रीतिपूर्वक पान करावते हैं वे स्वर्गवास प्राप्त होते हैं, इससे हे पुत्र मनुष्य मात्र को उचित है कि देवता ऋषि पितर मनुष्य और अन्य प्राणियों को भी प्रतिदिन निजदेहके तुल्य जानि भरण पोषण धारण है

मुक्ति के अर्थ बड़े उपकारी है इसीसे वान

हे पुत्र! अब चौथा भिक्षु आश्रम जो संन्या

नहीं।

कोई अकिंचन रंक भूखा जो मांगता हो औ अपने द्वारपर आवे तो उसकोभी सामर्थ रहते भोजन कराय देय ।

और भली उपहार भो देवै ।

हे पुत्त ! ब्रह्मा तथा विश्वेदेवों को तो गृहके मध्यमे देय औ धन्वन्तरि को ईशानमे इन्द्रको पूर्वदिशा,मे यमराज को दक्षिणमें वरुणको पश्चिममे सोमको उत्तरमे वलि देय और धाता बिधाता को घरके दरवाजेपर अर्य्यमाको घरके चतुर्दिक देय और निशाचर औ प्रेतोंको आकाश मे औ पितरों को दक्षिण मुख होकर देय ये सब कर्म गृहस्थ निचिन्त औ सावधानतासे तत्पर होकर करै तिस पीछे उनके आचमन के लिये जल देय औ उस२ देवताका उद्देश कर उसी२ स्थानमे देय जो पूर्वमे कह चुके हैं, हे पुत्त ! इस प्रकार गृहपति पविलहो गृहबलि करै और अन्य प्राणियों की तृप्तिके लिये भी आदरपूर्बक देय फिर कूकुर औ चाण्डाल तथा पक्षियोंके हेत भूमिपर धर देय देखो वैश्वदेव नाम यह यज्ञ सन्ध्या औ सबेरे दोनो बेरे करने को शास्त्र औ महापुरुषों ने कहा है ।

तिस पीछे वह गृहस्वामी अपने पांव हाथ धोय आचमन कर एक कच्चीपाव घड़ी लों निज दरवाजा पै परेखा करै कि जो कोई अतिथि अभ्यागत प्राप्त होय,तो उसको अन्न जल गन्ध पुष्प आदिसे यथाशक्ति पूजा करै, परन्तु मित्र या अपने एक ग्रामके रहनेवाले को अतिथि कर न पूजै, केवल उसहीको

...थ

... नैमि-

...न्मके पूर्व जो श्राद्धादि किये जाते ते नित्य

... इन तीनोंके मध्यमे अब मैं नैमित्तिक कहती हूं

पर उसको प्रजापति करके समझो, हे पुत्र ६७.
उसकी स्थिति एक स्थान मे नित नहीं है इससे उसको अतिथि
कहते औ उसके तृप्त होनेसे गृहस्थ मनुष्य यज्ञ ऋणसे उऋण
होते इसी हेतुसे उसको न देकर जो मनुष्य आप खाते वे
पापभागी केवल अपना पापखाते औ अन्य जन्ममे विष्ठा खातेहैं

और देखो अतिथि जिसके घरसे निराश होकर चलाजाता
तो अपना पाप उसको दे औ उसकी पुण्य लेकर जाता है, इस
से शीतल जल या फलमूल शाकपात जो कुछ आप खाता हो
उसीसे उसका आदरपूर्वक सन्मान सन्तोष औ यथाशक्ति पूजन
करै, और पितरोंका उद्देश कर एक या तीन ब्राह्मण जिमावै
औ जो बन पड़े तो अन्नजलसे नित श्राद्ध भी किया करै और
नित भोजनके अन्नमे से अग्रभाग निकाल कर ब्राह्मणको देय
और गृहत्यागी रमताराम या ब्रह्मचारी जो आयकर भिक्षा
मांगै तो उसको अवश्य देय और भिक्षाकी प्रमाण एक ग्रास
मात्र है औ चार ग्रास प्रमाण को अग्र कहते और अग्रका
चौगुना हन्तकार है, हे पुत्र! भोजन हन्तकार अग्र या भिक्षा
बिना दिये गृहस्थ मनुष्य आप भोजन न करै और अतिथिकी
पूजा कर पीछे ज्ञाति बन्धु अर्थी बिकल बाल वृद्ध आतुर या

देव पितृ [illegible]
धारण होम सदा योगाभ्यास वनके तेलका सेवन ये स[illegible]
शुद्धि के अर्थ बड़े उपकारी हैं इसीसे बानप्रस्थ कहते हैं

हे पुत्र! अब चौथा भिक्षु आश्रम जो संन्यास तिसका
नहीं [illegible]

कोई अकिंचन रंक भूखा जो मांगता हो औ अपने द्वारपर आवे तो उसकोभी सामर्थ रहते भोजन कराय देय।

और धनी मनुष्यके निकट जायकर जो उसका सजाती दुख पाता है तो उसने जो पाप किया सो उस धनी को भोगना पड़ता है, और सायंकाल मे जो अतिथि आवे तो शयन आसन भोजन से उसका सत्कार अवश्य करै हे पुत्त्र! इस प्रकार गृहस्थी का भार अपने ऊपर धर निवाह करते भये पुरुष पर जैसे देव पितर महर्षि औ विधाता कल्याणकी वर्षा करते रहते तैसेही अतिथि वन्धुजन पशु पक्षी कीट पतङ्ग जो भोजन से तृप्त भये हैं करतें रहतें हैं; इस प्रसङ्ग पर अत्रिने आप कहा है सो सुनो कि देव पितृ अतिथि पूजन औ वन्धु यामय गुरुका सत्कार... श्वान श्वपच को भूमिपर देना इसीका नाम वैश्वदेव ...तो सन्ध्या या दिनमे करै और मांस अन्न या शाग अथवा जो कुछ घरमे बना हो औ बिधिपूर्बक न दिया गया हो तो उसको आपभी कदापि न खाय। इति मार्कण्डेये रुदालसोपदेश कथने ऊनत्रिंशोऽध्यायः॥ २९॥

---

३० अध्याय।

फिर मदालसा बोली कि नित्य औ नैमित्तिक तथा नित्यनैमित्तिक ये तीन प्रकार जो गृहस्थके कर्म हैं हे पुत्त्र! अब इनका श्रवण करो कि पञ्चयज्ञ जो अभी तुमसे कहा सो नित्य है और पुत्त्रके जन्म औ मुण्डनादिमे जो किये जाते वे नैमित्तिक कर्म हैं और जन्मके पूर्ब जो श्राद्धादि किये जाते ते नित्य नैमित्तिक हैं-इन तीनोंके मध्यमे अब मैं नैमित्तिक कहती हूं

...पने

कि जिससे तुमारा श्रेय औ अभ्युदय होगा देखो पुत्रके जन्म समय से बिवाह लों क्रमसे जो सब कर्म किये जाते सो नैमि-त्तिक हैं इनमें नान्दीमुख नाम श्राद्धसे पितरों की पूजा अवश्य करनी चाहिये वह दही औ यवसे मिश्रित पिण्डोंका दान उत्तर या पूर्वमुख होय यजमान सावधानता से करै और कोई आचार्य्यने इसको वैश्वदेव रहित करने कहाहै और इस श्राद्धमें युग्म ब्राह्मणों का निमन्त्रण कर उनको पूजे औ दक्षिणा देय यह बृद्धिमे नैमित्तिक नाम श्राद्ध कहा है ।

अब ऊर्द्ध देहिक कहैं मरणके पीछे जो श्राद्ध की जातीं उनको श्रवण करो कि मनुष्यके मरण दिनमे प्रतिवर्ष जो श्राद्ध होती उसको एकोद्दिष्ट अथवा क्षयाह कहते हैं सो देव बि-हीन औ एक पवित्रक से होती उसमे आवाहन अरु अग्निकार्य्य करना मना है और उच्छिष्ट के समीप एक पिण्डा प्रेतका दे कर फिर अपसव्य हो प्रेतका नाम स्मरण कर तिलोदक देय, और बिप्र बिदाके समय अक्षय्य औ अभिरम्यतां यह ब्राह्मणों से कहवाय लेवे यह श्राद्ध मरण वर्षमे प्रतिमास करना उचित है और जो वर्ष पूर्णभये पीछे करै तो सपिण्डन करके करै, स-पिण्डीको भी बिधि सुनो कि वह भी देव रहित एक अर्घ एक पवित्रक और अग्निकार्य्य आवाहन बर्जित अपसव्य होकर करै औ बिषम ब्राह्मण भोजन करावे परन्तु इसमे बिशेष यह है कि प्रतिमासमे क्रिया अधिक होती सो सुनो कि तिल गन्ध उदकसे युक्त चार पात्र करै तीन पितरोंके औ एक उस प्रेतका फिर तीनो पात्रोंमें प्रेतपात्रके जलसे येसमना इस मन्त्रको जपता हुआ सेचन करै बाको पूर्व प्रकार की तुल्यही करै ॥

स्त्रियोंकी भी एकोद्दिष्ट ऐसेही करने कहा है औ पुत्रहीन स्त्रीका सपिण्डीकरण नहीं है, और स्त्रीकी एकोद्दिष्ट मरण दिनमें करै जैसा इहां कहाहै जो पुत्र न होय तो स्त्रीको एको द्दिष्ट उस के सपिण्ड मनुष्य करैं सपिण्ड नहोंय तो समानोदक करैं और माताके सपिण्ड या समानोदक भी करैं, और अपुत्र पुरुष की एकोद्दिष्ट कन्या का पुत्र करै और ऐसेही पुत्रिका पुत्र अपने नाना को श्राद्धभी करै और द्व्यामुष्यायण नाम जो मातामह औ पितामह तिन का यथान्याय पूजन नैमित्तिक श्राद्धसे भी करै, और जो कोई अधिकारी न होय तो स्त्री अपने पति की श्राद्ध बिना मन्त्र करै औ स्त्री भी नहोय तो राजा उसके सजाति या कुटुम्बियों से दाह आदि सकल क्रिया करवाते [illegible] राजा चारो वरण का बन्धु है, हे वत्स! यह नित्य औ नैमित्तिक मैने कहा अब नित्यनैमित्तिक सुनो कि दर्श जो अमावस तिसमे चन्द्र के क्षय होने का जो काल सो उस श्राद्ध की नित्यता सूचन करता है, इति मार्कण्डेये अलर्कानुशासने नैमित्तिकादि श्राद्धकल्पोनाम त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

---

२१ अध्याय।

मदालसा बोली हे पुत्र! सपिण्डीकरने के पीछे पिता का जो पितामह सो पितृपिण्ड से रहित हो लेपभुज होता है फिर उससे और जो चौथा है वह पुत्र का लेपअन्न भुज होता औ सम्बन्धहीन भोग पावता है और ठीकर तो पिता पितामह प्रपितामह यही तीन पुरुष पिण्ड सम्बन्धी हैं और पितामह के पितामह से लेकर लेपके सम्बन्धी हैं फिर सातयां पुरुष

[illegible] कर्ममे

तो यजमान है यही सात पुरुषोंका सम्बन्ध मुनिजनोंने कहा है, और यजमान के ऊपरवाले पितर तो अनुलेप भुज हैं, हे पुत्र! यजमान के पूर्वपुरुष जो नर्क या तिर्य्यग योनि को प्राप्त हैं अथवा भूत आदि योनि भये हैं उन सबको यथाविधि श्राद्ध करता हुआ यजमान जिस प्रकार तृप्त करता है सो सुनो कि मनुष्य जो अन्न पृथिवी पर गिरावते उससे पिशाच योनिवाले तृप्त होते और स्नान समय वस्त्रसे जो जल चूता उससे वृक्ष भये हुये तृप्त होते हैं; और देहसे जलके बूंद जो भूमिपर गिरते उनसे उसके कुलवाले जो देवयोनि भये हैं सो तृप्त होते और पिण्डा उठायलेने पर जो अन्नका कन भूमिपर रहजाता उससे तिर्य्यग योनिवालों की तृप्ति होती है, औ जो जलगये या क्रिया के योग न भये अथवा बालक या संस्कारहित किम्वा किसी विपत्ति से मरे हैं वे भूमिपर पड़े भये अन्न को झाड़ते समय खाय पीकर सन्तुष्ट होते हैं और भोजन कराय ब्राह्मणों के हाथ पांव का धोवन जो जल उससे अन्य बाकी सब पितर तृप्त होते हैं, इस प्रकार यजमान औ ब्राह्मणों का पवित्र या उच्छिष्ट जो अन्न औ जल गिरता उससे श्राद्ध करनेवाले के पितर जो नाना योनिगतहैं सब सन्तुष्ट औ तृप्त होतेहैं,

हे पुत्र! अन्याय से उपार्जित धन के द्वारा जो मनुष्य श्राद्ध करते हैं तो उससे उनके पितर जो चमार चण्डाल कसाई योनिमें जन्मे हैं वे सब तृप्त औ तुष्ट होते हैं इस प्रकार श्राद्ध करनेवाले जनोंके पितरों की तृप्ति होती है यहां लों कि अन्नकन औ जलवुन्द से भी उनके पितर सन्तुष्ट होते हैं, इससे हे वत्स! मनुष्य शागपात से भी श्रद्धापूर्वक यथाविधि अवश्य

श्राद्ध करै क्योंकि श्राद्ध करने से उसके कुलमे कोई दुखी या दरिद्र नहीं रहते हैं, अब उस श्राद्धके नित्य नैमित्तिक रूप समय औ जिस विधिसे करने को कहा सो श्रवण करो, कि प्रतिमास मे अमावस को श्राद्ध करना उचित और ऐसेही अष्टका जो अष्टमी तिथि हैं उनमे भी करना योग्य है, और हे पुत्र! अब इच्छाकाल सुनो कि जब कोई विद्वान महात्मा या उत्तम ब्राह्मण आनपड़े अथवा चन्द्र सूर्य्य ग्रहण हो औ विषुअत अयन सूर्य्यसंक्रान्ति व्यतिपात या श्राद्धके योग्य सामग्री मिलने पर या दुष्टस्वप्न देखने पर और अपने जन्म नक्षत्र के आने पर औ ग्रहोंसे पीड़ा होने पर पुरुष अपनी इच्छा से श्राद्ध करै वह भी श्राद्ध का समय है।

और धिष्ठ श्रोत्रिय योगी वेदवित् सामग त्रिणाचिकेत त्रिमधु त्रिसुपर्ण षड़ङ्गवित् ऋत्विक दौहित्र यामाता स्वस्रीय श्वसुर पञ्चाग्निकर्मी तपस्वी मातुल पितृमातृभक्त शिष्य सम्बन्धी बन्धु इतने ब्राह्मण श्राद्धमे उत्तम और घर के योग्य भी होते हैं, और अवकीर्णी रोगी अधिक न्यून अङ्ग पौनर्भव काना कुवरा गोलक मित्रद्रोही कुनखी क्लीव श्यावदन्त कुरूप पितृघ्न पिशुन सोमविक्रयी कन्यादूषक कुत्सित वैद्य पितृगुरुत्यागी धनले पढ़ाता शत्रु परपूर्वपति वेदत्यागी अग्नित्यागी वृषलीपति और जो विकर्मी निषिद्धाचारी ब्राह्मण हैं वे सब पितृकर्म मे विशेष से वर्जित हैं, हे पुत्र! देव पितृ कार्य्यमे प्रथम कहे भये उत्तम ब्राह्मणों को यजमान पूर्वदिन से निमन्त्रण करै और वे निमन्त्रित ब्राह्मण अपने घरमे भी संयम से रहैं।

हे पुत्र! श्राद्ध करनेहार औ श्राद्ध मे भोजन करने-

वाला जो उस दिन मैथुन करै तो उन दोनो के पितर औ उस स्त्रीके भी पितर एकमास रेतमे पड़े रहते हैं और नोता लेकर जो ब्राह्मण स्त्री सङ्ग कर भोजन करता या भोजन किये पीछे स्त्रीगमन करता है तो उन दोनोके पितर मासपर्य्यन्त रेत सूत्र का आहार करते हैं, इससे पूर्वदिन मे नोता देना उचित है और जो ब्राह्मण न मिलै या किसी प्रकार से पूर्वदिन में निमन्त्रण न हो सकै तो श्राद्धके दिन भी करना परन्तु स्त्री प्रसङ्गियों को नहीं, और जो श्राद्धके समय यती संयमी या संन्यासी भिक्षाके अर्थ आन पड़े तो उनको प्रणाम आदिसे प्रसन्न कर सुमन से भोजन करवाय देय, हे पुत्र ! जैसा शुक्लपक्ष की अपेक्षा कृष्णपक्ष पितरों को प्रिय है तैसाही पूर्वाह्न से परान्ह भी अधिक है, और जब नोते भये ब्राह्मण भोजन के अर्थ घर में आवें तो स्वागत पूछ उनका आदर करै फिर पवित्र पाणि आचमन किये भये उनको आसन पर बैठावे, हे पुत्र ! पितृकाममे विषम औ देवकार्य्य मे सम ब्राह्मण उत्तम कहे हैं अथवा अपनी शक्तिके अनुसार एक२ ही करै, ऐसेही मातामहों का भी वैश्व दैविक है परन्तु कोई आचार्य्य पृथक् भी कहते हैं, और देव सङ्कल्प का पात्र पूर्वमुख धरै पितरोंके पात्र उत्तर मुख धरै ऐसेही मातामह श्राद्धमे भी आचार्य्यों ने विधि कहा है,

विष्टर कहे आसन के लिये कुशादि अर्घादि से पूजा कर फिर पवित्रक आदि दै उन से आज्ञा ले मन्त्रपूर्वक देवतों का आवाहन करै यव औ जलसे वैश्व दैविक अर्घ देकर फिर गन्धमाल्य धूप दीप जल दे अपसव्य हो पितरों के अर्थ सब कल्पित करै दर्भ दूने दे उनसे आज्ञा ले मन्त्रपूर्वक पितरों का आवा-

हन करै और अपसव्य हो भक्तियुक्त पितरों की तृप्ति मे तत्पर हो यव तिल जल से अर्घ दे ब्राह्मणों से अग्निकार्य्य की आज्ञा ले यथाविधि व्यञ्जन क्षारवर्जित अन्न होम करै और कव्यवाह अग्नि के अर्थ स्वाहा यह कह कर प्रथम आहुति देय, पितृमान् सोम के अर्थ स्वाहा यह कह दूसरी आहुति देय, प्रेतपति यमके अर्थ स्वाहा कहकर तीसरी आहुति देय, फिर जो होमसे वंचाभया अन्न है सो ब्राह्मणों के पात्रों में परोस भाजन का लंभन कर यथाविधि अन्न देय औ यथासुख भोजन करिये यह कोमल वचन से कहै और वे ब्राह्मणभी मौन हो सुखपूर्वक भोजन करैं और यजमान या परोसनेवाला जिस२ पदार्थ की इच्छा औ रुचि उन ब्राह्मणों की देखै सोई२ क्रोधरहित लोभाय२ [illegible] उनको देता जाय, और राक्षसों के दूर करनेवाले मन्त्रों का जपकर तिल भूमिपर फेंकै औ सरसो से रक्षा करै क्योंकि श्राद्धमें बडे२ विघ्न औ छल होते हैं, फिर ब्राह्मणों से पूछै, कि आप लोग तृप्त भये और वे कहैं कि हां हम तृप्त औ सन्तुष्ट हो चुके हैं तब उनकी आज्ञा से यजमान पृथिवी पर अन्न चार ओर फैंक कर आचमन के लिये थोडा जल भी भूमिपर गिराय देय।

तिस पीछे यजमान ब्राह्मणों से आज्ञा ले मन बचन कायका संयम कर तिलमिश्रित अन्न के पिण्ड बनाय अपसव्य हो पितरों का उद्देश कर उच्छिष्ट के निकट उन पिण्डों को कुशों पर धरै और पितृतीर्थ से पितरो के अर्थ जल देय फिर यजमान जैसा अपने पूर्वपुरुषों के अर्थ श्रद्धा औ भक्ति से श्राद्ध [illegible]रता तैसाही मातामहों के अर्थ भी पिण्डदान करै तिस पीछे

[illegible] स त्यक्त [illegible]

[illegible]या पौसाले का हो ये सब जल है तात। श्राद्धकर्ममे [illegible] और [illegible]गी भेड़ी [illegible] भैंस चमरी गौ[illegible]

गन्धमाल्य लगाय पहिराय आचमन कराय यथाशक्ति दक्षिणा दै सुस्वधास्तु यह उनसे कहै और वैभी सन्तुष्टतासे तथा इति ऐसा कहैं तब वैश्वदैविक बंचवावै फिर जब वे ब्राह्मण तुमारा मङ्गल होय और विश्वे देवा तुमपर प्रसन्न हों ऐसा कहैं तब उनसे उत्तम आशीर्वादों की प्रार्थना करै तिस पीछे भक्तिसे प्रणाम कर औ प्रियवचन कहि उनको विदा करै और आप भी द्वार लों उनके साथ गमन कर फिर उनकी आज्ञा से लौट आय नित्यक्रिया करै औ अतिथि भोजन करावै कोई२ महात्मा जन इसको भी नित्यकर्म कहते कोई नहीं कहते हैं और कोई पृथक पाक कहते कोई नहीं कहते हैं, तिस पीछे बह अन्न सेवकों समेत आपभी भोजन करै इस प्रकार धर्मज्ञ यजमान सावधान हो श्राद्ध करै जिस श्राद्धमें ब्राह्मणों का सन्तोष मुख्य है और श्राद्ध में ये तीन अति पवित्र हैं एक तो कन्या को पुत्र दूसरा मध्यान काल औ तीसरे तिल, और हे द्विज तीन अति वर्जित हैं कोप शीघ्रता औ राह चलना, हे पुत्र! श्राद्धमे चांदी के पात्र उत्तम हैं अथवा चांदी का दर्शन औ दान भी उत्तम है क्योंकि पितरों ने स्वधारूप दूधको रजतपात्र मे दुहि कर इस पृथिवी को सींचा है इससे चांदी पितरों का इष्ट औ प्रीतिवर्द्धन है, इति मार्कण्डेये पार्वणश्राद्धकल्पो नाम एकत्रिंशोऽध्यायः॥ ३१

३२ अध्याय।

मदालसा बोली हे पुत्र! अब यह सुनो कि जो वस्तु पितरों की प्रीतिके अर्थ भक्तिपूर्वक लाना होता और जो प्रीतिकारक तथा जो वर्जित है, हे पुत्र! पितरों की तृप्ति इ

अन्न से एकमास रहती है और दो महीने मीन के मांससे तीन महीने हरिण के मांससे चार महीने शशक के मांससे पांच मास पक्षीके मांससे छमास बराह मांससे सात मास अजमांस से आठमास ऐणमांस से नवमास रुरुके मांस से दशमास गवयके मांस से ग्यारहमास मेष मांस से बारहमास गव्यपय औ पायस से होती है, और बधिया बकरे का मांस और कालशाक मधु रौहित आमिष और जो कुल के लोग लाये हों तथा गौरी सुत औ गयाश्राद्ध इन सबसे पितरों की अनन्त तृप्ति होती है इसमे सन्देह नहीं और श्यामाक राजश्यामाक औ प्रसातिका नीवार पौष्कल ये धान्य पितरों की तृप्ति करनेवाले ... हैं तिल मूग सरसो प्रियंगु कोविदार ये सब अति शोभन हैं, और मर्कटक राजमाष अणु विप्राषिका मसूर ये श्राद्धमे वर्जित औ निन्दित हैं और लाशुन गाजर प्याज पिण्डमूलक करंभ और जो रस या रङ्ग से हीन हैं और गन्धारिका लौकी ऊसरका नोन और लालरङ्गके वृक्षोंके निर्जास अधिक निमकी वस्तु तथा वचन से निकंमे लगते हों या भावदूषित ये सब श्राद्धमें वर्जित हैं।

और जो धन उत्कोच से मिला या पतित से उपार्जन किया ...या या अन्याय से लाभ किया या कन्याका मोल है सो सब ...से निन्दित है और दुर्गन्धयुक्त या फेनसे भरा या अल्प जल ...आश्रय का हो जिसमे गौउ तृप्त न होसकै और जो रात्रि ...गया है और जो सब अपचों से त्यक्त नहो जो अ... ...या पौसाले का हो ये सब जल हे तात! श्राद्धकर्ममे ... और छगी भेड़ी ... भैंस चमरी गौ...

दश दिन तककी ब्याई धेनुका दूध और जो पितरों के अर्थ दी-
जिये यह कहकर मांगलावे सो सब दूध श्राद्धमे वर्जित हैं, और
वह भूमि भी श्राद्धमे निषिद्ध है जो जीवजन्तुमयी रूखी आग
से जली या मनको न भावती हो अथवा किसी प्रकार से दुष्ट
या दुर्गन्धयुक्त या शब्दसहित हो और कुलके अपमान अना-
दर करनेवाले कुलहिंसक नग्न पातकी नपुंसक हिंसक औ म-
लेच्छ इनके देखने से पितृकाम नाश हो जाता है और सूकर
सारमेय मुर्गी राक्षस इनके भी देखने से श्राद्ध नाश होती है
इससे अच्छी तरह आडकर सावधानता से पिण्डदान करै और
तिल भूमिपर डालने से इन दोनो से श्राद्ध की रक्षा होती है
है और शव सूतकी दीर्घरोगी पतित तिस प्रकार यह अन्न से-
वस्तुसे पितर तृप्त नहीं होतें इसलिये श्राद्धमें इनका ज... यजमान साव
रजस्वला दर्शन ... है और मुण्डमौण्डका अ-
दर कर पास बैठाना भी निषिद्ध है और केश कीटसे युक्त कुत्ते
का दृष्ट गन्धयुत बासी अन्न तथा बार्त्तकी के अभिषव या वस्त्र
की वायुसे हत हो श्राद्धमे वर्जित हैं और श्रद्धा से नाम गोत्र
कह कर जो पितरों को दिया जाता वही आहार पितर पावते
हैं तिससे श्रद्धावान यजमान को उचित है कि पितृकाममे
जो२ उत्तम वस्तु है उसको यथाविधि पितरों की तृप्ति के हे
सुपात्र को देय और श्राद्धमे योगियों को अवश्य भोजन क
क्योंकि पितर योगके आधार हैं, देखो हजार ब्राह्मणो से
जो एक योगी भोजन करै तो वह उन भोजन करने
ह्मणों औ यजमान को जलमें नौका के समान तारि ले
... ब्रह्मवादीजनवर्जित गाथा गाते हैं जो ... रों की तृप्ति इति-

(right-margin fragments from facing page: रक्षा ... यजमान ... शेष मुख्य है ... र इस ... तिवर्द्धन ... य:॥ ३१ ... कि जो ... और जो)

ने गाथा था पितृगण कहते हैं हमलोगों के वंश में मुस-ल्मान होनेसे पिण्डदान धन रहने से रतन वस्त्र भूमि आदि लोगों के उद्देशमे दान करियेगा। धन न रहने से यथा शक्ति कुछ नही रहने से तिल लेय के ब्राह्मण को दान करियेगा तिल नही मिलने से तृण लेय के हम लोगो के उद्देशमे गाभि को दीजियेगा कुछ भी न होय तो दो हात उठाय के बलियेगा हमारी श्राद्ध करने का कुछ नही है कह के पितृगण के नमस्कार करते हैं बोलने से हम लोग परितुष्ट होते हैं।

इति मार्कण्डेये अलर्कानुशासने सपिण्डी करणो नाम [illegible]त्रिंश अध्याय ॥ ३[illegible]॥

इति यह मार्कण्डेय पुराण से श्राद्ध कर्म तक सम्पूर्ण भया।

बढ़ेगा

लखनऊ, २२ अप्रैल। समझा है कि रेलवे किरायों और भाड़ों ...द्धिका बसके किरायोंपर प्रभाव और परिमाणतः उनमें वृद्धि सम्भावना है।

राज्यके बजटमें १३,३५ करोड़ का घाटा और उसकी पूर्तिके अभीतक कर प्रस्ताव तैयार नहीं किये गए हैं। स्पष्ट है कि बसों के किरायेमें वृद्धिसे इस घाटेकी अंशतः पूर्ति हो सकती है। बस किरायेमें वृद्धिका एक कारण उसका रेल किरायेसे सामंजस्य स्थापित करना है। राज्यमें बहुतसे ऐसे रेल तथा बस मार्ग हैं जो एक दूसरेका समानांतर हैं और उनके किरायेकी दरों प्रतियोगितासे दोनोंके हितोंको क्षति पहुँच सकती है।

अपने विशेष ...रका प्रयोग करेगा, जोरिंगने कहा कि यह इस बातपर निर्भर है कि प्र...व किस रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

सम्वाददाताने अपनी ओर से आगे कहा है कि 'सुरक्षा परिषद पाकिस्तानकी प्रार्थनापर जब काश्मीर समस्यापर विचार प्रारम्भ करेगी तब जोरिंग न्यूयार्कमें नहीं होंगे।'

—※—

हो गए ... समके मिज़ ...लेको लुशाई पहाड़के कुछ भागोंको भी भी इससे क्षति पहुंची है।

लोकसभामें सिंचाई तथा विद्युत मन्त्री हाफिज मोहम्मद इब्राहीमने जो वक्तव्य प्रस्तुत किया उसमें भारत द्वारा भेजे गये इस विरोधपत्रका विस्तारके साथ उल्लेख किया गया है।

हालमें भेजे गये अपने इस विरोध पत्रमें भारतने पाकिस्तानपर

पश्चिमी इरियनकी विमुक्ति लिए महत्वपूर्ण निर्णय

हिन्देशिया की प्रतिरक्षा परिषद द्वारा

केनेडीका सन्देश

न्यूयार्क, २२ अप्रैल। अमेरिकी राष्ट्रपति केनेडीने लाओस नरेशको ... नरेश एतदर्थ दक्षिण पन्थियोंको राजी करें और इस कार्यमें ... करें।

निःस्वार्थ सेवा करें

...ष्योंकी नगरप्रमुखको सलाह

...कापल जौनपुरीने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। मुशायरा बड़ी सफलताके साथ पूरी रात्रि चलता रहा। [आई० पी० ए०]

मान लेशमात्र भी नहीं है। वक्ताओंको धन्यवाद देते हुए

सन्त तनपुरे...

वाराणसी, रवि... के प्रख्यात महा... हरिद्वार कुम्भसे लौ... पधारे। आपके सा... बलुवा थानेके अन्... रहने वाला ... सड़क पर एक ... करमरगया। ...

यमें, राज्य मन्त्री, श्री बी० दातारने मौतकी सजा को करनेसे सम्बद्ध एक कांग्रेसी प्रस्तावका विरोध किया ... कि आजकी परिस्थिति में उचित न होगा।

रघुनाथ सिंह द्वारा प्रस्तुत चल रही बहसके मध्य करते हुए, श्री दातार ने भारतमें प्रतिवर्ष लगभग हत्याएं की जाती हैं। की सजा समाप्त कर दी हत्याओंकी संख्या बढ़

ही आप इस बातसे सह- इस प्रस्तावपर सदनमें हो सार वे कानून आयोग देंगे जो फिलहाल यह तथा भारतीय दंड भावित संशोधनके प्रश्न कर रहा है। इससे चत प्रकार का निर्णय होगा।

पूर्ण भारी संख्या में प्रस्ताव का समर्थन कुछ लोगों ने उसका मन्त्रीके हस्तक्षेप के

राज्य सरकार हिंदी-पत्रोंको प्रोत्साहन देगी

सूचना मंत्री श्री बनारसीदास का कथन

मेरठ, २२ अप्रैल। उत्तर प्रदेश सूचना मन्त्री श्री बनारसीदासने कल यहां कहा कि 'जिला स्तरके हिन्दी समाचार पत्रोंको सभी सम्भव सहायता प्रदानकी जायगी।'

आपने अपने कथनको स्पष्ट करते हुए कहा कि 'राज्य सरकारकी यह नीति है कि वह हिन्दी पत्रोंको उनके स्तरमें सुधारके लिए प्रोत्साहन दे। राज्यके सूचना विभागने सभी विभागीय विज्ञापनों द्वारा ऐसे पत्रों को लाभ पहुँचानेका कदम उठाया है।

... वृद्धि होगी। १६० ... अधिकके लिए अनाजके ... नये पैसे प्रति मनसे ... वृद्धि नहीं होगी। अर्थात् १५ से २२ रु० मन तक बिकनेवाले गेहूं और ३७ से ४४ रु० ... बिकनेवाले चावलकी कीमत ... खास अन्तर नहीं पड़ेगा। भाड़में प्रस्तावित वृद्धिके बाद प्रति टन किलोमीटर भाड़में १९३८-३९ की अपेक्षा केवल ११८ प्रतिशतकी वृद्धि होगी, जब कि इस अवधिमें थोक भावोंमें ३७५ प्रतिशतकी वृद्धि हो चुकी है। इस अवधिमें रेलोंके काम आनेवाले कोयलेके मूल्यमें लगभग ४०० प्रतिशत और कर्मचारियों पर होनेवाले खर्चमें २२५ प्रतिशतकी वृद्धि हो चुकी है।

... योजना ... उत्पादनमें काफी ... अतः यदि आभूषणों ... जाता है तो कुछ अनुचित न ... इससे राज्यकी स्थितिमें सुधार होगा।

तारा ...

रूस का रुख अपरिवर्तित

काश्मीर समस्या के प्रति—जोरिंग

रावलपिंडी, २३ अप्रैल। संयुक्त राष्ट्रसंघ में रूसके स्थायी प्रतिनिधि जोरिंग ने, जो जेनेवा ...

रूसका रुख अपरिवर्तित है।

जोरिंग जेनेवामें कराचीके ...

पाकिस्तान द्वारा अन्त[र्राष्ट्रीय] दायित्वका उल्लंघन

कर्णफूली बांधपर भारतका विरोध-प[त्र]

नयी दिल्ली, २२ अप्रैल। भारत सरकारने पाकिस्तानको इस आशय का विरोध पत्र भेजा है कि पूर्वी पाकिस्तानमें कर्णफूली बांध योजना को कार्यान्वित करके जो एकतरफा कारखाईकी है उससे न केवल अन्तारराष्ट्रिय कानूनके सामान्य नियमों का उल्लंघन होता है अपितु इससे कुछ वर्ष पूर्व दोनों देशोंके बीच हुए समझौतेकी विशेष व्यवस्थाओंको भी धक्का पहुँचा है।

पूर्वी पाकिस्तानमें ८० हजार ...

अन्तारराष्ट्रिय दायित्वोंका ... करनेका आरोप लगाया ... ने पाकिस्तानको यह भी ... दिया है कि बांध बननेसे क्षति अथवा अन्य प्रतिक्रि[या] पड़ेंगे उसके लिये पाकिस्तान जिम्मेदार ठहराया जायगा।

उसी विरोधपत्रमें यह कह[ा] है कि भारत सरकारने इस स[म्बन्ध] प्रतिक्रियात्मक कारखाई कर ... अधिकारको सुरक्षित ... यथोचित समय ...